पद्मधर पाठक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्विवेदी जी के पत्र पाठकजी के नाम

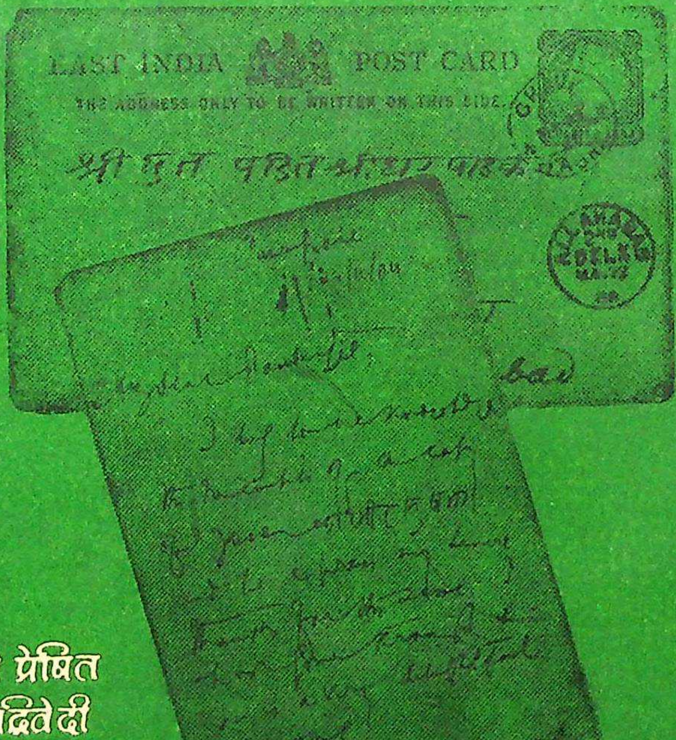

पं. श्रीधर पाठक को प्रेषित
पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी
के अज्ञात, अप्रकाशित पत्रों का
ऐतिहासिक संकलन

भूमिका
श्री सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

पद्मधर पाठक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्विवेदी जी के पत्र पाठकजी के नाम

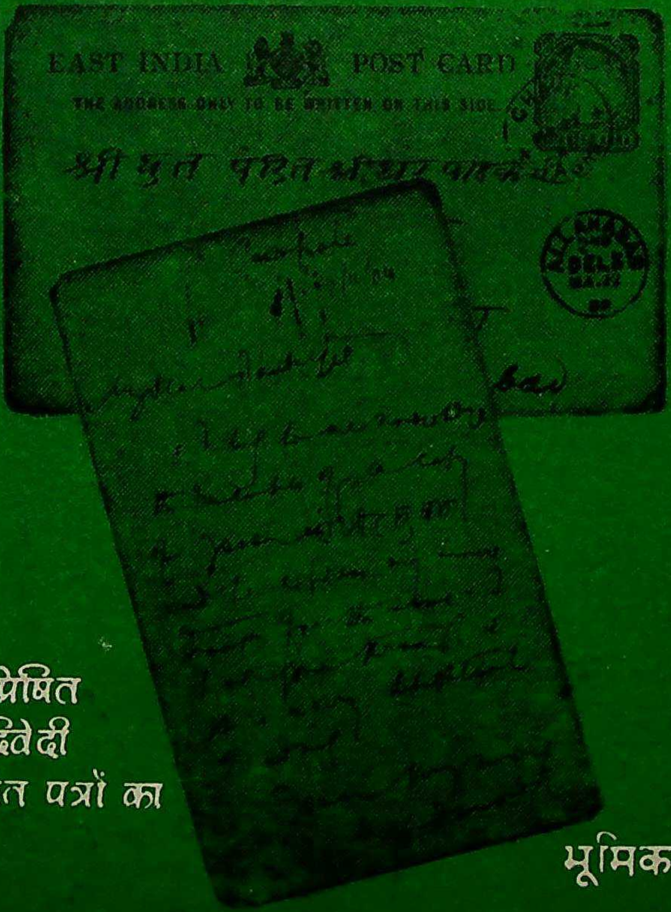

पं. श्रीधर पाठक को प्रेषित
पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी
के अज्ञात, अप्रकाशित पत्रों का
ऐतिहासिक संकलन

भूमिका
श्री सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

53[illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्विवेदीजी के पत्र–
पाठकजी के नाम

(पं० श्रीधर पाठक को प्रेषित पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के अप्रकाशित, अज्ञात एवं दुर्लभ पत्रों का ऐतिहासिक संकलन)

— पद्मधर पाठक —

भूमिका
श्री सच्चिदानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

गिरिधर प्रकाशन
जोधपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

5330

Library • Rajasthan • State • Documentation

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : 1982

मूल्य : पचास रुपये

प्रकाशक : गिरिधर प्रकाशन
द्वारा
श्री हरिप्रसाद पारीक
रावजी की हवेली के पास
बागर चौक, जोधपुर।

मुद्रक : साधना प्रेस : हिमालय प्रिण्टर्स
जोधपुर

एक सुविधा : अन्दर निवेदन के अन्त में दिए गए
श्री पाठक के पते पर भी आर्डर व्यवस्थापक
तक पहुँचा दिया जावेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भूमिका

जिसे द्विवेदी युग कहा जाता है, पंडित श्रीधर पाठक उस के प्रमुख और युग-निर्माता कवियों में से एक थे। वास्तव में द्विवेदी युग तर्कसंगत नाम नहीं है, क्योंकि साहित्य के इतिहास में काल-विभाजन प्रमुख साहित्यिक प्रवृत्तियों अथवा उन प्रवृत्तियों का प्रतीकन करने वाले रचनाकारों के नाम से ही होना संगत है। यदि ऐसा न हो तो काल-विभाजन की दूसरी पद्धति तत्कालीन राजवंश अथवा शासन परम्परा पर आधारित होती है—जैसे कि आज भी अंग्रेज़ी अथवा जापानी साहित्य के इतिहास में देखा जा सकता है। एक तरह से तो यों भी कहा जा सकता है कि द्विवेदी युग नाम की संगति भी साहित्य-रचना की प्रवृत्ति के आधार पर नहीं बल्कि साहित्य के अनुशासन पर ही आधारित होती है। 'सरस्वती' सम्पादक पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी स्वयं बड़े साहित्य-सर्जक नहीं थे, लेकिन हिन्दी की एक पूरी पीढ़ी के साहित्य-शास्ता तो रहे ही—और उन का शासन कई बार उतना ही स्वेच्छाचारी और दमनमूलक भी रहा जितना मध्य काल के राजवंशों का होता था। साहित्य-स्रष्टाओं के अनुशासन में 'सरस्वती' पत्रिका का, अथवा मानक हिन्दी भाषा के विकास में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी का जो अवदान रहा उसे छोटा किये बिना भी यह कहना अनुचित न होगा कि द्विवेदी जी का मताग्रह कई बार अत्यन्त असहिष्णु और दुराग्रही भी होता था और मतभेद रखने वाले व्यक्तियों को केवल तर्क से परास्त करने से ही सन्तुष्ट न हो कर वह साहित्य जगत् में उसका अस्तित्व मिटा देने का भी आयोजन कर सकते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पंडित श्रीधर पाठक भी युग-निर्माता थे, लेकिन युग-निर्माण उन के साहित्यिक कर्तृत्व का एक ग्रानुषंगिक परिणाम ही था। वह मूलतः ग्रौर प्रथमतः साहित्य-निर्माता ही थे। यही द्विवेदी जी से उनके परिचय ग्रोर सहयोग का ग्राधार भी रहा ग्रौर कह सकते हैं कि सर्जना कर्म की इस प्राथमिकता के कारण वह कभी द्विवेदी जी के साहित्यानुशासन से एकात्म नहीं हो सके। पाठक जी ने व्रज भाषा में भी रचना की ग्रौर खड़ी बोली में भी; उन्होंने ग्रंग्रेजी से कुछ ग्रनुवाद भी किये—विषय के ग्रनुरूप कुछ व्रज भाषा में तो कुछ खड़ी बोली में। बिना मताग्रह के ग्रपनी रचनाग्रों में वह एक नये संवेदन को नयी वाणी देते गये ग्रौर नये संवेदन के प्रति उन के इस खुलेपन के कारण ही उन का काव्य समकालीन पाठक के मन में भी ग्रौर युवतर साहित्यसर्जकों के हृदय में भी ग्रपना स्थान बनाता गया। पंडित श्रीधर पाठक की रचना-दृष्टि ग्रौर पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी की समालोचना-दृष्टि ग्रथवा सम्पादन-दृष्टि के समान्तर ग्रध्ययन से यह स्पष्ट हो जायेगा कि पाठक जी न केवल ग्रपने युग के साथ चल रहे थे; बल्कि उसे दिशा देने में भी समर्थ थे; जब कि द्विवेदी जी का ग्रनुशासन निःसंशय होते हुए भी था बहुत दूर तक संरक्षणवादी ही—-नये को प्रश्रय देना नहीं, पुराने की रक्षा करना ही उन के निकट ग्रधिक महत्व का काम था।

पाठक जी की रचनाग्रों में एक नया संवेदन ग्रौर एक नयी मानवतावादी दृष्टि झलकती है। उन की देशप्रेम की कविताएँ भी वैसी ही नयी ग्रौर समकालीन हैं जैसी उन की प्रकृति सम्बन्धी कविताएँ। यही कारण था कि जहां द्विवेदी जी ने लगातार समकालीन साहित्य का ग्रनुशासन किया, वहां पाठक जी ने नये रचनाकर को प्रेरणा ग्रौर स्फूर्ति दी। द्विवेदी जी का काम साहित्य के रथ को लीक पर रखने ग्रौर सारथी को बराबर ताकीद देते रहने का था; पाठक जी लगातार रथी को नये क्षितिजों का संकेत दे कर उस में ग्रपने नये रास्ते खोजने की ग्राकांक्षा जगाते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

द्विवेदी जी और पाठक जी का पत्र-व्यवहार इस संदर्भ में अत्यन्त रोचक है; उनका ऐतिहासिक महत्व तो है ही। पाठक जी के पौत्र पद्मधर जी ने इन पत्रों का संग्रह और सम्पादन कर के बड़े महत्व का काम किया है और पत्रों के प्रकाशन का यह आयोजन अभिनन्दनीय है। मुझे भूमिका लिखने को कहकर उन्हों ने मुझे मान दिया है; उस का मैं पात्र नहीं हूँ, लेकिन इस प्रकार प्रमुख साहित्यकारों के पत्र-व्यवहार के ऐतिहासिक महत्व पर बल देने का जो अवसर मुझे मिल गया है उस के लिए मैं उन का आभारी हूँ। मैं आशा करता हूँ कि हिन्दी के अधिक से अधिक पाठक और सभी साहित्यकार इस पत्र-व्यवहार को पढ़ेंगे और इस से प्रेरणा ग्रहण करेंगे—प्रेरणा अपने रचना कर्म के लिये ही नहीं, साहित्यिक पत्र-व्यवहार के कलन के लिये भी। हर पुस्तकालय में भी यह पुस्तक रहनी चाहिए : ऐसे पत्रों का अध्ययन तो शोध का भी अभिन्न अंग होता है।

यह सुन्दर प्रकाशन ऐसे और पत्र भी सामने ला सके तो वह भी हिन्दी की सेवा होगी। हमारे साहित्य-प्रकाशन का यह एक उपेक्षित अंग है जिस की ओर ध्यान देने से साहित्य का लाभ ही लाभ होगा।

सच्चिदानन्द वात्स्यायन

नई दिल्ली
१७ जनवरी १९८२

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निवेदन

पत्रों के इस संकलन में स्व० पं० श्रीधर पाठक (१८५८–१९२८ ई०)के नाम प्रेषित स्व० पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी (१८६४–१९३८ ई०) के ६१ पत्र हैं। चालीसवां पत्र पं० श्याम बिहारी मिश्र का है। ये सब अँगरेजी में हैं। हिन्दी के शोधार्थियों एवं इतिहासकारों के लिए इस दबी ढकी और अप्रकाशित सामग्री की उपयोगिता को देखकर ऐसे पत्रों के निकालने की यह दूसरी किस्त है। इससे पूर्व मैंने हिन्दी के एक पुराने सेवी व भारतेन्दुजी के मित्र फ्रेडरिक पिन्कौट (१८३६-१८९६ ई०) के पत्रों को मुद्रित करवाया था। वे भी पाठकजी के नाम थे। 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' ने इन पत्रों का केवल हिन्दी अनुवाद ही प्रकाशित किया। उनका आभार स्वीकार करते हुए भी मूल को न पाकर वह ज़ायका मारा गया। इस बार मूल और अनुवाद को पृथक् नहीं होने दिया गया है ताकि और आगे काम करने वालों को मूल की तलाश न करनी पड़े और आवश्यकता पड़ने पर वे लेखक को उसी के शब्दों में ले लें।

'द्विवेदी पत्रावली' नाम से द्विवेदीजी के पत्रों का एक छोटा संग्रह 'भारतीय ज्ञानपीठ' काशी से १९५४ ई० में निकला था। ये पत्र उसमें स्थान नहीं पा सके। इनमें और उनमें एक बड़ा अन्तर यह भी है कि यह पत्राचार केवल दो व्यक्तियों तक ही सीमित है जबकि ज्ञानपीठ के प्रकाशन में अनेक व्यक्तियों के पत्र बतौर नमूने के दिए गये हैं। द्विवेदीजी के केवल दो चार पत्रों को आंशिक रूप में मैंने **'सरस्वती'** (जनवरी, १९६५) में एक लेख के रूप में प्रकाशित करवाया था। ऐसे बिखेर-बिखेर कर छपवाने में कुछ पल्ले पड़ने के बजाय कड़ी से कड़ी टूट और जाती है। इसी संग्रह के ५ पत्र किसी के द्वारा काशी के 'भारत कला भवन' में पहुँचा दिए गये गए हैं। इस में मुझे कोई आपत्ति नहीं, पर इसकी सूचना देर से मिलने के कारण इन्हें ५७ पत्रों के छप जाने के बाद जोड़ा गया है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अतः एक तरह से मैं और 'कला भवन' दोनों ही एक दूसरे के आभारी हुए। आगरे से लिखे गये दि० १६.१२.१८६६व२६.१२.१८६६ के पाठकजी के केवल दो पत्र इसी 'कला-भवन' में निकल आए। इन्हें भी प्रस्तुत किया गया है। १६.१२ वाला पत्र, पत्र सं० ५६ का उत्तर है। दूसरे पत्र में द्विवेदीजी के 'श्रीधर-सप्तक' पर श्रीधर जी की प्रतिक्रिया है और इसी पत्र के कुछ अंश का उत्तर भी। केवल पत्र सं० ५४, ५८, ५६, ६०, ६१,६२ व ६३ 'कला-भवन' (काशी विश्वविद्यालय) की सम्पत्ति हैं और इनका कापीराइट भी उन्हीं का रहेगा। शेष पत्रों पर हमारा सर्वाधिकार सुरक्षित रहेगा। 'कला-भवन' के अधिकारियों को इन पत्रों का प्रयोग करने की स्वीकृति देने पर मैं उन्हें अलग से पुनः धन्यवाद देता हूं।

इन पत्रों के लेखक के सम्मुख अध्येताओं का समूह न होकर अपने एक निकटस्थ को लक्ष्य कर जो भी लिखा गया है उसमें किसी प्रकार का कोई आवरण नहीं। शायद यही अनौपचारिकता इन पत्रों का आकर्षण भी है जिसके द्वारा हर तरह की खरी-खोटी सीधे तौर पर चली आई है। तथ्यपरक अध्ययन के लिये ऐसे पत्र बड़े काम आते हैं।

दो-एक को छोड़कर ये पत्र उस काल से संबंधित हैं जब 'सरस्वती' द्विवेदीजी के हाथों में नहीं आई थी और' हिन्दुस्थान', 'भारत-मित्र' व 'सुदर्शन' नामक पत्रिकाओं के ही माध्यम से उन्हें लिखने-पढ़ने का अवसर मिलता था। पर यहाँ उन्हें तरह-तरह के खट्टे-मीठे अनुभव हुए और उन्होंने 'सम्पादक स्तवः'[1] की रचना कर इन पत्रों के संपादकों की खिचाई की है।

---

1. काव्य–मञ्जूषा भाग १, पृ० ३१-३५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'भारत-मित्र' के संपादक बाबू बालमुकुन्द गुप्त उर्दू से हिन्दी में आए थे। उनकी लेखनी में गज़ब का लोच था। उनमें एक कला और थी—वे धरते भी चलते थे और उसी क्षरण पुचकार भी लेते थे। बोलचाल के शब्दों में लिखे गए उनके छोटे-छोटे वाक्यों से सीखने वालों ने सीखा भी। भाषा में दुरूहता बतलाते हुए वे द्विवेदीजी की रचनाओं को वापस कर देते थे और सरल पथगामी होने की हिदायत और दे देते थे। इस पर दोनों में ठन गई। भाषा के शैशव काल में ऐसी छेड़छाड़ अन्ततः कुछ देकर ही जाती है। यही हुआ। जिस गद्य शैली को गुप्तजी ने खुलकर तर्जीह दी उसके मर्म को द्विवेदीजी ने भी समझा और आजीवन उसे अपनाए रहे।

सर्वश्री माधव प्रसाद मिश्र, लाला सीताराम, श्यामसुंदर दास एवं श्याम बिहारी मिश्र के प्रति अपने विचारों को द्विवेदीजी ने खुलकर प्रकट किया है और इन पत्रों में इन लोगों के ज्ञान के कुछ अंश को अज्ञानता की श्रेणी में डालकर चुटकियां भी ली हैं। वास्तविकता जो भी रही हो परन्तु इस प्रकार के पत्र आलोचकों को विचार के लिये ऐसी खरी सामग्री देते हैं जिसका अन्यत्र मिलना कठिन है।

जहां तक बन पड़ा है या आवश्यक समझा गया है इन पत्रों के अनुवाद के साथ कुछ संक्षिप्त टिप्पणियां देने का मैंने प्रयास किया है परन्तु कई जगह गाड़ी अटकी भी। कौन जाने कानपुर निवासी राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' और पाठकजी के बीच कैसा पत्राचारी वाद-विवाद चला था? मेरे पास तो 'पूर्ण' जी का केवल एक पत्र और एक कार्ड पड़ा है। किस प्रसंग में लिखा गया है इसका कोई पता नहीं चलता। मज़े की बात यह है कि ये दोनों पत्र भी अंग्रेज़ी में ही हैं और काफ़ी तेज़ तर्रार मूड में लिखे गए जान पड़ते हैं। थोड़ा परिश्रम अवश्य किया था परन्तु पत्रों का यह सिलसिला नष्ट हो गया दीखता है। कुछ पता नहीं चला।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने अनुवाद को पूरी तरह दोष-रहित तो कह नहीं सकता, अपना-अपना दृष्टिकोण हैं पर मूल भी साथ होने से सहृदय पाठक अनुवादक की परवाह न कर मूल से हटने की भूल क्यों करेंगे। पत्र सं० १ के संबंध में डा० नामवर सिंह जी ने ठीक ही लिखा है कि, "यदि अन्य पत्रों के सन्दर्भ में पढ़ें तो स्पष्ट हो जाता है कि यह पहला पत्र नहीं हो सकता। वर्ष के अंक दीमकें खा गई हैं; फिर भी पत्रांकित बातों से पता चलता है कि यह पत्र १९०० के पहले का नहीं है—बहुत सम्भव है कि यह १९०१ के आसपास हो" ।(पत्र दि० २८.१२.८१)

इन पत्रों के अलावा द्विवेदीजी की वे छोटी-छोटी रचनाएँ भी मेरे पास हैं जिन्हें उन्होंने अपने हस्ताक्षरों से पाठकजी को भेजी थीं। अपने 'कुमार संभव सार' में हस्ताक्षर करने से पूर्व उन्होंने लिखा है कि इसे मैंने 'आपकी खड़ी-बोली' में लिखा है। इसी आशय का संकेत पत्र सं० ५९ में भी मिलता है। द्विवेदीजी कृत जिस 'सप्तक' का बारहवें पत्र में उल्लेख हुआ है उस 'श्रीधर-सप्तक' को भी यहां प्रकाशित कर पाठकों के लिये सुलभ कर दिया गया है। यह भी एक संयोग है कि पुस्तक में छपे चित्र भी लगभग उसी समय के हैं जबकि दोनों में इन पत्रों का आदान-प्रदान होता रहा।

द्विवेदीजी और पाठकजी का यह पत्र व्यवहार लम्बा नहीं चला और समाप्त होते-होते वह ज़ोर भी ख़त्म हो गया। द्विवेदीजी के निरन्तर आग्रह पर भी उन्होंने 'सरस्वती' के लिये कभी कुछ नहीं भेजा। इस प्रसंग को लेकर कुछ आपसी मनमुटाव की भी सुनी जाती है। वस्तुतः मूलभूत कारण सामने हैं। दोनों का पथ ही बिल्कुल अलग-अलग था। अभिरुचियाँ भी उतनी ही भिन्न थीं। पाठकजी बड़े स्वतंत्र प्रकृति के थे जिन्होंने काव्य से लेकर व्यावहारिक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जीवन तक एक सा व्यापक क्षेत्र घेर रखा था । उनका अपना एक दायरा अवश्य था किन्तु उसकी सरहदें ढूँढना आसान नहीं था । इसे स्पष्ट करने के लिए मैं संक्षेप में उन व्यक्तियों के संस्मरण रखना चाहूँगा जिनका पाठकजी के साथ बड़ा ही अंतरंग सान्निध्य रहा । इनमे मैंने स्व० पं० गिरिधर पाठक, स्व० पं० सुमित्रानंदन पन्त व डा० रामप्रसाद त्रिपाठी को चुना है । ये उद्धरण एक काम और करेंगे—आये पत्रों के गये उत्तर के अभाव में दूसरे पक्ष को लेकर जो रिक्तता सी पाई जाती है वह भी बड़े प्रामाणिक ढंग से दूर हो जावेगी और इस निकट के मार्ग से अप्राप्य पत्रों का पार्श्व भी सामने आता लगेगा । यहां किसी को छोटा-बड़ा दिखाने की बात नहीं है बल्कि दूसरे व्यक्तित्व को भी इन पत्रों के साथ लिये चलने की एक स्वस्थ योजना है ।

राजकीय सेवा से निवृत्त होने पर पाठकजी का जीवन-चरित्र लिखने के लिए पिताजी ने चन्द आधार बिन्दु एक कागज़ पर लिख रखे थे । उनका स्वर्गवास हो गया और केवल यह एक पृष्ठ की सामग्री वे छोड़ गए । इसका कुछ अंश इस प्रकार है :—

"असाधारण पुरुष । हरेक विषय में individual stamp. Must be at the top. Contribution to literature cannot be understood without knowing his life and habits. संसार के अस्तित्व में विश्वास । M. P. D, Poorna, Maithilisaran etc. used to consult him. His life and works entirely independent. It is difficult to understand him. He lived beyond times. Not a voluminous writer but a literary gardener. जन्मदाता of Khariboli poetry. Change is life. Novelty in everything. Varied activities—Literature Art, Social

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

reform. Loved gardening and architecture. सौन्दर्य संपादन in everything he did. His soul could never rest when he saw things out of proportion. His liking for cinema to the end. Difference in Literature and mass literature. Declared himself in favour of Hindustani. A self—made man. He spurned the idea of asking for help. स्वावलम्ब his watchword. All these things will be brought out as his life proceeds. Personality respect—inspiring yet loving and affectionate, yet apart. Humour in his conversation of a very superior type. His उदारता and willingness to help others, Dharma—two kinds शाश्वत और देशीय—latter to be changed. Did not believe in Superstition. He never read much but looked ahead by intuition. Hindi and Urdu are one. Both ought to be known.

इतिहासकार डॉ॰ त्रिपाठी

"उदार चित्त और सरल स्वभाव होने के कारण वे मेरे ऊपर कृपा करते थे और बेखटके अपने भावों और विचारों का उद्घाटन मेरे सामने कर देते थे। जैसे जैसे मैने उनके विचारों और भावों को देखा वैसे ही उनके प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ती गई"। "साधारण जनता की मोटी कसौटी पर उनकी परख करना भूल है। उनके विचारों की धारा का प्रवाह बहुमुख है। उनके जीवन की परिभाषा ही असाधारण है। जब तक कि उनकी सत्ता का समष्टि रूप से विचार न किया जाय तब तक उनकी महत्ता और पूर्णता का यथार्थ ज्ञान कदापि नहीं हो सकता"। "उनमें लोभ, मोह, ममता और मत्सर प्राय: नहीं के बराबर थे। अपने मुंह से उनको न तो अपनी बड़ाई ही करते हुए मैंने कभी सुना और न दूसरे की बुराई ही करते"। "पाठक जी सच्चे कवि की तरह भविष्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का दृश्य देखते थे। पीछे देख देख कर बिसूरना या सिसकना उन्हें रुचिकर न था यद्यपि अतीत भारत की महत्ता का उनको बड़ा अभिमान था। "उनके भावों की नवीनता और सजीवता देखकर कभी कभी मैं अवाक् रह जाता था"। "मेरा तो यह विश्वास है कि यदि उनके समय के और व्यक्ति उनसे आधे भी उदार और उन्नति के अभिलाषी होते तो हमारा देश अब तक बहुत आगे बढ़ गया होता"। "आजकल खड़ी बोली का बोलबाला है। पहले खड़ी बोली को साहित्य क्षेत्रं में कोई पूछता न था। साहित्यिकों की दृष्टि में वह सड़ी बोली समझी जाती थी। भारतेन्दु, राजा साहब और भट्टजी को कविता–कानन में खड़ी बोली के आगमन से कुछ संकोच होता था। वे डाँवाडोल हो रहे थे। किन्तु श्रीधर धरणीधर की तरह जम गए और उन्होंने उसके कपाट एकदम खोल दिए और खड़ी बोली का मुक्तकंठ से स्वागत करके उसको कविता कानन की वनदेवी के उच्च स्थान पर बिठा दिया। उनके परम मित्र और उनकी साहित्य गोष्ठी के सहृदय सज्जन भी उनकी नवीनोपासना को सन्देह की दृष्टि से देखते थे, किन्तु पाठकजी ने साहित्य का भावी स्वप्न देख लिया था, उसकी मुग्धकारी छटा उनके हृदय पटल पर अंकित हो चुकी थी। वे किंचित्मात्र भी विचलित न हुए। उनका अनुष्ठान सिद्ध हो गया और हिन्दी जनता ने उनकी इष्ट-देवी का शंख ध्वनि से स्वागत करके उसके चरणों पर शीश झुका दिया। भविष्य द्रष्टा होने और साहित्य में नवयुग का स्वागत करने एवं हिन्दी साहित्य में नया सिक्का चला देने के ही कारण साहित्य सेवियों ने श्रीधर जी को कवि-सम्राट् का अयाचित उच्च स्थान दे दिया।" "उनकी कविताएँ एकाङ्गी नहीं, उनमें भिन्न २ रूपों, रंगों और महकों का आनन्द मिलता है।"

(चारु-चरितावली संपा० श्री वेंकटेश नारायण तिवारी, १९३४; अभ्युदय दि० २२. ९. २८. प्रयाग)

✡

उन्नीस–बीस वर्षीय सुमित्रानंदन पन्त अपने किसी रिश्तेदार श्री सी०एस० पाण्डे का लखनऊ से पत्र (दि० २८.७.१९१९) लेकर पाठकजी से मिलने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इलाहाबाद पहुंचे थे। पत्र में पन्तजी का परिचय इस प्रकार कराया गया–
' A mere boy as he is your kindness in allowing him interview will inspire him with bright hopes. In him we have got a promising youth of admirable traits and I hope his constant contact with you will make him what he ought to be or rather aspires for............"

युवा पन्त उनके पास घण्टों बैठे रहते और बाजे की संगत में उन्हीं के सामने उन्हीं के गीत गा-गा कर सुनाते थे। भाव विभोर होकर पद-मुद्रा भी अपना लेते थे। उनके साथ वे उम्र के अन्तर को भूल जाते थे क्योंकि उन्हीं के शब्दों में "He was never old." उनके स्वर्गवास पर पन्तजी ने मेरे पू० पिता स्व० प० गिरिधर पाठक के नाम जो पत्र भेजा था वह पढ़ने लायक है जिसका आगे सम्मतियों में डा० सहल ने उपयोग किया है। पन्त लिखते हैं कि "श्रीधर पाठक जी से मुझे निरन्तर प्रोत्साहन मिलता रहा, वह मुझे बार-बार 'यू आर द फ्यूचर पोएट आफ इण्डिया' कहा करते थे। उनके ऐसे महत् स्नेह तथा आश्वासन-भरे उदार हृदय वाक्यों से मुझे आत्म बल मिला है।" "उनकी वाणी में जो प्रसाद था, वह स्वयं हिन्दी काव्य की नवीन चेतना का द्योतक था।" (सुमित्रानंदन पन्त ग्रन्थावली, राजकमल, दिल्ली, १९८०, खण्ड ६)

'कवियों में सौम्य सन्त' में बच्चन जी लिखते हैं:—"इन दोनों वृद्ध और नवयुवक कवियों ने साहित्य और काव्य की चर्चा में न जाने कितनी शामें साथ बैठकर बिताई होंगी। मुझे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि श्रीधर पाठक जी ने पंतजी में हिन्दी-काव्य गगन के एक नए नक्षत्र का उदय देखा होगा।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"अधिकतर शाम को पंत पाठकजी के यहाँ 'पद्मकोट' लूकरगंज चले जाते थे। पाठकजी उनके प्रति इतना स्नेह रखने लगे थे कि यदि कभी तीन-चार दिन का अन्तराल पड़ जाता तो अपनी बग्घी भेजकर बुला लेते। इतवार को रात्रि का भोजन तो वे सदैव ही पाठकजी के यहाँ करते। साहित्यिक चर्चाओं के अतिरिक्त अन्य प्रकार की चर्चाएँ भी होतीं। तन्त्र में पाठकजी की आस्था थी—वे स्वयं भी उसकी साधना करते थे। अक्सर एकान्त मिलने पर इस विषय पर सविस्तार बातें होती और अपनी अनुभूतियों के बारे में बतलाते।" (सुमित्रानंदन पंत—जीवन और साहित्य, शांति जोशी, प्रथम खंड, राजकमल, दिल्ली, १९७० पृ० १७०-१७१)

इन छायावादी नवयुवकों के काव्य को द्विवेदीजी हिन्दी के लिए अहितकर समझते थे। जब उन्होंने इस प्रसंग में पंतजी को आड़े हाथों लिया तो उन्होंने भी वृद्ध द्विवेदीजी को अपनी 'वीणा' की भूमिका में ऐसा उत्तर दिया कि वे तिलमिला उठे। किन्तु पंतजी ने उनके प्रति अपने आदर-भाव में कभी कमी नहीं आने दी।

इस यथोचित प्रसंग को समेटने से पूर्व 'सारिका' (१६ नवंबर, १९८१) के पृ० १२ पर श्रीमती महादेवी वर्मा के उस कथन की ओर भी ध्यान चला जाता है जहां उन्होंने पाठकजी और द्विवेदीजी के बीच पाई जाने वाली विभिन्नता को बातों-बातों में व्यक्त किया है। उनका कहना है कि "सवैया, कवित्त, समस्यापूर्ति करते २ कैसे छायावादी रचना की ओर मैं अग्रसर हुई यह मैं कह नहीं सकती, हाँ कभी २ मुझे लगता है कि मेरी भाषा को पं० श्रीधर पाठक की भाषा से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्कार मिला। मुझे याद है, जब मैंने नये ढंग से लिखना शुरू किया तो आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने मुझसे कहा था, 'महामाया महादेवी, ई का लिखती हो ?"

अच्छी संभावना है कि इसी पत्राचार से सम्बद्ध पाठकजी के कुछ और पत्र 'काशी नागरी प्रचारिणी सभा' में निकल जावें। पर और कहीं कुछ भी मिलना कतई सम्भव नहीं है। सभा को लिखकर पूछा था। उन्हें फाइलें खोजने में समय लगेगा। इधर मेरे पास सुरक्षित ये पत्र किसी सार्वजनिक स्थान पर उपलब्ध न होने से यदि अब न छपते तो ये पिटे अक्षर और फीके पड़ जाते। आज भी हाल यह है कि जहां से पत्र मुड़ता है वहीं से अलग हो जाता है। निकल गए सो निकल गए, पूर्ति-आपूर्ति होती रहेगी।

भूमिका लिखने की कृपा के लिए मैं श्रद्धेय श्री सच्चिदानन्द वात्स्यायन जी का बहुत उपकृत हूँ। उतना ही पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, श्री वियोगी हरि, श्री मन्मथ नाथ गुप्त, श्री जैनेन्द्र कुमार, पं० मुन्शीराम शर्मा, श्री हरिवंश राय बच्चन, डा० शिवमंगल सिंह 'सुमन', डा० नामवर सिंह, डा० रामचन्द्र मिश्र, डा० विनय मोहन शर्मा, डा० आनन्द प्रकाश दीक्षित, डा०प्रभाकर माचवे, डा० सत्येन्द्र, पं० गोपाल प्रसाद व्यास, डा० नागरमल सहल, श्री कन्हैया लाल फूलफगर, डा० राम विलास शर्मा, का भी उपकृत हूँ जिन्होंने अपनी बहुमूल्य सम्मतियाँ और विचार लिखने की कृपा की। आप सबसे आशीर्वाद का ज्यादा हक़दार हूँ—ये रस्मी 'धन्यवाद' की परिपाटी अपने ही घरवालों पर लागू नहीं होती है।

कुछ छपाई और कुछ अपनी सीमित लियाक़त के कारण जो अशुद्धियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुझ से रह गई हों उन्हें शुद्ध करके पढ़ने की पाठक कृपा करेंगे। अहिन्दी भाषी भी इन पत्रों का आनन्द ले सकेंगे, ऐसी आशा करता हूँ।

पाठकों की परख ही पुस्तक की कसौटी है।

राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान
राजेन्द्र मार्ग, पी. डब्लू. डी. रोड,
जोधपुर, 342 001
दिनांक २६-३-१९८२

पद्मधर पाठक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रीधर-सप्तक

(ले० महावीर प्रसाद द्विवेदी)

बाला - वधू - अधर - अद्भुत - स्वादुताई ।
द्राक्षाहु की मधुरिमा मधु की मिठाई ।।
एकत्र जो चहहु पेखन प्रेम पागी ।
तो श्रीधरोक्त कविता पढ़ियेऽनुरागी ।।१।।

पीयूष है यदि पदार्थ, यथार्थ, कोऊ ।
काहे न ताहि करि पान प्रसन्न होऊ ? ।।
प्रत्येक पद्य, प्रति पंक्तिहु में, सदाही ।
सो विद्यमान कवि-श्रीधर-काव्य माहीं ।।२।।

जाकी कवित्व-पद-कोमलताऽधिकाई ।
आवाल-वृद्ध-जन चित्त लयो चुराई ।।
सोई कवीन्द्र-विजयी जयदेव आई ।
लीन्ह्यौ ऽवतार कह श्रीधर देह पाई ।।३।।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

माधुर्य्य मन्त्र, रसरञ्जन-सिद्धि धारी ।
अत्यन्त- कोमल- कवित्व- कलाप- कारी ।।
जाके कहे सुयश गीत सुनै सुरेश ।
आयौ सु अर्गलपुरी कह किन्नरेश ? ।।४।।

❁

कोऊ कहूँ मृदुल पद्य सकै बनाई ।
स्वारस्य-युक्त कहुँ कोउ सुअर्थं लाई ।।
लालित्य-लास्य, रस-राशि, सदर्थ-गाथा ।
सो हैं सदैव सब श्रीधर-काव्य साथा ।।५।।

❁

वानी बसै सुकवि-आनन में सयानी ।
मानी जु जाय यह बात सुनी पुरानी ।।
तो सत्य सत्य कविता कविरत्न ! तेरी ।
वाहीत्रिलोक——परिपूजित——देवि——प्रेरी।।६।।

❁

तोसौं कहौं कछु कवे ! मम ओर जोवौ ।
हिन्दी-दरिद्र हरि तासु कलङ्क धोवौ ।।
होवौ शतायु, सुख सों रहि, दुःख खोवौ ।
फैले त्वदीय यश; सर्व व्यथा विगोवौ ।।७।।

'भारत-मित्र'
२५ दिसम्बर, १८६६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

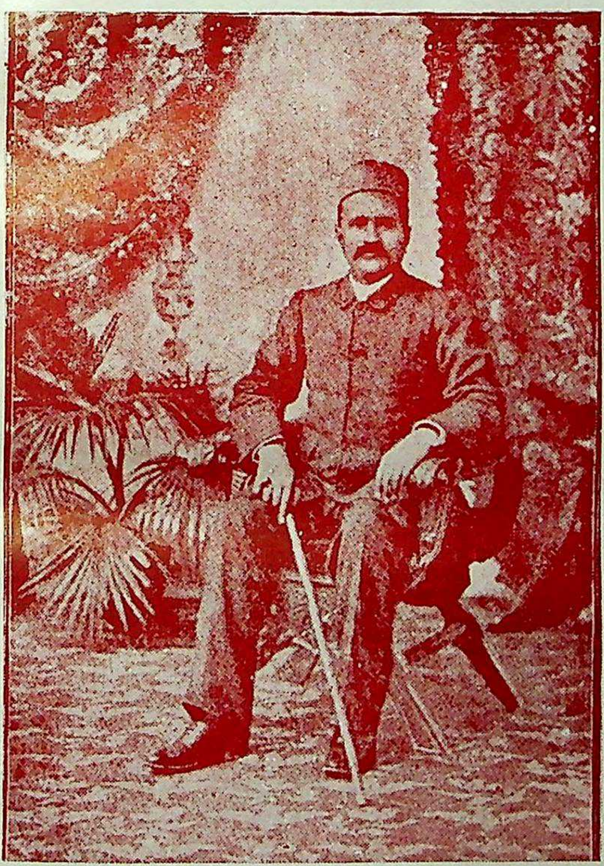

पं० श्रीधर पाठक

(सन् १६०३)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(1)

Jhansi
30. x. x.

My dear Panditjee,

I am much obliged to you for your valuable suggestions. I have carried them out in their entireity. Your taste is extremely refined. I am fortunate in having found in you such a worthy counsellor in literary matters. You have asked me to alter the line—पति वद्य ही विंधि नेन etc. I tried but failed to substitute it with a better line, so I will let it stand. I have a great defect in me. It is that when once I have composed a line, I cannot set my mind at reforming it. I recollect I have told you this. I never work hard at literature. During night I am semi-blind. I do not work. It is only in the morning 2 hours that I read or write. I shall.........go..........to..........during.... ...Yesterday I received from the Indian Press proof of my verses (translation of Kirat) to be published in the next issue of the Saraswati, and with it received the accompaning which I have cut and send you for your information. It contains, the last para of Pt. Shyam Bihari's article. From this I infer the writer has a very high opinion of you as I do and will not give you occassion to take exception to his observations—so far all is satisfactory.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

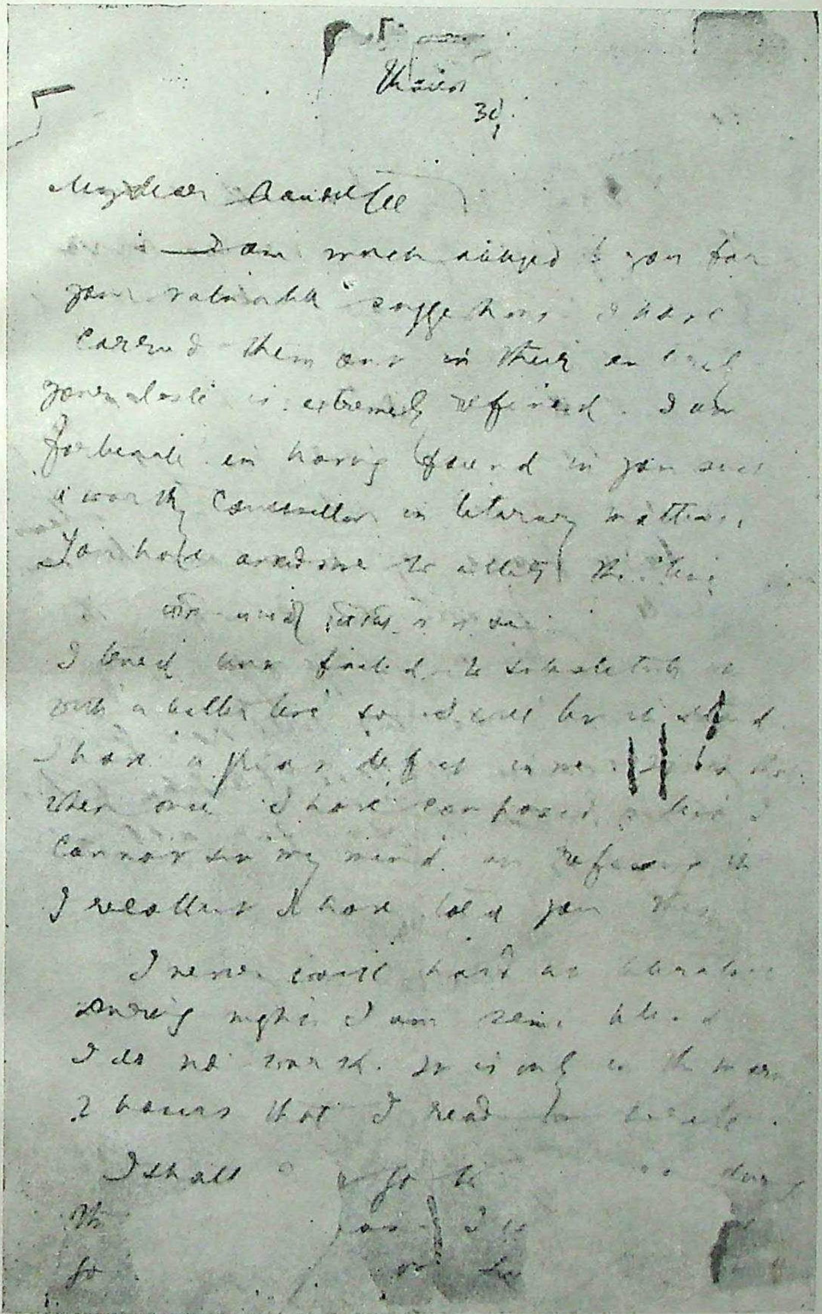

[illegible]
30

My dear [illegible]

I am much obliged to you for your valuable suggestions. I have carried them out in their entirety. Your taste is extremely refined. I am fortunate in having found in you such a worthy counseller in literary matters. You have made me [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

I tried but failed to substitute it with a better line so I will be [illegible] I have [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] I have composed [illegible] I cannot bring my mind [illegible] [illegible] I recollect I have told you [illegible]

I never could [illegible] at [illegible] during night. I am seldom able [illegible] I do not [illegible]. It is only in the morning hours that I read [illegible] write.

I shall [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Yesterday I read [illegible] the press proof of my [illegible] (translation of [illegible]) to be published in the next issue of the [illegible] and with it I read the accompanying [illegible] and read your [illegible] Dr [illegible] the basic [illegible] of P. [illegible] article — From this I infer the writer has a very high opinion of you as I do and will [illegible] you [illegible] to [illegible] observation — [illegible] all [illegible]

[illegible]

[illegible]

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

३०. X. X.

प्रिय पंडितजी,

आपके बहुमूल्य सुझावों के लिए मैं आपका अति कृतज्ञ हूँ। मैंने उनका पूरी तरह पालन किया है। आपकी रुचि बहुत परिष्कृत है। साहित्यिक मामलों में आप जैसा उपयुक्त सलाहकार पाकर मैं धन्य हूँ। आपने मुझसे यह पंक्ति बदलने को कहा है 'पति वध ही विधि नेन' आदि। मैंने प्रयत्न किया, परन्तु इसके स्थान पर कोई और पंक्ति लिख सकने में असमर्थ रहा। अतः मैं इसे नहीं छेड़ूगा। मुझमें एक बड़ी कमी है-वह यह कि एक बार कोई पंक्ति बना लेने के बाद उसमें सुधार के लिए अपने चित्त को जमा नहीं पाता। मुझे याद है- मैंने आपको यह बात बतलाई थी।

साहित्यिक कार्य में मैं कभी अधिक परिश्रम नहीं करता। रात को मैं अर्द्धान्ध रहता हूँ। कोई काम नहीं करता। केवल तड़के दो घन्टे मैं पढ़ता-लिखता हूँ........ 'किरात' (किरातार्जुनीय) का मैंने जो अनुवाद किया है वह 'सरस्वती' के आगामी अंक में प्रकाशित होगा। कल इंडियन प्रेस से उसके प्रूफ़ प्राप्त हुए। साथ में, संलग्न सामग्री प्राप्त हुई है, जिसको पृथक कर सूचनार्थ आपके पास भेज रहा हूँ। इसमें पंडित श्यामबिहारी के लेख का अंतिम अंश है। इसे देख मैंने यह अर्थ लगाया कि मेरे समान ही इसके लेखक के भी आपके प्रति बहुत ऊँचे विचार हैं। इनकी इस धारणा में किसी प्रकार के अपवाद का अवसर आपको नहीं मिलेगा। फिलहाल सब ठीक ठाक है।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

पत्र में दिनांक ३० के आगे का भाग दीमक खा गई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(2)

Jhansi
20 January, 1899

Dear Sir,

I duly received your kind letter of the 20th instant. I do not think I deserve all that you have said in it about the writings that I have been contributing from time to time, but surely it will go a great length in encouraging me to continue in the field of Hindi literature.

I am sorry I have not got your translation of the Sarat from Ritu Sanhar. You will recollect, last year, I wrote to you myself for it. The two verses that I quoted from your translation in my review of Lala Sitaram's Hindi Ritu Sanhar was from memory. I liked your translation so much so that I committed some lines to memory there and then. Two I have reproduced in my review referred to with critical remarks. You will do a very great service to the cause of Hindi literature if you kindly translate the whole Ritu Sanhar in Hindi verse. People and specially our Lala Sahib will then know what translation means.

I send you by post a small pamphlet entitled 'Kanya Kubja Lila mritam' and hope though unbecoming of you will be accepted.

Yours very sincerely
Mahabir Prasad Dwivedi

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२० जनवरी, १८९९

प्रिय महोदय,

मैंने दिनांक २० का आपका कृपा पत्र प्राप्त किया। समय-समय पर मैं जो लेखन कार्य करता रहा हूँ उसके सम्बन्ध में आपने जो कुछ कहा है, मेरी समझ में मैं उसके योग्य तो नहीं, किन्तु, उससे मेरे हिन्दी-साहित्य के क्षेत्र में लगे रहने में निश्चय ही अत्यधिक प्रेरणा मिलेगी।

मुझे खेद है कि मेरे पास आपके ऋतुसंहार के 'शरत' का अनुवाद नहीं है। आपको याद होगा कि गत वर्ष मैंने स्वंय उसके लिए आपको लिखा था। मैंने लाला सीताराम[1] के हिन्दी ऋतुसंहार की समीक्षा में स्मृति के आधार पर ही आपके अनुवाद के दो पदों को उद्घृत किया था। आपका अनुवाद मुझे इतना भाया कि मैंने कुछ पंक्तियाँ वहीं की वहीं याद कर लीं। इनमें से दो को मैंने उक्त समीक्षा में विवेचनात्मक टिप्पणियों के साथ प्रस्तुत किया है। यदि आप कृपा कर सारे ऋतुसंहार का हिन्दी पदों में अनुवाद कर डालें तो हिन्दी साहित्य की बहुत बड़ी सेवा होगी। तभी लोग, और विशेषकर हमारे लाला साहब यह जान सकेंगे कि अनुवाद किसे कहते हैं।

मैं डाक द्वारा 'कान्यकुब्ज-लीलामृतम'[2] नामक एक संस्कृत पैम्फलेट भेज रहा हूँ। आपके योग्य न होते हुए भी आशा करता हूँ स्वीकार्य होगा।

आपका अति विश्वस्त
महाबीर प्रसाद द्विवेदी

---

1. लाला सीताराम, बी० ए०; सन् १८९३ में इन्होंने ऋतुसंहार का अनुवाद प्रकाशित करवाया था।

2. संस्कृत में लिखे ३८ पद्यों में द्विवेदीजी ने अपने सजातीय कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की कुल-रीतियों पर मार्मिक व्यङ्ग किया है।
काव्य मञ्जूषा, भाग १, पृ० १९-३१.

5330

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(3)

Jhansi
15. 11. 1899

Dear Sir,

I am much obliged to you for favouring me with a copy of "The world a reality". You have really dealt with the subject very ably. Though the world is a myth according to Hindu theologians, yet to some extend it is, no doubt a reality, however short its duration may be.

In the field of poetry you have chalked out for yourself a new path, different to that followed by Hindi poets and I congratulate you for the success which you have attained in your undertaking. The language and the metre in which you write are indeed very attractive and afford immense pleasure to the reader. Your style is simple and ideas original,...........

(M.P. Dwivedi)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१५ नवम्बर १८९९

प्रिय महोदय,

"द वर्ल्ड ए रियलिटी [1]" की एक प्रति मेरे पास भेजने के लिए मैं अनुगृहीत हूँ।

आपने विषय-प्रतिपादन सचमुच बड़ी खूबी से किया है। यद्यपि हिन्दू धर्मतत्त्वज्ञों के अनुसार संसार कल्पना-मात्र है, तो भी, किसी सीमा तक निसंदेह वह एक वास्तविकता भी है-भले ही उसकी अवधि थोड़ी क्यों न हो।

काव्य के क्षेत्र में आपने अपने लिए एक नया मार्ग बनाया है जो कि हिन्दी कवियों द्वारा अपनाए गए मार्ग से भिन्न है। आपने इसमें जो सफलता पाई है उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूँ। आप जिस भाषा और छन्द में लिखते हैं वे वास्तव में बड़े आकर्षक हैं और पढ़ने वालों को बड़ा सुख पहुँचाते हैं। आपकी शैली सरल है और आपके विचार मौलिक हैं।

(म. प्र. द्विवेदी)

1. पाठकजी की 'जगत सचाई सार' पुस्तक के शीर्षक का अंग्रेज़ी अनुवाद। इस पत्र का अंतिम भाग पूरी तरह नष्ट हो चुका है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Jhansi

(4) 18. 11. 1899

Dear Sir,

Your bearing letter of the 16th to hand.

I am glad you have taken my remarks in good light. Yes, the errors noted are indeed typographical errors.

As regards licence your explanation is satisfactory. Every writer indulges in irregularities. But in your case the instances do not even amount to licences or irregularities. Such usages are allowed and I have nothing to say further.

I am an admirer of your poems specially of your........... and shall be very glad to express my views in newspapers. But, unfortunately I am not a subscriber to the Bharat Mittra and have not therefore seen the correspondence mentioned by you. Neither I have seen the book by...........I shall willingly take up the subject if you will send me the book by Pattanlal and those issues of the Bharat Mittra in which the correspondence has been published.

About 2 weeks ago I contributed a short poem to the Bharat Mittra but I do not know whether it has found place in its coloum.

Several lines of your Hindi Hermit have been made by heart even by the children of my friends both at Jhansi and other places and are often recited. We really like them very much.

The plagiarism committed by Pattanlal has reminded me of what Lord Macaulay has said of Robert Montgomery in criticising his poem. Montgomery has been termed a Highway robber !

Yours very sincerely
M. P. Dwivedi

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१८.११.१८९९

प्रिय महोदय,

आपका दि० १६ का बैरंग पत्र मिला।

मुझे इस बात से प्रसन्नता है कि आपने मेरे कथनों को अच्छे अर्थ में लिया। हाँ, वस्तुतः ये मुद्रण की ही अशुद्धियाँ हैं।

लेखन में व्याकरण, छन्द आदि में मनमानी के सम्बन्ध में आपका कथन संतोषजनक है। प्रत्येक लेखक अपने लेखन में व्यतिक्रम कर जाता है, किन्तु आपके प्रसङ्ग में (ये) उद्धरण व्याकरण, छंद आदि दोषों अथवा नियमों के व्यतिक्रम की श्रेणी में आते ही नहीं। ऐसे प्रयोग तो स्वीकार्य हैं। इससे अधिक मुझे कुछ नहीं कहना है।

मैं आपकी कविताओं का प्रशंसक हूँ विशेषकर आपकी..........(का) तथा समाचार पत्रों में अपने विचार व्यक्त करने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी, किन्तु दुर्भाग्य से मैं 'भारत-मित्र' का ग्राहक नहीं हूँ अतः आपने जिस पत्राचार का उल्लेख किया है उसे मैंने देखा ही नहीं है। न ही मैंने (पत्तनलाल) की पुस्तक देखी है। मैं इस विषय को सहर्ष उठा लूँगा यदि आप पत्तनलाल की पुस्तक और 'भारत-मित्र' के वे अङ्क जिनमें यह पत्राचार प्रकाशित हुआ है मुझे भेज दें।

लगभग दो सप्ताह पूर्व मैंने 'भारत-मित्र' के लिए एक छोटी सी कविता भेजी थी परन्तु मुझे ज्ञात नहीं कि वह उसमें स्थान पा सकी है अथवा नहीं।

हिन्दी में लिखी आपकी 'हरमिट' की अनेक पंक्तियों को झाँसी और अन्य स्थानों के मेरे मित्रों के बच्चों तक ने हृदयङ्गम कर लिया है और बहुधा उन्हें उच्चरित करते रहते हैं। वास्तव में हम लोगों को वे पंक्तियां बहुत प्रिय हैं।

पत्तनलाल द्वारा इस प्रकार की गई चोरी ने मुझे उस बात की याद दिला दी है जो लार्ड मैकाले ने रौबर्ट मोन्टगोमरी की कविता की आलोचना करते समय कही थी। मोन्टगोमरी को एक लुटेरा क़रार किया गया था।

आपका अति विश्वस्त
म० प्र० द्विवेदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Jhansi
20.11.1899

Repld.
21.11.

(5)

Dear Sir,

When I received your previous letter unstamped, I presumed that some servant whom you asked to stamp and post it forgot to carry out your order and it was thus that the letter came bearing. I therefore, without due consideration thoughtlessly made a mention about it, for which I now beg your pardon, for, I find you have taken it too much to heart, so much so that you have not only sent me equivalent of what I paid for your letter but overpaid your own letter this time. I thankfully return your 2 postage labels and earnestly ask you for an assurance from you that you are not offended. Kindly send me 2 copies of the 'World a Reality' and one copy of the Hermit when it is reprinted. It is most unbecoming on the part of Mr. Ramdin Sinha to have practically declined sending you his publications. I believe you are aware someone, in Bihar is accused of blackmailing in connection with late Harish Chandra's books. As these daring though mean acts of these fellow's are calculated to do harm to the cause of literature, it is, I think our duty to try to put them down once for all. I am anxious to see Pattanlal's books and the correspondence and if you will please send the same to me I shall return the papers intact, after I have done with them.

Kindly ask the editor Bharat Mittra to send me by V. P. all those issues of the paper in which your poems have been published. I am longing to see them. It is very unkind on the part of the Editor not to favour me with a copy of the paper in which he published my शरत्सायङ्काल. But never mind. It is no doubt very disappointing to find no encouragement either from the public or from government, as regards advancement of Hindi literature, but we have to do a service to the cause of Hindi and it is that which should be our aim in this matter. Your silence for so long a time was indeed surprizing and I am glad you have appeared again in the field of Hindi literature. The Hindi reading public is very small and besides so unpatriotic that it is an hazardous affair to write

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

उत्तर भेजा २०.११.१८९९

२१.११

प्रिय महोदय,

बिना टिकिट लगा आपका पिछला पत्र जब मुझे मिला तो मैंने यही अनुमान लगाया कि जिस सेवक से टिकिट लगाकर डालने को कहा होगा वह आपके आदेश का पालन करना भूल गया और इसी कारण पत्र बैरंग आ गया। अत: मैंने बिना सोचे-समझे इस बात का उल्लेख कर दिया जिसके लिए अब मैं आपसे क्षमा माँगता हूँ क्योंकि मैंने देखा कि यह बात आपके दिल को इतनी चुभ गई कि आपके पत्र के लिए मैंने जो चुकाया आपने उसके बराबर की राशि भेजने के अलावा इस बार अपने ही पत्र पर आवश्यकता से अधिक व्यय कर डाला। धन्यवाद के साथ मैं आपके दो डाक लेबिल वापस कर रहा हूँ और तहेदिल से आपसे इस आश्वासन की माँग करता हूँ कि आपको पीड़ा नहीं पहुँची। "द वर्ल्ड ए रियलटी" की दो प्रतियाँ और हरमिट[1] की एक प्रति पुर्नमुद्रित होने पर कृपया भेजिएगा। श्री रामदीन सिंह के लिए यह बहुत अनुचित है कि उन्होंने एक प्रकार से अपने प्रकाशन आपको भेजने से इन्कार कर दिया है। मेरी समझ में आपको ज्ञात होगा कि बिहार में कोई व्यक्ति स्व. हरिश्चन्द्र की पुस्तकों के साथ घोटाला करने का दोषी ठहराया गया है। इन लोगों के ऐसे दबंग यद्यपि ओछे कारनामे साहित्य को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से जान बूझकर किए जाते हैं। मैं समझता हूँ यह हमारा कर्त्तव्य है कि ऐसे व्यक्तियों को एक बार सदा के लिए बैठा दें। मैं पत्तनलाल[2] की पुस्तकों और पत्र व्यवहार को देखने

---

1. एकान्तवासी योगी।

2. गया निवासी श्री पत्तनलाल (सन् १८५९-१९२८) ने 'सुसील कवि' उपनाम से गोल्डस्मिथ के ट्रैवलर का हिन्दी अनुवाद १८९९ ई० सन् में 'खड्ग विलास प्रेस' बाँकीपुर पटना से छपवाया था। इस पुस्तक के अंतिम पृष्ठ पर पत्तनलाल जी की अन्य पुस्तकों के नाम दिए गए हैं-जुबिली साठिका, बाबू जवाहिर लाल का जीवन चरित्र. उजाड़ गाँव, साधु, मोह मुदग्र,जरासंध वध महाकाव्य, कवियों की जीवनी छन्दबद्ध। इनमें 'उजाड़ गाँव,' और 'साधु' गोल्डस्मिथ के 'डेर्जटिड विलेज' व 'हरमिट' के अनुवाद हैं। श्री पत्तनलाल के इन अनुवादों को लेकर बड़ा वाद विवाद चला था और बाबू बालमुकुन्द गुप्त को झुँझला कर लिखना पड़ा कि "सुशील जी के मित्र तथा स्वंय सुशील जी जानते थे कि पंडित श्रीधर जी इन पुस्तकों को लिख चुके हैं। ऐसी दशा में उनका कर्त्तव्य था कि श्रीधर जी की बनाई पुस्तकों की बात कहकर भद्रता का परिचय देते। जब सुशीलजी के मित्र ने उनसे कहा कि 'श्रीधरी छन्द' में लिखो, तो बड़े दुख की बात है कि सुशीलजी ने श्रीधर जी का नाम तक न लिया। हम सुशील जी को अच्छा कवि समझते हैं-यदि वह अपनी पुस्तकों की भूमिका में श्रीधर जी पाठक की पुस्तकों की कुछ बात कह जाते तो भी उन पर इतना दोष न रहता"। (बालमुकुन्द गुप्त स्मारक ग्रंथ, पृ० १०६)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

anything in that language and pass it through the press. The other day I completed my translation of Bacon's essays and I do not know what to do with it now

I am desirous of having the pleasure of a personal interview with you if I have occassion to come to Agra. Will you please let me know where I can see you, if I happen to be there on any other day than Sunday. I mean between 10 & 4.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का उत्सुक हूँ। यदि आप कृपाकर मुझे वे भेज दें तो मैं उन्हें देखकर कागज़ात जैसे के तैसे लौटा दूँगा।

कृपया 'भारत-मित्र' के संपादक से कह दें कि वी. पी. द्वारा पत्र के वे सभी अङ्क मुझे भेज दें जिनमें आपकी कविताएँ प्रकाशित हुई हैं। मैं उन्हें देखने को उत्कंठित हूँ। संपादक ने अपने पत्र की उस प्रति को जिसमें उन्होंने मेरे 'शरत्सायङ्काल' को प्रकाशित किया है,[1] मुझे न भेजकर बड़ा ही निष्ठुर व्यवहार किया हैं। खैर, कोई बात नहीं।

हिन्दी साहित्य की प्रगति के लिए जनता और सरकार से किसी प्रकार का प्रोत्साहन न मिलना वास्तव में बहुत हताश करने वाली बात है। किन्तु, हमें हिन्दी की सेवा करनी है और इस बारे में यही हमारा उद्देश्य रहना चाहिए। इतने लम्बे समय तक आपका मौन वास्तव में चकित किए था और मुझे प्रसन्नता है कि आप हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में पुनः प्रगट हो गए हैं। हिन्दी पढ़ने वाले इतने थोड़े और साथ ही देशभक्तहीन हैं कि इस भाषा में कुछ भी लिखकर छापेखाने में देना जोखिम की बात है। पिछले दिन ही मैंने बेकन[2] के निबन्धों का अनुवाद पूरा किया है, पर मैं नहीं जानता कि अब इनका क्या करूँ?

यदि आगरा जाने का अवसर मिला तो मैं आपसे साक्षात्कार करने के आनन्द का अभिलाषी हूँ। क्या आप कृपया बतलावेंगे कि यदि मैं रविवार के अतिरिक्त किसी दिन वहाँ पहुँचूं तो आपसे कहाँ भेट हो सकेगी—मेरा मतलब १० और ४ के बीच।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

---

1. द्विवेदीजी के नाम लिखे गए अपने पत्र दिनांक १-१२-१८९९ में बाबू बालमुकुन्द गुप्त ने "शरत्सायङ्काल" का उल्लेख करते हुए उन्हें लिखा था:— "भारत-मित्र आपकी सेवा में जाने लगा, बराबर पहुँचेगा। शरत्सायङ्काल वाला लेख बहुत कठिन था, संस्कृत स्टाइल का होने से उसका समझना भी कठिन था। मैं उस रात बीमार हो गया था इसी से वह लेख अशुद्ध छपा। आपका दूसरा लेख भी बहुत कठिन था, सर्वसाधारण के समझने योग्य न था। ऐसे कठिन लेख लिखने हों तो कुछ सरल और रोचक ढंग निकालना चाहिए...आशा है कि आप सरल पथ पर चलना पसन्द करेंगे क्योंकि कठिन पथ पर जाना अधिक आदमी पसन्द नहीं करेंगे," आदि आदि। (बालमुकुन्द गुप्त-स्मारक-ग्रन्थ) पृ० १२२
2. प्रसिद्ध अंग्रेजी निबन्धकार फ्रांसिस बेकन। देखें 'बेकन-विचार-रत्नावली' अनु० पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी। खेमराज कृष्णदास, बम्बई, १९०१ ई०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Jhansi

(6) 23. 11. 1899

My dear Sir,

Your favour of the 22nd together with the two packets so kindly sent by you to hand.

I have already contributed another article to the Bharat Mittra and will continue doing so whenever I can spare time to devote it towards literary pursuits. I am sorry I have very little time for that purpose.

If the printer at (Agra) has a good stock of (printing) material and can get.........the book nicely......... I......be only too glad to give my translation of Bacon on any terms dictated by you. You know my object has never been to make money by such publications. I shall bring the manuscripts with me to Agra when I come to see you but I do not know when that will be.

I shall read through the papers sent by you carefully and will then study Pattanlal's booty (loot kā māl) to see what I can do in the matter. I believe Bharat Mittra will be prepared at......instance of course to publish my observations in connection with there ..... They will be very bitter!

The Nagari Pracharini Sabha can do very little in such matters. I do not at all like their policy. They even refused to send to the text book committee my review of the Hindi 3rd Reader. They have certain interests to study and they have to please certain interested persons and that is why they......move in the...of...which they should rightly do, I am disgusted with the doings of the Sabha. I sent them 3 articles in prose and verse for publication about 6 months ago and they have not even yet decided whether they would publish them or not. Such is the despatch with which work is done there.

I shall write to you again as soon as I have gone through the papers and books sent by you.

Yours sincerely

M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२३.११.१८६६

प्रिय महोदय,

आपका दि० २२ का पत्र मिला-साथ में दो पैकेट भी, जिन्हें आपने भेजने की कृपा की है ।

मैंने पहले ही 'भारत-मित्र' के लिए एक और लेख भेज रखा है। साहित्यिक गतिविधियों के लिए समय निकाल सका तो आगे भी लिखता रहूँगा। मुझे खेद है कि मुझे इस काम के लिए बहुत थोड़ा अवकाश मिलता है ।

यदि आगरा के मुद्रक के पास छपाई की अच्छी सामग्री है और वे पुस्तक को सुन्दर ढंग से निकाल सकते हैं तो मैं आपके द्वारा बतलाई गई किसी भी शर्त पर अपने 'बेकन' के अनुवाद को भेजने को सहर्ष तैय्यार हूँ । आप जानते हैं ऐसे प्रकाशनों से पैसे खड़े करने का मेरा कभी भी उद्देश्य नहीं रहा है । आपके पास आते समय मैं पाण्डुलिपि को अपने साथ आगरा लेता आऊँगा, परन्तु कह नहीं सकता वह दिन कब आवेगा । आपने जो कागज़ात भेजे हैं उन्हें पढ़कर तत्पश्चात पत्तनलाल द्वारा की गई इस लूट (लूट का माल) का इस दृष्टि से अध्ययन करूँगा कि इस सम्बन्ध में मै क्या कर सकता हूँ । मुझे भरोसा है कि (आपके) कहने पर 'भारत-मित्र' मेरे इन विचारों को छाप देगा......(पर) वे बड़े ही तीखे होंगे ।

ऐसे मामलों में 'नागरी प्रचारिणी सभा' अधिक कुछ नहीं कर सकती है । उनका ढर्रा मुझे कतई पसन्द नहीं । मेरी 'हिन्दी-तीसरी-पुस्तक' की समीक्षा को उन्होंने पाठ्य पुस्तक समिति को भेजने से इन्कार कर दिया । उनके अपने स्वार्थ हैं और चन्द व्यक्तियों को प्रसन्न....। 'सभा' के कारनामों से मुझे घृणा हो गई है । कोई ७ मास पूर्व मैंने उन्हें ३ लेख (गद्य व कविता) प्रकाशनार्थ भेजी थी किन्तु वे अभी तक उनको छापने अथवा न छापने का निर्णय नहीं ले सके हैं । काम निबटाने की इनकी यह रफ़्तार है ।

आपके द्वारा भेजे गए कागज़ातों व पुस्तकों को देखने के बाद यथाशीघ्र मैं पुन: आपको लिखूँगा ।

आपका विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Jhansi
1st Dec, 1899

My dear Sir,

Your letter of the 27th and 30th duly to hand as also my article together with a copy thereof. I thank you for getting the copy made out for me.

I have sent another contribution to the Bharat Mittra which will probably appear in the next issue of that paper. As soon as it does, I shall send this article for publication.

I have only done you a pure and simple justice in having spoken in high terms of your works. I have not at all over-estimated their merits in that respect. I say so honestly. No praise is due to me on account of my recent article on वास्तु and सिद्धान्त. I have taken it from a Marathi magazine the name of which appeared on the top of the article.

I am glad you have started translating " Traveller." This will complete the set now. I wondered why you did not do so, so long.

I am very anxious to see your Ghana-Vinaya and if I do not find opportunity to come to Agra in a few days I shall ask you to send the whole poem to me.

Bharat Mittra has sent me only one issue of the paper, namely that in which your सरद समागम स्वागत appeared. Will you please tell someone to go through the old numbers of this Journal from August 99 to see whether it noticed my review of the Hindi 3rd Reader. If so, kindly cut that piece and send it to me.

It is a striking coincidence to find that like you I have also been suffering from dyspepsia. I have only 2 hours in the morning at my disposal to apply them to study and out of this little time one hour is forcibly snatched by this vexatious enemy of mine in making me look after him. I am almost hopeless of getting rid of him. There is nothing else that I should say now. I therefore conclude and subscribe to remain,

Yours very sincerely

M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

१ दिसम्बर १८६६

प्रिय महोदय,

आपके दि० २७ व ३० वाले पत्र यथासमय प्राप्त हुए-साथ में मेरा लेख और उसकी प्रतिलिपि भी। मेरे लिए प्रतिलिपि करवाने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ।

मैंने 'भारत-मित्र' को एक और लेख भेजा है जो संभवतः इस पत्र के आगामी अङ्क में निकलेगा। निकलते ही इस लेख को प्रकाशन के लिए भेज दूँगा।

आपकी कृतियों की प्रशंसा करके मैंने आपके प्रति शुद्ध न्याय ही किया है। मैंने उनके गुणों को कतई बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत नहीं किया है। यह बात मैं ईमानदारी से कह रहा हूँ। "वास्तु" और "सिद्धांत" पर अपने हाल के लेख के लिए मैं प्रशंसा का अधिकारी नहीं हूँ। मैंने उसे एक मराठी पत्रिका से लिया था जिसका उल्लेख लेख के शीर्ष पर छपा है।

मुझे प्रसन्नता है कि आपने 'ट्रैवलर' का अनुवाद प्रारम्भ कर दिया है। अब सेट पूरा हो जाएगा। मुझे आश्चर्य है कि अब तक आपने ऐसा क्यों नहीं किया।

आपके 'घनविनय' को देखने का बहुत उत्सुक हूँ। यदि कुछ दिनों के अन्दर मुझे आगरे जाने का अवसर न मिला तो मैं आपसे पूरी कविता भेजने के लिए कहूँगा।

'भारत-मित्र' ने मुझे पत्र का केवल एक अङ्क भेजा है-वह अङ्क जिसमें आपका 'सरद समागम स्वागत' निकला है। क्या आप कृपाकर किसी को बोलेंगे कि वे इस पत्रिका के अगस्त ६६ से लेकर पुराने अङ्कों को यह पता लगाने के लिए टटोल ले कि उसमें 'तीसरी हिन्दी पुस्तक' की मेरी समीक्षा का कहीं उल्लेख हुआ है अथवा नहीं ? यदि हुआ हो तो कृपया उतने अंश को काटकर मेरे पास भेज दीजिएगा।

यह एक विचित्र संयोग है कि आपकी तरह मैं भी मन्दाग्नि का शिकार हूँ। अध्ययन के लिए मेरे पास सुबह के केवल दो घन्टे रहते हैं और इस थोड़े समय में से एक घन्टा इस दुःखदायी बैरी की देखभाल करने में जबरन निकल जाता है। इससे मुक्ति पाने में मैं लगभग निराश हो चुका हूँ। फ़िलहाल और कुछ नहीं कहना है अतः पत्र समाप्त करते हुए मैं हूँ,

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

East India Post Card

Jhansi

(8) 7. 12. 1899

My dear Sir,

Your letter of yesterday. I sent my article on Pattanlal's books on Tuesday. It will probably appear in the next issue.

I think Bharat Mittra never noticed my review. Baboo Bal Mukund writes to me " जरा सीताराम जी पर कृपा ही रखना चाहिए.' I have never been unkind to this gentleman, though I have been so to his version of Kalidass. He appears to be a friend of Baboo Sitaram.

As you rightly observe the metre would have suited the Khadi (Boli) form better but as I generally write in Brij Bhasha I adopted that form. The metre differs only a little from yours.

Yours very sincerely
M. Prasad

Pandit Sridhar Pathak.
Panni gali,
Agra.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईस्ट इंडिया पोस्ट कार्ड

झाँसी

७.१२.१८९९

प्रिय महोदय,

आपका कल वाला पत्र मिला। पत्तनलाल की पुस्तकों पर मंगलवार को मैंने अपना लेख भेजा है। संभवतः वह अगले अङ्क में निकलेगा।

मेरी समझ में 'भारत-मित्र' ने मेरी समीक्षा की चर्चा ही नहीं की। बाबू बालमुकुन्द मुझे लिखते हैं कि "जरा सीतारामजी पर कृपा ही रखना चाहिए"। इन सज्जन के प्रति मैं कभी कठोर नहीं रहा। उनके कालिदास के रूपान्तर के प्रति तो अवश्य में वैसा रहा हूँ। ये, बाबू सीताराम के मित्र मालूम पड़ते हैं।

आपने उचित ही कहा है-वह छंद खड़ी बोली में अधिक फबता, परंतु सामान्यतः मैं ब्रजभाषा में लिखता हूँ इसीलिए मैंने उसे ही अपनाया। यह छंद आपके छंद से थोड़ा सा ही भिन्न है।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

पंडित श्रीधर पाठक

पन्नी गली,

आगरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(9)

Jhansi
12.12.1899

Repld.
13.12.99

My dear Sridharjee,

That night I reached Jhansi at 3 A.M. I was all alone in the 2nd class and had a good sleep.

The accompanying card is from the same young man whose address I gave you on the platform at the Fort station. See how he speaks of your translations. He had already read your Hermit and Deserted-village but I sent him these books again, I mean the copies which you sent me the other day. He has read them again and promises to enjoy the poetry to the fullest extent after he has got rid of his M.A. examination in the next month.

Baboo Balmukund has not published my article on Pattanlal's translation in the last issue of the Bharat Mittra. I would be sorry if he decided not to publish it for my labor would go for nothing. It you think it proper you might give a hint to him. I saw the last instalment of your घन विनय published this week. As I have already enjoyed it on Sunday, I need say nothing about it now.

Yours very sincerely
M. Prasad.

When you return my Mss. please register them to prevent chance of being lost.

M. P.

झाँसी
१२.१२.१८६६

उत्तर दिया
१३.१२.६६

प्रिय श्रीधर जी,

उस रात मैं प्रातः ३ बजे झाँसी पहुँचा। द्वितीय श्रेणी के डिब्बे में मैं अकेला ही था। अच्छी नींद आई।

संलग्न कार्ड उसी नवयुवक का है जिसका पता मैंने आपको फोर्ट स्टेशन पर दिया था। देखिये, आपके अनुवादों के सम्बन्ध में वह क्या कहता है। उसने आपके 'हरमिट' और 'डेज़र्टिड विलेज' पहले ही पढ़ रखे थे, परन्तु मैंने उसे ये पुस्तकें फिर भेज दीं। मेरा मतलब है-पुस्तक की वे प्रतियाँ जो आपने पिछले दिनों मुझे भेजी थीं। उसने, फिर उन्हें पढ़ डाला है और यह आश्वासन दिया है कि अगले मास एम० ए० की परीक्षा से अवकाश पा जाने पर वह इन काव्यों का जम कर आनन्द लेगा।

बाबू बालमुकुन्द ने पत्तनलाल के अनुवादों पर मेरा लेख 'भारत-मित्र' के पिछले अङ्क में प्रकाशित नहीं किया है। यदि उन्होंने न छापने का निश्चय कर लिया तो मुझे दुःख होगा क्योंकि मेरा परिश्रम व्यर्थ चला जाएगा। यदि आप उचित समझें तो उनको इस बात का संकेत दे दें। मैंने देखा है कि आपके 'घन-विनय' की अंतिम क़िस्त इस सप्ताह प्रकाशित हुई है। चूँकि मैंने रविवार को ही उसका रसास्वादन कर लिया था अतः अब उसके विषय में मुझे कुछ नहीं कहना है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

जब आप मेरी पाण्डुलिपियाँ वापस करें, कृपया रजिस्टरी करवा दें ताकि खोने की आशंका न रहे।

म०प्र०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(10)

Jhansi
23.12.1899

My dear Sridharjee,

I recd yours of yesterday just now—10. A.M. I have sent you a letter yesterday.

Keep my Mss. as long as you require. There is no hurry about it at all.

Yes, the 2nd is an improvement upon the 1st reading in the Ghan Vinay. I mean the line तुम विन व्यथित मलिन मन etc. This reads better and has more euphony in it. Please adopt it. I have not seen your Hemant, and can therefore say nothing about it. If you have a copy please send it to me. I am going to Lucknow tonight for a week and will go through the प्रतिमा पूजन पञ्चक on my arrival there. I shall write to you in the matter shortly.

Baboo Balmukund writes to me to say that he is very ill and apologized for the mistakes in your contributions. He says he has written to you. Please overlook the matter this time.

Please read the next issue of the Bharat Mittra. During August or September last the Text book committee passed a resolution in connection with my review of 3rd Reader. Can you get for me the proceedings of the committee and the name of the members present. Your friends at Allahabad will be able to give the information..... ... I have the resolution but not the names.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२३.१२.१८९९

प्रिय श्रीधर जी,

आपका कल वाला पत्र अभी दस बजे प्रातः मिला। आपके नाम मैंने कल एक पत्र भेजा है। जब तक आप चाहें मेरी पाण्डुलिपियाँ अपने पास रखें। उनकी कतई कोई जल्दी नहीं है।

हाँ, 'घन-विनय' के पहले पाठ की अपेक्षा दूसरा पाठ अधिक सुधरा हुआ है मेरा तात्पर्य इस पंक्ति से है-तुम बिन व्यथित मलिन मन आदि।

यह पंक्ति पढ़ने में अपेक्षाकृत अधिक सुन्दर और सुरीली है। कृपया इसे ही अपना लें।[1] मैंने आपकी 'हेमन्त' शीर्षक रचना नहीं देखी है, अतः उसके विषय में कुछ नहीं कह सकता। यदि आपके पास एक प्रति हो तो कृपया मेरे पास भेज दें।

एक सप्ताह के लिए मैं आज रात लखनऊ जा रहा हूँ और वहाँ पहुँचकर 'प्रतिमा पूजन पञ्चक' देखूँगा। इस सम्बन्ध में शीघ्र ही आपको लिखूँगा।

बाबू बालमुकुन्द लिखते हैं कि वे सख़्त बीमार हैं और आपकी रचनाओं में खोट निकालने के लिए क्षमा माँगी है। इस बार इस मामले को कृपया नज़रन्दाज़ कर दीजिए। कृपया 'भारत-मित्र' का अगला अङ्क पढ़ियेगा। पिछले अगस्त या सितम्बर में पाठ्य पुस्तक समिति ने मेरी तीसरी रीडर की समीक्षा के संबंध में एक प्रस्ताव पारित किया था। क्या आप समिति की कार्यवाही के विवरण की प्रति और उपस्थित सदस्यों के नाम मेरे पास भिजवा सकेंगे? इलाहाबाद में आपके मित्र सूचना दे सकेंगे....प्रस्ताव तो मेरे पास है, किंतु नामावली नहीं है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

---

1. **किन्तु पाठकजी ने अपने पहले पाठ को ही यथावत रखा, अर्थात तुम बिन व्यथित विकल मन-मनोविनोद. पृ० ८. प्रयाग १९१७.**

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(11)

Jhansi
12.1.1900

Dear Sridharjee,

Your letter and packet to hand. I could not subdue my temptation of going through your manuscripts at once. I stopped the office work and read through the manuscripts.

I have made short notes in pencil here and there and returned the copy by post. Some of them are very nice indeed and I have marked them. The whole is worth publication. The poems do not admit of my suggestions; all the same I have made a few which you can safely ignore as they are hardly worth giving affect to. When the pieces are printed do not fail to send me one or two copies.

In these poems you have said a good deal about रति, रस, नायिका etc. May I enquire whether you have seen वात्स्यायन कामसूत्र in Sanscrit? It is an ancient and rare work and was stealthily printed in Bombay some years ago by Pundit Durga Prasad of Jeypore. This Pundit is now dead. He was a renowned scholar of Sanscrit and edited Kavyamala a monthly Sanscrit magazine for many years. The subject of the book (कामसूत्र) is no doubt filthy but is worth reading on account of its age.

I cannot myself understand what meaning the word "Sravaswi" is intended to convey. I think I should treat this man's letter with contempt and send no reply. I have, however, drafted a reply and if I am adviced by friends here I would send it.

The man would not express himself in public print. He says that I have echoed what the editor Bharat Mittra had already said in his previous article on Pattanlal's version of Goldsmith.

If at all necessary I will send an article to press which will remove his itching instantly. However I shall not take that step until that man makes by his conduct absolutely necessary for me to do so.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१२.१.१९००

प्रिय श्रीधर जी,

आपका पत्र और पैकेट मिले। आपकी पाण्डुलिपियों को तत्काल पढ़ने का लोभ मैं संवरण न कर सका। दफ़्तर का काम रोककर मैं आपकी पाण्डुलिपियों को पढ़ गया।

जहाँ-तहाँ पेंसिल से संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखकर मैंने इस प्रति को डाक द्वारा लौटा दिया है। कुछेक तो निसंदेह बहुत ही बढ़िया हैं। मैंने उन पर चिह्न लगा दिए हैं। पूरी की पूरी प्रकाशन योग्य है। इन कविताओं में मेरे सुझावों के लिए कतई गुंजाइश नहीं है, फिर भी मैंने कुछ सुझाव दे डाले हैं जिन्हें आप सहज में टाल सकते हैं क्योंकि वे अमल करने योग्य नहीं हैं। जब ये रचनाएँ छप जाएँ तो एक-दो प्रतियाँ मुझे भेजना न भूलिएगा।

इन कविताओं में आपने रति, रस, नायिका आदि पर पर्याप्त लिखा है। क्या मैं जान सकता हूँ कि आपने संस्कृत में वात्स्यायन का 'कामसूत्र' देखा है ? यह एक प्राचीन एवं दुर्लभ कृति है जिसे जयपुर के पंडित दुर्गाप्रसाद ने कुछ वर्ष पूर्व लुके-छिपे बंबई से छपवाया था। पंडितजी अब जीवित नहीं हैं। वे संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान थे और वर्षों तक 'काव्यमाला' नामक संस्कृत मासिक पत्रिका का संपादन करते रहे। इस पुस्तक (कामसूत्र) का विषय निसंदेह गन्दा है, किन्तु अपनी प्राचीनता के कारण पठनीय अवश्य है।

मुझे स्वयं समझ में नहीं आ रहा है कि 'अवस्वी' शब्द किस अर्थ का बोधक है। सोचता हूँ कि इस व्यक्ति के पत्र को घृणा की दृष्टि से ही देखूँ और कोई उत्तर ही न दूँ। फिर भी, मैंने उत्तर तो लिख रखा है। स्थानीय मित्रों की राय हुई तो मैं उसे भेज दूँगा।

यह व्यक्ति सार्वजनिक रूप से अपने विचार प्रकाशित नहीं करेगा। उनका कथन है कि मैंने उसी बात को प्रतिध्वनित किया है जो 'भारत-मित्र' के संपादक ने पत्तनलाल कृत गोल्डस्मिथ के अनुवाद पर अपने पिछले लेख में कही थी।

यदि आवश्यक हुआ तो मैं एक लेख छपने को भेजूँगा जो इनकी खुजली तत्काल मिटा देगा। मैं ऐसा कोई कदम तब तक नहीं उठाऊँगा जब तक यह हज़रत अपने कारनामों से पूरी तरह मुझे ऐसा करने को विवश न कर दें।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

East India Post Card

Jhansi
13.1.1900

(12)

Dear Sridharjee,

Yours of yesterday. I am not going to take shelter under figure 'climax' and thus explain the propriety of the 'Saptaka'. I have told the writer that I consider it an honour to speak of your poetry in that manner and that Lala Sitaram of whom he is an ardent admirer has done no better in his dedication of Kumar and Raghu to Mr. Griffith and Maharaja Ayodhya. If he expresses himself through the medium of any newspaper I shall only be too glad, for I will then see what stuff he is made of. You need not mind at all about that matter. I have returned your manuscripts yesterday and sent a letter as well.

Yours very sincerely
M. Prasad.

Pandit Sridhar Pathak
Panni gali
Agra.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईस्ट इंडिया पोस्ट कार्ड

झाँसी

१३.१.१९००

प्रिय श्रीधर जी,

आपका कल का पत्र मिला। 'परिणति' का आश्रय लेकर मैं 'सप्तक'[1] के औचित्य पर कुछ कहने से रहा। मैंने लेखक से कह दिया है कि आपकी कविता पर इस प्रकार लिखना मैं अपने लिए गौरव की बात समझता हूँ। लाला सीताराम ने, जिनके वह[2] बड़े भक्त हैं अपने 'कुमार-संभव' और 'रघुवंश' को मिस्टर ग्रिफिथ और महाराजा अयोध्या को समर्पित कर क्या निहाल कर दिया। यदि इन्होंने किसी पत्र के माध्यम से अपनी बात कही, तो मुझे प्रसन्नता ही होगी क्योंकि तब मैं देख लूँगा कि ये किस धातु के बने हुए हैं। आप इस विषय में चिंतित न हो। मैंने आपकी पाण्डुलिपियाँ कल वापस कर दी हैं और एक पत्र भी भेजा है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

पं० श्रीधर पाठक
पन्नी गली
आगरा।

---

1. श्रीधर–सप्तक
2. माधवप्रसाद मिश्र ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(13)

Jhansi
3.2.1900

My dear Sridharjee,

Your letter of the 2nd.

I am alive to the fact that in cases like those cited by me nominations are not indispensably necessary but the reviews of the Reader have accepted my suggestions in that respect in several places in the same book; so if they followed the rule in one place, they must do so in the other-nay in all.

Besides, their unjust resolution has driven me to find the faults as I have done.

I agree with you entirely that we must write our Hindi idiomatically as we speak but as you already know the circumstances which forced me to write that letter were exceptional.

The letter has also been published in the Hindusthan and the editor thereof has further improved upon the very sentence to which you have referred in a foot-note. This I think appeared in the issue of that paper for the 31st January. On the 1st the editor has written an important reader condeming the Readers and drawing the local Govt's attention to the matter. I do not think the vernacular Reporter will send a translation of it to Government.

Tomorrow is Vasant, perhaps like Hemant you will produce another elegant piece of poetry on spring. I am well and hope this will find you in the enjoyment of good health.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

३.२.१६००

प्रिय श्रीधर जी,

आपका दि० २ का पत्र मिला।

मैं इस सम्बन्ध में सजग हूँ कि ऐसे मामलों में जैसे कि मैंने उद्घृत किए हैं, नाम-निर्देशन कोई अपरिहार्य आवश्यकता नहीं है, किन्तु 'रीडर' की समीक्षाओं ने इस सम्बन्ध में मेरे सुझावों को उसी पुस्तक में अनेक जगह स्वीकार कर लिया है। अत: यदि एक जगह वे इस नियम का अनुसरण करते हैं तो दूसरी जगह भी, बल्कि सभी जगह उन्हें इसे निभाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त उनके इस अन्यायपूर्ण प्रस्ताव ने मुझे दोष निकालने को विवश किया है और मैंने दोष निकाले भी हैं। मैं आपसे पूरी तरह सहमत हूँ कि हमें मुहावरेदार हिन्दी लिखनी चाहिए जैसी कि हम बोलते हैं किन्तु जैसा कि आप जानते हैं-असाधारण परिस्थितियों ने मुझे वह पत्र लिखने को विवश किया था।

'हिन्दोस्थान' में भी यह पत्र प्रकाशित हुआ है और संपादक महोदय ने उस वाक्य को जिसका आपने पाद-टिप्पणी में उल्लेख किया है और आगे सुधार दिया है। मेरा विचार है कि इस समाचार पत्र के ३१ जनवरी वाले अङ्क में वह पत्र प्रकाशित हुआ है। पहली को संपादक महोदय ने रीडर्स (पाठ्य पुस्तकों) की निन्दा करते हुए एक महत्वपूर्ण रीडर लिखी है और इस विषय में सरकार का ध्यान आकृष्ट किया है। मैं नहीं समझता कि 'वर्नाकुलर रिपोर्टर' इसका अनुवाद सरकार को भेजेगा।

कल वसन्त है—हेमन्त की भांति सम्भवत: आप वसन्त ऋतु पर भी कोई सुललित काव्य रचना प्रस्तुत करेंगे। मैं ठीक हूँ और आशा करता हूँ कि आप पूर्ण स्वस्थता का आनन्द ले रहे हैं।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(14)

Jhansi
7.2.1900

Repld.
9.2.00

My dear Sridharjee,

Your letter of the 6th. It has inflamed my soul at the audacious manner Baboo Balmukund has acted. This is the first time that I knew from your letter that he is the author of खिलौना. Had I known this before I was not such a mean fellow as to have written adversely of his writings, but Baboo Balmukund saw my article and should have acquainted me with the real fact and I would have at once amended matters.

Before receipt of your letter I had already posted my article "राम भजन की दक्षिणा" to the address of Bharat Mittra. I have now written to Baboo Balmukund tendering an apology and leaving the matter in his hand to do as he pleases. I have told him that since I have known the real fact I would say nothing even if he abused me openly. I wish you would write a good letter to him.

I have sent by reviews of Lala Sitaram's works to Press and Kumar Sambhava Bhasha is being printed. I shall be only too glad if you will kindly take it upon yourself to make my reviews free from defects. From your actions you made it appear that you were not willing to do so. On hearing from you I will send you the reviews again and you can make any modification you deem necessary and return them. The pleaders say that in the reviews of Kumar and Ritu Samhar no material alterations should me made, for it would mean that the articles as they appeared in newspapers were thought defamatory or too strong and that is why their tone has been moderated. Reviews of Meghduta is under preparation. The first proof of the review of Kumar Sambhava is expected in a day or two.

Yours very sincerely
M. Prasad.

I think Baboo Balmukund has himself written "धम्मथि परिश्रम". I am almost sure.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर दिया
६.२.००

झाँसी
७.२.१६००

प्रिय श्रीधर जी,

आपका ७ ता० का पत्र मिला। जिस ढिठाई से बाबू बालमुकुन्द पेश आए हैं उससे मेरा अन्तस् भभक उठा है। सर्वप्रथम आपके पत्र से ही मुझे ज्ञात हुआ कि वे ही 'खिलौना' के लेखक हैं। यदि मुझे यह पहले पता होता तो मैं इतना ओछा नहीं था कि उनके कथन के विरुद्ध लिखता। किन्तु बाबू बालमुकुन्द ने मेरा लेख देखा था और उन्हें चाहिए था कि वे मुझे वास्तविकता से अवगत करा देते ताकि मैं तुरन्त ही बिगड़ी बात बना लेता।

आपका पत्र मिलने से पूर्व ही मैं अपना लेख 'राम भजन की दक्षिणा' भारत-मित्र को डाक से भेज चुका था। अब मैंने बाबू बालमुकुन्द से क्षमा याचना करते हुए उन्हें लिखा है और यह विषय उनकी मर्ज़ी पर छोड़े देता हूँ। जचे सो करें। मैंने उनसे कह दिया है कि मुझे वास्तविकता ज्ञात हो गई है, इसलिए मैं कुछ भी नहीं बोलूँगा, चाहे वे खुलकर मुझे गाली ही क्यों न दें। मैं चाहता हूँ कि आप उन्हें एक अच्छा सा पत्र लिख दें।

लाला सीताराम की कृतियों पर अपनी समालोचनाओं को मैंने छापेखाने भेज दिया है। 'कुमारसम्भव भाषा' छप रही है। यदि आप कृपा कर, मेरी समालोचनाओं को दोष-मुक्त करने के लिए सहमत हो जाएँ तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। आपके रुख़ से ऐसा लगा कि आप ऐसा करने को तैयार नहीं हैं। आपसे सूचना मिलने पर मैं इन समालोचनाओं को आपके पास फिर भेज दूँगा। आप अपनी इच्छानुसार उचित परिवर्तन करके उन्हें लौटा दें। वकीलों का कहना है कि 'कुमार' और 'ऋतुसंहार' की समालोचना में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं करना चाहिए क्योंकि इसका यह अर्थ निकाला जाएगा कि जिस ढंग से लेख समाचार पत्रों में निकलें हैं उनको निंदात्मक व बहुत तीखा समझकर ही उनका लहजा मर्यादित कर दिया गया है। 'रघुवंश' की समालोचना तैयार है। 'मेघदूत' की तैयार हो रही है। 'कुमार-सम्भव' की समालोचना का प्रूफ़ एक या दो दिन में आने की आशा है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

मैं समझता हूँ कि बाबू बालमुकुन्द ने ही 'धर्म्मार्थ परिश्रम' लिखा है। मुझे ऐसा लगभग निश्चित लगता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(15)

Jhansi
12.2.1900

My dear Sridharjee,

Your post card. I am awfully pleased to read your नव वसन्त. I knew you would write something on Vasant. The poem is indeed excellent.

I am writing to Kalakankar for you शरत

Please read the accompanying letter from Balmukund Baboo. The explanation is anything but satisfactory. The last para refers to my having written to him, sometime ago, not to publish my contributions with yours, for in that case the worthlessness of my writings becomes more apparent. He says nothing about my answer to his article. Perhaps he does not like to publish it and thus rejoice over his seeming victory which he has not at all merited. If you see nothing compromising in the issue which will come tomorrow, will you please tell this good man to be a little reasonable and publish my answer. It is only right that he should do so. Look at the absurdity of his motive in writing that offending article, but what he says is not correct. He simply meant revenge and nothing else.

Please return the accompanying letter. I am not going to send any reply to it. If you write to him you might kindly mention that I have recd. his explanation.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१२.२.१६००

प्रिय श्रीधर जी,

आपका पोस्ट कार्ड मिला। आपके 'नव-वसन्त' को पढ़कर अत्यधिक प्रसन्नता हुई। मुझे पता था कि आप वसन्त पर कुछ लिखेंगे। कविता सचमुच बहुत ही श्रेष्ठ है।

आपके 'शरत्' के लिए कालाकांकर को लिख रहा हूँ।

कृपया बालमुकुन्द बाबू के संलग्न पत्र को पढ़िये। इनका स्पष्टीकरण कतई संतोषजनक नहीं है। अन्तिम परिच्छेद में उस बात का उल्लेख है जो मैंने कुछ समय पूर्व उनको लिखी थी कि मेरी रचनाओं को आपकी रचनाओं के साथ प्रकाशित न किया करें क्योंकि उस स्थिति में मेरे लिखे की क़ीमत और चौड़े में आ जाती है। उन्होंने अपने लेख से सम्बन्धित मेरे उत्तर के सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा है। शायद वे उसे प्रकाशित करना नहीं चाहते और इस प्रकार अपनी दिखावटी विजय पर उत्फुल्ल होना चाहते हैं-पर उसके वे नितांत अयोग्य हैं। यदि आप कल के अङ्क में किसी प्रकार के समझौते का उल्लेख न पावें तो क्या आप कृपया इस भले आदमी को थोड़ा समझदारी से काम लेने तथा मेरे उत्तर को प्रकाशित कर देने को कहेंगे। उनका ऐसा करना ही उचित है। भावनाओं को ठेस पहुँचाने वाले उस लेख के उद्देश्य का बेहूदापन तो ज़रा देखिए, पर वे जो कहते हैं कदापि सही नहीं है। उनका उद्देश्य और कुछ नहीं केवल बदला लेना था।

कृपया संलग्न पत्र को वापस कर दीजिएगा। मैं उसका कोई उत्तर नहीं दूंगा। यदि आप उन्हें लिखें तो कृपया इस बात का संकेत कर दें कि मुझे उनका स्पष्टीकरण मिल गया है।

उत्तर दिया
१४.२.१६००

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(16)

Jhansi
14.2.1900

My dear Panditjee,

Your letter of the 12th. Previous to this I have sent you another letter.

You know it already that I have not a better knowledge of Sanskrit than you have. I have, however, looked through you Sanscrit verses very minutely and with a critical eye but find nothing inaccurate in them. The lines are well published and are an excellent specimen of your naturally sweet sonorous poetry.

I am sending by registered book post my review of the ऋतुसंहार. Kindly make any suggestions you think proper and return the manuscripts when you have done with them, by registered post.

Balmukund has not played the part of a gentleman in writing that article in the manner he did. I always keep myself prepared to retaliate the attack of the persons whose book I criticise but then in this instance the man who posed himself to be a friend acted on the lines of a foe. This is what pains me the most. Surely it was not all in a joke. But if he is sincere in what he says he should now publish my answer and say in the remarks of his own that his article was nothing but दिल्लगी.

You must have read in the B. Mittra yesterday that he paid no attention to Lala Sitaram's letter in which he requested him not to take notice of my letter that may be sent in the name of the Lala about his books but took prompt notice of the forged letter which he received. This conduct is certainly very ungentlemanly and I wish you would kindly write to him to be a little reasonable in such delicate matters. He writes to me in his card received to day:—
मेरा पत्र आपको मिला होगा और निश्चय ही आपने मेरा दोष मार्जन किया होगा-अब मुझे भी संदेह होता है कि कहीं गरीब शालिग्राम के किसी शत्रु ने वह चिट्ठी न भेजी हो-कृपा करके आपके पास जो चिट्ठी आई है वह भेज देना चाहिए। मिलान करके वापस भेज दूंगा।

दास etc.

I will send him a copy of that letter but say nothing more in my letter about anything.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

प्रिय पंडितजी, १४.२.१६००

आपका दि० १२ का पत्र मिला। इससे पूर्व मैं एक और पत्र आपको भेज चुका हूँ।

आप जानते ही हैं कि संस्कृत का मुझे उतना अच्छा ज्ञान नहीं जितना कि आपको है। फिर भी मैंने आपके संस्कृत पदों को बड़ी बारीकी और विवेचनात्मक दृष्टि से देखा है और उनमें कुछ असंगत नहीं पाया। पंक्तियाँ ढंग से छपी हैं और आपकी सहज, सुन्दर और सरस कविता का श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

रजिस्टर्ड बुक पोस्ट द्वारा मैं 'ऋतुसंहार' की अपनी समीक्षा भेज रहा हूँ। आप जो सुझाव देना उचित समझें, कृपया दें और बाद में रजिस्टर्ड डाक से पाण्डुलिपियाँ वापस कर दें।

बालमुकुन्द ने उस लेख को वैसा लिखकर सज्जनों जैसा बर्ताव नहीं किया है। जिन व्यक्तियों की पुस्तकों की मैं आलोचना करता हूँ उनके आक्रमण का प्रतिकार करने के लिए मैं सदैव अपने को तैयार रखता हूँ। किन्तु, इस मामले में अपने को मित्र कहने वाले ने ही शत्रु के मार्ग को अपनाया है। इस बात से मुझे अत्यधिक कष्ट होता है। निश्चय ही सब मज़ाक में नहीं था। परन्तु, यदि वे अपनी कथनी के प्रति सच्चे हैं तो अब उन्हें मेरा उत्तर प्रकाशित कर देना चाहिए और अपनी टिप्पणी द्वारा यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि उनका लेख और कुछ नहीं महज़ एक दिल्लगी थी।

निश्चय ही आपने 'भारत-मित्र' में कल पढ़ा होगा कि उन्होंने लाला सीताराम के पत्र पर कोई ध्यान नहीं दिया है। इस पत्र में लाला ने उनसे प्रार्थना की थी कि वे मेरे उन पत्रों पर कोई ध्यान न दें जो उनकी पुस्तकों के सम्बन्ध में स्वयं उन्हीं के नाम से भेजे गए हों। किन्तु, उस जाली पत्र पर उन्होंने तुरन्त ध्यान दिया। यह व्यवहार निश्चय ही अत्यन्त अभद्र है और मेरी इच्छा है कि आप कृपया उन्हें लिख दें कि वे ऐसे नाज़ुक मसलों में थोड़ा विवेकशील बनें। आज जो उनका कार्ड आया है उसमें वे लिखते हैं:-"मेरा पत्र आपको मिला होगा और निश्चय ही आपने मेरा दोष मार्जन किया होगा। अब मुझे भी संदेह होता है कि कहीं गरीब शालिग्राम के किसी शत्रु ने वह चिट्ठी न भेजी हो। कृपा करके आपके पास जो चिट्ठी आई है वह भेज देनी चाहिए। मिलान करके वापस भेज दूँगा"। दास आदि

मैं उन्हें उस पत्र की प्रतिलिपि भेज दूँगा, किन्तु और किसी विषय की कोई चर्चा नहीं करूँगा।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(17)

Jhansi
20.2. 1900

Repld
21.2.00

My dear Panditjee,

Yours of the 19th. You must have recd. my letter by this time. With it I have sent you in original the reply that I received from Kalakankar.

I have no copy—fair copy of my reply to that article of Balmukund which appeared in the Bharat Mittra or I would have sent it to you. I have only my pencil draft with me and I do not think it is worthwhile recopying it for your perusal unless you desire that I should do so.

Please write to Balmukund to publish my reply with a note by him, or publish another letter from राम भज stating that his previous remarks were nothing but दिल्लगी and that I was correct in criticising those lines as I did. I have already written to him accordingly.

I received the reviews of रघु and ऋतु. Your observations are very useful. In the रघु I will adopt them to the fullest extent. In the other I will consult my pleader friends and then write to you about it.

Thanks for your enquiry about Girja Dutta. In the last N.W. P. Gazette the result of M.A. is out. You will find Girja Dutta has passed successfully so muchso that he stood second in the University. He is here with me. I have not yet succeded in finding employment for him. A temporary offer on Rs 40/-was made by the Educational Deptt. but this I refused. The Post Master General, Lahore promised to send a suitable offer after result of the M.A. Exn. This result has been communicated to him but I do not like to send him there unless the offer is too tempting. Can you now do anything for him.

Hoping you are well.

Yours very sincerely

M. Prasad.

उत्तर दिया
२१.२.००

झाँसी
२०.२.१६००

प्रिय पंडितजी,

दि० १६ का आपका पत्र मिला। अब तक आपको मेरा पत्र भी मिल चुका होगा। उसमें मैंने कालाकांकर से प्राप्त उत्तर की मूल प्रतिलिपि आपके पास भेजी है।

'भारत-मित्र' में प्रकाशित बालमुकुन्द के उस लेख पर मेरे उत्तर की कोई सुलिखित प्रति मेरे पास नहीं है; होती तो आपके पास भेज देता। मेरे पास केवल पेंसिल से लिखा प्रारूप है। जब तक आप ज़ोर न दें आपके अवलोकनार्थ वापस उसकी (सुवाच्य) प्रतिलिपि करना मैं निरर्थक समझता हूँ।

कृपया बालमुकुन्द को मेरा उत्तर मय उनकी टिप्पणी के प्रकाशित करने को लिखें अथवा 'राम भज' वाले दूसरे पत्र को वे यह लिखकर प्रकाशित करें कि उनके पिछले कथन महज़ एक दिल्लगी के और कुछ न थे। उन पंक्तियों की मैंने जो आलोचना की थी वह दुरस्त थी। ऐसा मैंने उनको पहले ही लिख रखा है। मुझे 'रघु' और 'ऋतु' की समीक्षाएँ प्राप्त हुई हैं। आपके कथन बहुत उपयोगी हैं। 'रघु' के प्रसङ्ग में इन्हें मैं पूरी तरह अपना लूँगा। दूसरे के सम्बन्ध में मैं अपने वकील मित्रों से परामर्श कर फिर आपको इस विषय में लिखूँगा।

गिरजादत्त के बारे में आपने जो पूछताछ की है उसके लिए धन्यवाद। उत्तर-पश्चिमी प्रान्त के पिछले गज़ट में एम० ए० का परीक्षा-फल घोषित हुआ है। आप देखेंगे कि गिरजादत्त सफलता पूर्वक उत्तीर्ण हुआ है-यहाँ तक कि विश्वविद्यालय में उसे दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है। वह यहीं मेरे पास है। उसके लिए कोई नौकरी तलाश करने में मुझे सफलता नहीं मिली है। शिक्षा विभाग ने ४० रुपए के एक अस्थायी पद के लिए प्रस्ताव किया था, किन्तु मैंने इन्कार कर दिया। महानिरीक्षक, डाक विभाग, लाहौर ने एम० ए० का परिणाम निकल जाने के बाद कोई उपयुक्त पद देने का वचन दिया था। परिणाम की सूचना उन्हें भेज दी गई है, परन्तु जब तक प्रस्ताव बहुत आकर्षक न हो, मैं उसे वहाँ भेजना नहीं चाहता। क्या आप उसके लिए कुछ कर सकेंगे?

आशा है आप प्रसन्न होंगे।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

East India Post Card

(18)

22.2.1900.

My dear Sridharjee,

I am sending you by Post registered my review of मेघदूत भाषा. Kindly go through it and favour me with your valuable suggestions.

Yours very sincerely
M. Prasad

Pandit Sridhar Pathak
Panni gali
Agra.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईस्ट इंडिया पोस्ट कार्ड

२२.२.१९००

प्रिय श्रीधर जी,

रजिस्टर्ड डाक द्वारा 'मेघदूत-भाषा' की अपनी समीक्षा भेज रहा हूँ। इसे देखकर अपने बहुमूल्य सुझाव भेजने की कृपा करें।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

पं० श्रीधर पाठक
पन्नी गली
आगरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(19)

Jhansi
24.2.1900

My dear Panditjee,

Please read the accompanying cutting from Girja Dutt's letter recd today. He perhaps thinks that I have not earnestly requested you to get him employed. I have sent your original letter to him-the letter in which you have so kindly said that you could send him as a Hindi master in 60/-. Girja Dutta was formerly in favour of the Educational Deptt. but he is not so now, for the reason that there are very meagre prospects in that Deptt.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२४.२.१६००

प्रिय पंडितजी,

इस पत्र के साथ संलग्न गिरजादत्त से प्राप्त आज के पत्र की कतरन कृपया पढ़ लें। शायद वह यह सोचता है कि उसे रोज़गार दिलाने के लिए मैंने आपसे गम्भीरता पूर्वक निवेदन नहीं किया है। मैंने उसे आपका मूल पत्र भेज दिया है, जिसमें आपने कृपा-पूर्वक यह लिखा था कि आप उसे साठ रुपए मासिक पर हिन्दी का अध्यापक नियुक्त करवाकर भिजवा सकते हैं। गिरजादत्त पहले शिक्षा विभाग के पक्ष में था परन्तु अब नहीं है, क्योंकि उस विभाग में उन्नति के अवसर बहुत कम हैं।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(20)

Jhansi
6.3.1900
Repld. 7.3.00

My dear Panditjee,

Your 2 cards to hand. Since yesterday I have reported sick; my right foot near the ankle is badly swollen. I can scarcely walk.

The Kalakankar people are very indifferent. Raja Saheb favourably commented upon my reviews of 3rd Reader and wrote to Director, because he requested me to use my influence in getting him elected by the Jhansi Local Board for seat in the provincial Council. Please keep this secret. The Hindi work is done by P. Sital Prasad and I was fortunate to get a reply from him to my letter about your Sarad. He wrote to me that your Sarad or the copies of the paper in which it has been printed was entirely destroyed by insects. I doubt this. He may have written this to avoid further trouble of copying the poem. So I don't think it will be of any use to write to him for the remaining 5 verses. He will never send them. But after what I have said if you desire that I should write I shall do so at once. Please let me know. It is a matter of only 5 verses now. I think you should translate them afresh.

In my review of ऋतु I have cited 3 examples from Sarad out of which I have quoted your translation in 2 cases. Please now send me your version of the 21st verse स्फुट कुमुद चितानां etc. Also please send your translation of the last but one verse viz. स्त्रीणां विहाय वदनेषु. This verse has not been translated by Lala Sahib, so I want to give your version in this case also. I am very glad you suggested to give your translation. This will be of great use to me.

Who is this Chandika Pd? I am not acquainted with him. You are short of 1st five verses. I give you the 1st and 3rd, see on reverse. The remaining 3 please translate.

Yours very sincerely
M. Prasad

काँस के फूल दुकूल खिले
अरविन्द में मुख-सुन्दरताई
बोलनि मत्त मरालन की
कल नूपुर केरि करै समताई

उत्तर दिया ७.३. | झाँसी ६.३.१९००

प्रिय पंडितजी,

आपके दो कार्ड मिले। मैं कल से बीमार हूँ। टखने के पास मेरा दाहिना पैर बुरी तरह सूज गया है। मैं चल भी नहीं सकता।

कालाकांकर वाले बहुत उदासीन हैं। राजा साहब[1] ने तीसरी रीडर पर मेरी समीक्षा के पक्ष में टिप्पणी की और निदेशक को लिख भी दिया है, कारण कि उन्होंने प्रांतीय कौंसिल में एक स्थान के लिए झाँसी 'लोकल-बोर्ड' द्वारा चुन लिए जाने के लिए अपना प्रभाव डालने के लिए मुझसे प्रार्थना की थी। कृपया इसे गोपनीय रखें। हिन्दी का काम पं० शीतल प्रसाद[2] करते हैं और आपके 'शरद' के विषय में अपने पत्र का उनसे उत्तर पाकर मै धन्य हूँ। उन्होंने मुझे लिखा है कि आपका 'शरद' अथवा उस पत्र की प्रतियाँ जिसमें वह छपी थीं को कीड़े-मकौड़ों ने बुरी तरह नष्ट कर दिया है। मुझे इस कथन पर संदेह है। हो सकता है कि कविता की प्रतिलिपि करने के झंझट को टालने के लिए उन्होंने ऐसा लिख दिया हो। अतः मैं शेष ५ पद्यों के लिए उन्हें लिखना निरर्थक समझता हूँ। वह उन्हें कदापि नहीं भेजेंगे। इसके बावजूद यदि आप चाहें तो मैं उन्हें तुरन्त लिख दूंगा। कृपया मुझे सूचित करें। अब केवल ५ पद्यों का प्रश्न है। मेरे विचार से आप इनका नए सिरे से अनुवाद कर डालें।

'ऋतु' की अपनी समीक्षा में मैंने 'शरद' से ३ उदाहरण दिए थे जिनमें आपके अनुवाद से मैंने दो स्थलों पर उद्धरण दिए हैं। अब, कृपया मुझे इक्कीसवें पद्य 'स्फुट कुमुद चितानां' आदि का अपना रूपांतर भेज दीजिए, साथ ही अंतिम से ठीक पहले वाला पद्य 'स्त्रीणां विहाय वदनेषु' का भी अनुवाद कृपया भेज दें। लाला साहब[3] ने इस पद्य का अनुवाद नहीं किया है। अतः यहां

---

1. श्री रामपाल सिंह, जिन्होंने कालाकांकर से हिन्दी में 'हिंदोस्थान' नामक पत्र निकाला था। विशेष जानकारी के लिए "हिंदी-कोविद-रत्नमाला" भाग" १, श्यामसुन्दरदास, इलाहाबाद १९०९, पृ० २८-३०.

2. इनका पूरा नाम था पं० शीतला प्रसाद उपाध्याय, पर वे सीतला प्रसाद लिखा करते थे। इसी 'हिंदोस्थान' के कार्यालय में काम करते थे।

3. लाला सीताराम, बी० ए०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सोहत धान पकेन की पाँति
सोई पतरे तन की सुघराई
या विधि रूप सिंगार किये
ऋतु सर्द नई दुलही सम आई
चंचल जो सफरी फरकैं
मनु मंजुल सी कटि किंकिनि डोरी
सेत विहंगन की सुठि पंगति,
राजति सुन्दर हार सी गोरी
तीर के देस विशाल नितम्ब
सुमन्द प्रवाह भई गति थोरी
सोहति या ऋतु में सरिता,
गज-गामिनि कामिनि सी रस बोरी

These are the 2 I have cited in my Review. At the time I committed them by heart. I selected them as the best of the lot.

M. P.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भी मैं आपके ही अनुवाद का सहारा लूँगा। आपने अपने अनुवाद उद्धृत करने का जो सुझाव दिया उससे मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। मेरे लिए यह बहुत उपयोगी होगा।

चंडिका प्रसाद कौन हैं ? मैं इन्हें नहीं जानता।

पहले ५ छंद आपके पास नहीं हैं-पहला और तीसरा मैं लिखे देता हूँ। पृष्ठ के पीछे देखिए^x। शेष तीन का कृपया अनुवाद कर डालें।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

^xकाँस के फूल दुकूल खिले ....
... .
ऋतु सर्द नई दुलही सम आई ।।१।।
'चंचल जो सफरी फरकैं.... ....
गज-गामिनि कामिनि सी रस बोरी ।।३।।[4]

इन दोनों को मैंने अपनी समीक्षा में उद्धृत किया है। मैंने इन्हें उसी समय कंठस्थ कर लिया था। सभी पद्यों में इन्हें श्रेष्ठतम मानकर मैंने चुना है।

म० प्र०

---

4. पूरी पंक्तियाँ मूल पत्र के अन्त में दी जा चुकी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Jhansi
(21) 8.3.1900

My dear Panditjee,

Yours. I am still laid up. Excuse my scribbling. I am writing in a lying down position.

The translation sent by you though good is not so nicely finished as that reproduced by me in my review. I therefore think I need not quote it. It will lessen the value of that already quoted. What is your opinion?

I have sent your Nava Vasant to a वैयाकरण this morning, since I could not go to see him myself. I shall write to you again about it. This P. Madhava Pd has also placed himself in communication with me. He wants poetry for his सुदर्शन. It was only this morning that I wrote to him to ask whether he knows anything about the so* 9.3.1900 (I could not proceed further with this letter yesterday. I do so today, I feel better now). so* called mistakes. Let me see what he says to me. I think there are no mistakes. However we must make sure before publishing the thing finally. I shall communicate to you the remarks of the Jhansi grammarian as soon as they reach me.

For Raghuvamsa with the English translation by Nandarjirkar please apply to Messrs. Shiralkar & Co, Booksellers and Publishers, Budhwar Peth, Poona, The translator is at Poona, so this firm is sure to have copies of Raghuvamsa. Please wait a week more for ऋतुसंहार from Radhabai Atmaram and Co. of Bombay. If you do not get it within this time order it also from Shiralkar. The translators name is Godboby. I do not know of any commentary on Goldsmith's Traveller nor does our office Supdt. Mr. Hopkins, who is a scholar of English. On return from Agra when I went to see you I read the Traveller and not being able to understand it in many places I enquired of a half a dozen people but no one could give any clue as to the existence of a commentary. I shall ask one or two persons more and write to you again. I have not got with

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
८.३.१९००

प्रिय श्रीधर जी,

आपका पत्र मिला। मैं अभी भी रोगग्रस्त हूँ। घसीट में लिखने के लिए क्षमा करें। लेटे-लेटे लिख रहा हूँ।

आपने जो अनुवाद भेजा है सुन्दर तो है परन्तु जैसा कि मैंने अपनी समीक्षा में उद्धृत किया था उसकी तुलना में इसमें वो निखार नहीं। अतः इसे उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं समझता हूँ। इसे उद्धृत करने पर पिछले उद्धरण का मूल्य कम हो जाएगा। आपकी क्या राय है?

आज प्रातः मैंने आपका 'नव-वसन्त' एक वैयाकरण के पास भिजवाया है क्योंकि मैं स्वयं उनसे मिलने न जा सका। उसके विषय में मैं आपको फिर कभी लिखूँगा। इन पंडित माधवप्रसाद ने मुझसे भी पत्राचार प्रारम्भ कर दिया है। वे 'सुदर्शन' के लिए कविताएँ चाहते हैं। आज प्रातःकाल ही मैंने उनको लिखा है कि वे तथाकथित अशुद्धियों के बारे में कुछ जानते भी हैं? x

(कल पत्र को इससे आगे नहीं लिख सका। आज लिख रहा हूँ। अब कुछ स्वस्थ हूँ।)

x देखता हूँ वे मुझसे क्या कहते हैं। मैं समझता हूँ कोई भी अशुद्धि नहीं है। फिर भी, प्रकाशन से पूर्व हमें आश्वस्त हो लेना चाहिए। झाँसी के वैयाकरण क्या कहते हैं यह पता लगते ही मैं आपको सूचित करूँगा।

नंदारजीरकर के अंग्रेज़ी अनुवाद से युक्त 'रघुवंश' के लिए कृपया मेसर्स 'शिरालकर एण्ड कम्पनी,' पुस्तक विक्रेता एवं प्रकाशक, बुधवार पेठ, पूना को लिखें। अनुवादक पूना में हैं अतः निश्चय ही इस फर्म के पास 'रघुवंश' की प्रतियाँ होंगी। बम्बई की राधाबाई आत्माराम एण्ड कम्पनी के 'ऋतुसंहार' के लिए कृपया एक सप्ताह और प्रतीक्षा कर लीजिए। यदि इस अवधि में न आए तो 'शिरालकर' को भी आर्डर भेज दें। अनुवादक का नाम गौडबॉबी है। गोल्डस्मिथ के 'ट्रैवलर' की किसी टीका के विषय में मुझे जानकारी नहीं। हमारे कार्यालय के निरीक्षक हौपकिन्स को भी, जो कि अंग्रेज़ी के विद्वान हैं इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं है। आगरे से लौटकर जब मैं आपसे मिलने गया था मैंने 'ट्रैवलर' को पढ़ा और कई स्थलों पर कुछ पल्ले न पड़ सकने के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

me my collection of Catalogues, they are in the office, but there are 2 good dictionaries, English-Sanskrit and vice versa. One by Prof. Wilson and the other by Aptey. Please obtain a copy of the Catalogue from Curator Govt. Central Book Depot, Bombay by sending one anna stamp and order the dictionary after you have consulted the Catalogue. I have none of these dictionaries.

I wrote to you a good deal about the सरस्वती (Journal) but that letter went astray. It was the same with which I enclosed the Kalakankar letter. Have you recd. any letter asking you to contribute to that magazine ? The proprietor is the Indian Press which as you know is very rich and I do not think we should, if asked throw away our labors and genius for nothing. What is your opinion ? The 5 Editor-Generals are the paid servants of Indian Press. Baboo Shyam Sundar the Secry. of the N. P. Sabha is after me to write a report for him on Nagari publicat-ions of the last year saying he has no time to do so himself. But he has ample time to edit सरस्वती. I have not yet finally replied to him.

Yours very sincerely

M. Prasad

कारण मैंने आधे दर्जन से अधिक व्यक्तियों से पूछ-तांछ की परन्तु एक भी किसी टीका के उपलब्ध होने के बारे में कोई सुराग नहीं दे सका। मैं एक-दो व्यक्तियों से और पूछकर आपको वापस लिखूँगा। मेरे पास सूचीपत्रों की निजी प्रतियाँ नहीं हैं, कार्यालय में पड़ी हैं; परन्तु अंग्रेज़ी-संस्कृत व संस्कृत-अंग्रेज़ी के दो अच्छे कोष हैं। एक प्रोफेसर विल्सन का और दूसरा आप्टे का है। कृपया अधीक्षक "गवर्नमेन्ट सेन्ट्रल बुक डिपो" बम्बई से सूचीपत्र की एक प्रति एक आने का टिकिट भेजकर मँगवा लीजिए। मेरे पास इनमें से एक भी कोष नहीं है।

मैंने 'सरस्वती' (पत्रिका) के सम्बन्ध में आपको बहुत कुछ लिखा था परन्तु वह इधर-उधर हो गया। इसीमें मैंने कालाकांकर का पत्र भी नत्थी कर रखा था। इस पत्रिका में कुछ लिखने के बारे में क्या आपके पास कोई पत्र आया है? जैसा कि आप जानते हैं इसके व्यवस्थापक 'इंडियन प्रेस' वाले बहुत मालदार हैं और मैं नहीं समझता वहाँ से निमंत्रण आने पर हम अपने परिश्रम और प्रतिभा को अकारण ज़ाया कर दें। पांचों प्रधान-सम्पादक 'इंडियन प्रेस' के वेतन भोगी कर्मचारी हैं। 'नागरी प्रचारिणी सभा' (ऐन०पी० सभा) के सचिव बाबू श्यामसुन्दर गत वर्ष के नागरी प्रकाशनों पर एक प्रतिवेदन लिखने के लिए मेरे पीछे पड़े हैं क्योंकि उनका कहना है कि उनके पास इस कार्य के लिए समय नहीं है। परन्तु, 'सरस्वती' के सम्पादन के लिए उनके पास पर्याप्त समय है! मैंने उनके पास अभी तक कोई निर्णयात्मक उत्तर नहीं भेजा है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(22)

Jhansi
12.3.1900

My dear Panditjee,

Your favour of the 11th I am, though better, still unable to walk and consequently have to keep away from the office.

I saw the 2nd number of the Sudarshana yesterday and I was about to write to you when I received yours this morning. What the editor has said of your हेमन्त is nothing but nonsense. I thought this Fyzabad fellow was your friend, at least an acquaintance. He should not have written in the fashion he did I am sure similar reception awaits me as regards my नैषध. Pt. Madhava Prasad very earnestly asked me to write some verses on the old ruins of Ayodhya and I have complied with his request. He then asked me whether I wished नैषध being reviewed in his magazine. In reply I said I was indifferent and that left the matter to his choice. He now tells me that he is going to notice it in the next issue. I am sure the review will be unfavourable for this man has beforehand told me that he does not agree with me in many matters in connection with this book but as the matter is delicate I cannot stop him from doing so. The essay on रत्नावली etc. is an outcome of my नैषध. The statements made therein are erroneous in many places. However, I am going to treat the remarks of these fellows with contempt.

Pt. Madhava Prasad writes to me that it was he who wrote to you about your वसन्त. You should publish it without hesitation; in the the meantime I will send you the opinion of the best grammarian of this place. He has not yet returned the copy of the Vasant that I sent him.

Pt. Madhava Pd. further writes that with the exception of राधाकृष्णदास the remaining 4 editors of the सरस्वती have a very shameful connection with the magazine. However we have nothing to do with it. Be as it may. I imagine they get pay from the Indian Press and it is why they want to get the Nagari Pracharni Sabha work done by others, for Saraswati does not allow them sufficient time for the other work. I have not yet finally replied to the letter from the N. P. Sabha

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

प्रिय श्रीधर जी, १२.३.१९००

आपका दि० ११ का कृपापत्र मिला। यद्यपि मैं अब पहले से तो स्वस्थ हूँ फिर भी चलने फिरने योग्य नहीं हूँ। इसी कारण कार्यालय भी नहीं जा रहा हूँ।

कल मैंने 'सुदर्शन' का द्वितीय अङ्क देखा और आपको लिखने ही वाला था कि आपका पत्र आज प्रातःकाल मिला। आपके 'हेमन्त' के सम्बन्ध में सम्पादक ने जो कहा है वह महज़ बकवास है। मैं समझता था कि ये फैज़ावादी[1] महाशय आपके मित्र हैं; कम से कम परिचित तो होंगे ही। उन्होंने जिस ढंग से लिखा है वैसा उन्हें नहीं लिखना चाहिए था। निश्चय ही मेरे 'नैषध' का भी ऐसा ही स्वागत होने को है। पंडित माधवप्रसाद ने बड़े उत्साह के साथ मुझसे अयोध्या के प्राचीन खंडहरों पर कुछ पद्य लिखने को कहा और मैंने उनकी बात मान ली है। इसके बाद उन्होंने पूछा कि क्या मैं अपने 'नैषध' की समीक्षा उनकी पत्रिका में निकलवाना चाहूँगा। उत्तर में मैंने लिखा कि इस सम्बन्ध में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं और यह विषय उनकी इच्छा पर ही छोड़ दिया। अब वे मुझसे कहते हैं कि अगले अङ्क में उसकी समीक्षा करेंगे। मुझे विश्वास है कि समीक्षा प्रतिकूल होगी क्योंकि इन्होंने मुझे पहले ही बतला दिया है कि इस पुस्तक के सम्बन्ध में अनेक बातों पर वे मुझसे सहमत नहीं है। चूँकि यह एक नाज़ुक विषय है, मैं उन्हें लिखने से रोक नहीं सकता। 'रत्नावली[2]' आदि पर लिखा गया लेख मेरे 'नैषध' से ही उद्भूत है। उसमें के कथन कई स्थानों पर भ्रान्तिमूलक हैं। खैर, मैं ऐसे व्यक्तियों की टिप्पणियों की अनदेखी कर दूँगा।

पंडित माधवप्रसाद ने मुझे लिखा है कि उन्होंने ही आपके 'वसन्त' के सम्बन्ध में आपको लिखा था। आपको बिना किसी झिझक के उसे प्रकाशित कर देना चाहिए; इस बीच मैं यहां के वैयाकरणों के विचार आपको भेज दूँगा। 'वसन्त' की जो प्रति मैंने उन्हें भेजी थी उसे अभी तक उन्होंने लौटाया नहीं है। पंडित माधवप्रसाद आगे लिखते हैं कि राधाकृष्ण दास को छोड़कर शेष चारों[3]

---

1. पं० माधवप्रसाद मिश्र। मूलतः ये भिवानी (हरियाना) के निवासी थे। फैज़ाबाद (उ०प्र०) के तत्कालीन रईस लाला बलदेवदास ने उन्हें फैज़ाबाद बुला लिया था। श्री देवकीनन्दन खत्री के अनुरोध पर उन्होंने २-३ वर्ष तक 'सुदर्शन' का सम्पादन किया। ३३-३४ वर्ष की आयु में ही मिश्रजी का स्वर्गवास हो गया था।

2. रत्नावली नाटिका—बालमुकुन्द गुप्त

3. उस समय 'सरस्वती' के सम्पादक मंडल के सदस्यों में श्री राधाकृष्ण दास के अलावा शेष चारों के नाम थे—बाबू कार्तिक प्रसाद खत्री, पंडित किशोरीलाल गोस्वामी, बाबू जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' और बाबू श्यामसुन्दरदास, बी० ए०। बालमुकुन्द जी गुप्त इसी कारण 'सरस्वती' को पांच भाइयों की बहिन बताकर चुटकी लेते थे। सन् १९०३ से 'सरस्वती' का सम्पादन द्विवेदीजी ने किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

about writing a report. If I find I have time enough to do that work I shall take it, otherwise, refuse it.

As I have rightly observed in my सम्पादकस्तव these editors of Hindi papers consider themselves master of every language and sciences. In the सुदर्शन there is everything. There is Mythology—there is Theology—there is Rhetoric—there is Fiction and what not. Such essays as on Holi are useless. The thing is that the editor appears to be ignorant of English. And did you like all that has been said about the sanctity of Ayodhya? I did not. Perhaps the editor wants to win over the orthodox society and thus increase the number of his subscribers.

Baboo Balmukund wanted me to write something on Holi. Of course I could not write anything in favour of it, so sent quite unwillingly a prose article headed किसने किसकी होली खेली ! This he did not like and returned it. Previous to this I had sent him a Sanscrit poem with translation headed मेघमाला प्रति चन्द्रकोक्ति. This he wrote to say he liked but returned this also afterwards. I therefore feel dissatisfied with him. He appears to be a man of very eccentric temper. An article on Plague (प्लेगस्तव राज) is the only writing from me which he has...... . I think I should also stop sending him further contribution. I have, however, to translate one or two cantos of कुमार more. These I will have to send him because the 1st canto has already appeared in his paper. He will probably see you after Holi on his way to his native place where he is to go shortly.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्पादकों का 'सरस्वती' पत्रिका से बड़ा लज्जास्पद सम्बन्ध है। जो भी हो, हमारा इस बात से कोई सरोकार नहीं। जो भी स्थिति है हुआ करे। मुझे ऐसा लगता है कि वे इंडियन प्रेस से वेतन पाते हैं और इसीलिए वे 'नागरी प्रचारिणी सभा' का काम दूसरों से करवाना चाहते हैं क्योंकि दूसरी बातों के लिए उन्हें 'सरस्वती' से पर्याप्त समय ही नहीं मिलता। विवरण लिखने के सम्बन्ध में मैंने 'नागरी प्रचारिणी सभा' से प्राप्त पत्र का निर्णीत उत्तर नहीं भेजा है। इस काम के लिए मेरे पास पर्याप्त समय होने पर ही इसे स्वीकार करूँगा, अन्यथा नहीं।

जैसा कि मैंने अपने 'सम्पादक स्तवः'[4] में उचित ही लिखा है, हिन्दी पत्रों के ये सम्पादकगण अपने को प्रत्येक भाषा और हर विज्ञान के अधिकारी समझते हैं। 'सुदर्शन' में सब कुछ रहता है–पुराण, शास्त्र, वेदान्त, अलंकार शास्त्र, उपन्यास और क्या कुछ नहीं है। 'होली' जैसे लेख निरर्थक हैं। बात यह है कि सम्पादक अंग्रेज़ी से अनभिज्ञ जान पड़ते हैं। अयोध्या की पवित्रता पर जो कुछ कहा गया है, क्या आपको पसन्द आया? मुझे तो कदापि नहीं। सम्भवतः सम्पादक महोदय समाज के पुरातन पंथियों को अपनी ओर आकृष्ट कर ग्राहकों की संख्या बढ़ाना चाहते हैं।

बाबू बालमुकुन्द मुझसे होली पर कुछ लिखवाना चाहते थे। निसंदेह मैं उसके पक्ष में तो कुछ लिख नहीं सकता था, अतः बेमन से "किसने किसकी होली खेली" शीर्षक से एक लेख भेज दिया। यह उन्हें रुचिकर नहीं लगा और उन्होंने वापस कर दिया। इससे पूर्व मैंने उन्हें "मेघमाला प्रति चन्द्रिकोक्तिः[5]" नाम से एक संस्कृत कविता भेजी थी। उत्तर में उन्होंने लिखा कि यह उन्हें पसन्द आई, परन्तु बाद में उन्होंने इसे भी लौटा दिया। अतः मैं इनसे असंतुष्ट हूँ। यह बेहद झक्की स्वभाव के व्यक्ति जान पड़ते हैं। प्लेग पर मेरे एक लेख 'प्लेगस्तवराज'[6] को ही केवल उन्होंने पसन्द किया है। सोचता हूँ आगे से उन्हें कुछ भी नहीं भेजना चाहिए। मुझे 'कुमार' के केवल एक या दो सर्गों का अनुवाद और करना है। यह तो मुझे उनको भेजने ही होंगे क्योंकि पहला सर्ग उनके पत्र में निकल चुका है। सम्भव है, वे होली बाद अपने जन्म स्थान को जाते समय (जहां वे निकट भविष्य में जाने को हैं) आपसे भेंट करेंगे।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

---

4. "समाचार-पत्र सम्पादकस्तवः", काव्य मञ्जूषा, भाग, १, पृ० ३१-३५
5. काव्य मञ्जूषा, भाग १, पृ० ७०—७७
6. भारत-मित्र, १९ मार्च १९००.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(23)

Jhansi
31.3.1900

My dear Panditjee,

Your favour of yesterday to hand. I have sent you a post card on the 29th and trust it duly reached you.

The hot season is really very troublesome. It is more so to me, for I lead the life of a villager here. I live in a small tiled house two miles away from the city. My tiny dwelling place is a source of trouble to me. It gives little protection from the scorching rays of the blazing sun. However, we must quietly bear the roughness of the weather. There is no help.

The Ayodhya fellows malicous review of your Hemant has very much displeased me. I have at his request, as I have told you already sent him a poem on the ruins of Ayodhya, but I never dreamt he was such a shallow-minded man. When his article in reply to yours, appeared in the Bharat Mittra I wrote to him a strong letter and he has admitted his fault tendering an apology for suspecting me to be the author of the article defending your Hemant. I hope you have dealt a fatal blow to his nonsensical arguments as regards his review. I have not even hinted that you are the writer of the article published in भा. मि.

I have seen the 2nd number of the Saraswati. I got it when. I wrote to the Indian Press asking them to enlist me as a subscriber. What has been said therein of अप्पय दीक्षित is all incorrect. I have exposed the inaccuracies and my paper will probably appear in the next issue of the Bharat Mittra. I do not think the Board of Editors of this magazine is grateful enough to edit the book. The object of the Indian Press and the editor is only to make money. The editors asked me to regularly contribute to this monthly magazine; for this service they said if I did not wish to pay the petty sum of Rs. 3/- being the subscription to the book they would send the same to me free. For this I have sent them a most unpleasent letter thanking the editors for the liberality and saying that I did not care to serve the Saraswati for Rs. 3/-. They want that I

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
३१.३.१९००

प्रिय पंडित जी,

आपका कल वाला कृपा पत्र मिला। मैंने २९ ता० को आपके नाम एक पोस्ट कार्ड भेजा था। विश्वास है कि आपको वह यथासमय मिल गया होगा।

गर्मी का मौसम वास्तव में बड़ा कष्टदायक है, मेरे लिए तो और भी अधिक, क्योंकि मैं यहाँ एक ग्रामीण का जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। शहर से दो मील दूर खपरैल के छोटे से मकान में मैं रहता हूँ। रहने का छोटा सा स्थान मेरे लिए कष्ट का कारण है। चमकते सूर्य की झुलसाने वाली किरणों से कोई बचाव नहीं है। फिर भी हमें मौसम की इस उग्रता को शांति से सहन करना होगा। कोई चारा नहीं है।

आपके 'हेमन्त' पर अयोध्या निवासी की द्वेषयुक्त समीक्षा ने मुझे बहुत खिन्न कर दिया है। जैसा कि मैं आपको बतला ही चुका हूँ उनकी प्रार्थना पर मैंने अयोध्या के खंडहरों पर एक कविता उन्हें भेजी थी परन्तु मुझे इसका स्वप्न में भी अनुमान न था कि उनमें इस क़दर का छिछोरापन है। प्रत्युत्तर में जब उनका लेख 'भारत-मित्र' में निकला तब मैंने उन्हें एक कड़ा पत्र लिखा और उन्होंने क्षमा याचना करते हुए अपनी भूल स्वीकार कर ली है। उनका अनुमान है कि आपके 'हेमन्त' के पक्ष में प्रकाशित लेख मैंने लिखा है। मुझे आशा है कि उनकी समीक्षा के बकवास भरे तर्कों पर आपने घातक प्रहार किया है। मैंने तो इसका संकेत तक नहीं किया कि 'भारत-मित्र' में छपे लेख के लेखक आप ही हैं।

मैंने 'सरस्वती' का दूसरा अङ्क देखा है। मुझे यह तब मिला जब मैंने ग्राहक बना लेने के लिए 'इंडियन प्रेस' को लिखा। उसमें अप्पय दीक्षित के लिए जो कुछ कहा गया है वह सब का सब ग़लत है। मैंने भूलें बतलाई हैं और सम्भव है कि 'भारत-मित्र' के आगामी अङ्क में मेरा लेख निकले। मैं नहीं समझता कि इस पत्रिका का सम्पादक-मंडल इस पुस्तक को सम्पादित करने की कृतज्ञता दिखलाएगा। 'इंडियन प्रेस' और सम्पादकों का उद्देश्य केवल पैसा बनाना है। (इस) मासिक पत्रिका के लिए नियमित रूप से लिखते रहने के लिए सम्पादकों ने मुझसे कहा हैं। वे कहते हैं कि इस सेवा के लिए यदि मैं पुस्तक (पत्रिका) के चन्दे की मामूली राशि तीन रुपए न देना चाहूँ तो वे मुझे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

should subscribe regularly and also pay the subscription. It is only in case I refuse to pay the subscription that they would send the magazine free. How liberal they are !

Of my review of Sitaram's works only one proof—8 pages—has yet been printed. It might take a year before the Press can finally print the book. No help.

I have noticed the style of सूरदास and written about a week ago to the Sabha ironically to say that if I have occasion to write for the Nagari Pracharni Patrika, सूरदास will be my model. Have received no reply to it.

As you recommended that I should take upon myself the writing of a report on the productions in Hindi last year, I have accepted the job on the condition that if the Sabha rejects my report without sufficient reason they must pay me Rs. 200/- for my labour. No reply about this also.

Bharat Jeewan did not even acknowledge receipt of नैषध चरित्र चर्चा. We should be thankful to the paper for the extension of his favour in acknowleding your books. They have their own novels to praise to the skies and perhaps think it a sin to do justice to the works of other people in whom they are not interested. We should treat the sayings and doings of such selfish people with contempt.

I am better now. I shall avail myself of the earliest opportunity to visit Agra and have the pleasure of your interview.

I have finished my version of the 2nd canto of Kumara Sambhava.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्रिका मुफ़्त ही भेज देंगे। इस पर मैंने एक बहुत कठोर पत्र लिखा है जिसमें मैंने सम्पादक की फ़ैयाज़ी के लिए धन्यवाद देते हुए यह लिखा है कि मुझे तीन रुपए के पीछे 'सरस्वती' की सेवा करने में कोई दिलचस्पी नहीं। वे चाहते हैं कि मै नियमित रूप से लिखता भी रहूँ और साथ-साथ चन्दा भी देता जाऊँ। यदि मैं चन्दा देने से इन्कार कर दूँ तभी ये लोग पत्रिका मुफ़्त में भेजेंगे। ये लोग कितने उदार हृदय हैं!

सीताराम की कृतियों पर मेरी समीक्षा का केवल एक अठपेजी प्रूफ़ अभी तक छपा है। प्रेस को पूरी पुस्तक छापने में, हो सकता है एक वर्ष लग जाए। कोई बस नहीं।

सूरदास की शैली को ध्यान में रखते हुए कोई एक सप्ताह पूर्व चुटकियाँ लेते हुए मैंने सभा को लिखा कि यदि मुझे 'नागरी-प्रचारिणी पत्रिका' के लिए लिखने का अवसर मिला तो सूरदास ही मेरा प्रतिमान होगा। इसका कोई उत्तर नहीं आया।

आपकी संस्तुति के अनुसार गत वर्ष की हिन्दी पुस्तकों पर एक विवरण लिखने का कार्य मैंने इस शर्त पर स्वीकार कर लिया है कि यदि सभा ने बिना पर्याप्त कारण के मेरे विवरण को अस्वीकार कर दिया तो उन्हें बतौर पारिश्रमिक के मुझे दो सौ रुपए देने होंगे। इसका भी कोई उत्तर नहीं।

'भारत-जीवन' ने 'नैषध चरित चर्चा' की पहुँच तक की सूचना नहीं दी। आपकी पुस्तकों की प्राप्ति स्वीकार करने की कृपा के लिए हमें इस पत्र का कृतज्ञ होना चाहिए। आकाश तक ऊँचा उठाने के लिए उनके पास अपने स्वयं के उपन्यास हैं और जिन लोगों में उन्हें कोई रुचि नहीं उनकी पुस्तकों के साथ न्याय करना वे पाप समझते हैं। ऐसे ख़ुदगर्ज़ लोगों की कथनी और करनी को हमें घृणा की दृष्टि से देखना चाहिए।

अब मैं पहले से अच्छा हूँ। आगरा आकर आपसे भेंट करने के आनन्द लाभ का मुझे जैसे ही अवसर मिलेगा, मैं उसे हाथ से नहीं जाने दूँगा।

'कुमार-सम्भव' के द्वितीय सर्ग के रूपान्तर का कार्य मैंने पूरा कर लिया है।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(24)

Jhansi
26.4.1900

My dear Panditjee,

Your post card of yesterday. The Editor Sahib of Sudarshan appears to have got more offended with me than with you over the Hemant business, so much so that he has not even sent me a copy of the last issue of Sudarshan. Do please send me your copy and I will return it after perusing my poem on Ayodhya.

About a week ago Baboo Balmukund sent me a letter from Guriani saying that he would return to Calcutta and Agra in a few days hence and that he would let me know the date of his arrival at Agra. I have not heard from him since then.

I was thinking of coming to Agra on Sunday next but an obstacle has come across my way. The G. I. P. and I. M. Rly. will shortly be amalgamated and there is every probability our office will be removed to Bombay. So there is a commotion amongst the officers and subordinates all along. We are putting everything in order so that we may be able to remove ourselves on as short a notice as possible. On Sunday also I have to work. However, I shall try to come to see you as soon as I find opportunity to do so. I might come on Sunday after next. If Babu Balmukund sees you there please tell him I could not come for the reason given herein.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२६.४.१६००

प्रिय पंडितजी,

आपका कल वाला पोस्टकार्ड मिला। 'सुदर्शन' के सम्पादक साहब 'हेमन्त' वाले मामले में आपसे ज्यादा मुझसे अप्रसन्न हो गए मालूम पड़ते हैं, इस सीमा तक कि उन्होंने 'सुदर्शन' के पिछले अङ्क की एक भी प्रति मुझे नहीं भेजी। कृपया अवश्य ही अपनी प्रति भेज दीजिए। 'अयोध्या' पर लिखी अपनी कविता देखकर उसे मैं वापस लौटा दूँगा।

कोई एक सप्ताह पूर्व बाबू बालमुकुन्द ने 'गुरियानी' से मुझे एक पत्र भेजा था। लिखा है कि कुछ ही दिनों बाद वे कलकत्ता और आगरा वापस आने वाले हैं और आगरा पहुँचने की तिथि वे मुझे सूचित कर देंगे। इसके आगे मुझे उनसे कोई सूचना नहीं मिली है।

अगले इतवार को मैं आगरा जाने की सोच रहा था। परन्तु एक अड़चन पैदा हो गई है। जी०आई०पी०[1] और आई०एम० रेलवे[2] शीघ्र ही एक कर दी जावेंगी जिससे हमारे कार्यालय के बम्बई चले जाने की पूरी सम्भावना है। इस कारण समस्त अधिकारियों और अधीनस्थ कर्मचारियों में खलबली मची हुई है। सब चीजों को हम जमा रहे हैं ताकि कम से कम समय की सूचना पर ही हम लोग यहाँ से प्रस्थान कर सकें। इतवार को भी मुझे काम करना पड़ता है। फिर भी, अवसर पाते ही मैं आपसे मिलने का प्रयत्न करूँगा। मैं अगले रविवार के बाद वाले रविवार को आ सकता हूँ। यदि बाबू बालमुकुन्द आपके पास आएँ तो कृपया उनसे कह दें कि इस कारण से मैं नहीं आ सका।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

---

1. ग्रेट इंडियन पैनिनसुला रेलवे
2. इंडियन मिडलैंड रेलवे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(25)

Jhansi

4.5.1900

My dear Panditjee,

Your of the 3rd. I have sent you a Post card yesterday.

About 2 years ago I intended to insure my life with the Oriental Life Assurance Company of Bombay but on further considerations I dropped the matter. I have no children so I thought it was useless to secure a policy.

I think Oriental is the best Company. Two persons in my office hold policies in the same Company and speak of in favourable terms of it. The Dy. Traffic Manager Mr. Rumboll is also a policy holder in the Oriental. I think you should insure your life in this Company. I got their Prospectus, forms etc. and will send them to you on hearing further that you require them. As regards literary men Jhansi is too poor. The Station Master, Jhansi Mr. Dunbar, holds the best edition of Britanica. I think same as yours and offers it for Rs. 300/- only but no purchaser! If I go to Bombay I shall do all I can to secure a purchaser for your set. The revolving rack with the books in it is an honour to your room. Why are you tired of it then?

Although we are in readiness to go to Bombay on the shortest notice possible no official orders have come yet. The Railway journal published in England recd. by the last mail says another Company is being formed to take up the working of the G.I.P.R. May it be so. In that case we shall not be required to go to Bombay. I was in Bombay for 3 years. I do not at all like the place. I am born a villager and hence dislike such busy towns as Bombay and Calcutta are.

If Baboo Balmukund comes on Sunday the 13th instant I might be able to run to Agra by mail on Saturday but I am not sure whether I shall be able to do so. Translating others poetry is a troublesome task. I however, intend to translate the first 7 cantos of the Kumar; the remainder are not recognized to be from the pen of Kalidas. They are taken to be an addition by some later Pandit. My brain is very weak. I feel this often. So unless I am in a very good health I doubt whether I shall be able to continue translations.

Hoping you are doing well.

Yours very sincerely

M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
४.५.१९००

प्रिय पंडितजी,

आपका दि० ३ का पत्र मिला। कल ही मैंने आपके नाम एक पोस्ट कार्ड भेजा है।

कोई दो वर्ष पूर्व मैंने बम्बई की 'ओरियन्टल जीवन बीमा कंपनी' में अपना जीवन बीमा करवाने की सोची थी परन्तु बाद में विचार त्याग दिया। मेरे कोई बाल-बच्चे नहीं हैं अतः मैंने पौलिसी लेना निरर्थक समझा।

मेरी राय में ओरियन्टल कंपनी सर्वश्रेष्ठ है। मेरे कार्यालय के दो व्यक्ति इसी कंपनी की पौलिसी लिए हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। 'डिप्टी ट्राफिक मैनेजर' मिस्टर रमबौल ने भी ओरियन्टल की पौलिसी ले रखी है। मैं सोचता हूँ आप भी इसी कंपनी में अपना जीवन बीमा करा लें। मुझे कंपनी का परिचय पत्र व आवेदन पत्र आदि मिले हैं जिन्हें मैं यदि आपको उनकी आवश्यकता हो, तो आपके पास भेज दूँगा।

साहित्यिकों के मामले में झाँसी बहुत दरिद्र है। झाँसी के स्टेशन मास्टर मिस्टर डन्बर के पास ब्रिटेनिका का सर्वश्रेष्ठ संस्करण है। मुझे लगता है यही संस्करण आपके पास भी है। वे केवल ३०० रुपए में उसे देना चाहते हैं परन्तु कोई ग्राहक नहीं! यदि मैं बम्बई गया तो आपके सेट के लिए कोई ग्राहक ढूंढने का पूरा प्रयत्न करूँगा। घूमती हुई रैक में लगी पुस्तकें आपके कक्ष की शोभा हैं तो फिर आप इनसे उकता क्यों गए हैं?

यद्यपि हम लोग सूचना मिलते ही बम्बई जाने को तैयार बैठे हैं परन्तु अभी तक कोई सरकारी आदेश नहीं मिला है। पिछली डाक से प्राप्त इङ्गलैंड से प्रकाशित रेलवे जरनल में लिखा है कि जी० आई० पी० रेलवे का कार्य संभालने के लिए एक और कंपनी बनाई जावेगी। चलो, ऐसा ही सही। उस अवस्था में हमें बम्बई नहीं जाना पड़ेगा। तीन वर्ष तक मैं बम्बई में रहा। मुझे वह जगह कतई पसन्द नहीं। मैं जन्म से ग्रामीण हूँ और इस कारण बम्बई व कलकत्ता जैसे व्यस्त नगरों को पसन्द नहीं करता हूँ।

यदि रविवार दि० १३ को बाबू बालमुकुन्द आये तो शायद शनिवार को मेल द्वारा मैं भी आगरा पहुँच जाऊँ परन्तु निश्चित नहीं कि यह संभव हो भी सकेगा। दूसरों के काव्य का अनुवाद करना बड़े झंझट का काम है। फिर भी मैं 'कुमार' के प्रथम सात सर्गों का अनुवाद करने की सोच रहा हूँ-शेष सर्ग प्रामाणिक रूप से कालिदास के नहीं माने जाते हैं। उन्हें बाद के किसी पंडित द्वारा जोड़ा गया माना जाता है। मेरा मस्तिष्क बहुत कमजोर है। मुझे प्रायः ऐसा अहसास होता है। जब तक कि पूरी तरह स्वस्थ न हो जाऊँ मुझे संदेह है कि यह अनुवाद कार्य चालू रख भी सकूँगा?

आशा है आप प्रसन्न होंगे।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(26)

Jhansi
20.5.1900

My dear Panditjee,

Your favour of yesterday. Please let me know if you will be at Agra on Sunday next.

The Head master, High School here tells me that a Professor in some College at Madras has published an annotated edition of the Traveller. I am endeavouring to find out who he is and where the book can be had and shall write to you again if I get any further information about it.

No, I do not want the cutting that I sent you.

I am of the opinion that dedication serves no useful purpose in India. But if you have made up your mind to dedicate Manovinoda to Pt. Bal Krishan, you may do so.

I read in the last issue of the Bangbasi that the Hindi Pradip has, of late, been writing reviews of the old Sanscrit poems. I therefore wrote to Pt. Bal Krishan to send me by V.P.P. all such numbers of the magazine in which these reviews appeared but he has not been good enough to send them all to me. I shall return them to you when I have done with them.

I do not know whether L. Balmukund returned to Calcutta or not nor do I know where our friend P. Madhava Pd. is. The manager of the Sudarshana Baboo Devkinandan intreated me very earnestly to send him for publication in the Sudarshana a poem on Nagari which I have done yesterday.

The Vidya Pracharni Sabha, Jeypor is getting my 4 poems on Nagari printed together in a book form for the purpose of distribution. It is being printed at Allahabad.

Since I commenced writing books I think I would have hardly sold books worth Rs. 10/- ! I generally give free to anyone who asks for them. I have no publishers to sell my books nor have I ever advertised . But you can arrange with the Rajputa Press for a sale of yours. I see no harm even in advertising.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२०.५.१६००

प्रिय पंडित जी,

आपका कल वाला कृपापत्र मिला। कृपया सूचित करें कि क्या अगले रविवार को आप आगरे में ही होंगे।

यहाँ के हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक ने मुझे बताया है कि मद्रास के किसी कालेज के प्रोफेसर ने 'ट्रैवलर' का सटीक संस्करण प्रकाशित किया है। मैं यह पता लगाने का प्रयत्न कर रहा हूँ कि यह व्यक्ति कौन है और यह पुस्तक कहाँ प्राप्त हो सकेगी। इस प्रसङ्ग में कोई और सूचना मिली तो लिखूँगा।

जो कतरन मैंने आपको भेजी थी उसकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है।

मेरी राय में भारत में 'समर्पण' किसी उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता है। परन्तु यदि आपने पंडित बालकृष्ण[1] को 'मनोविनोद' समर्पित करने का मानस बना लिया है तब तो भले ही उन्हें समर्पित कीजिए।

बंगवासी[2] के पिछले अङ्क में मैंने पढ़ा है कि इधर 'हिन्दी-प्रदीप' वाले प्राचीन संस्कृत काव्यों की समालोचना निकाल रहे हैं। अतः मैंने पंडित बालकृष्ण को लिखा है कि वी० पी० द्वारा पत्रिका के वे सभी अङ्क मुझे भेज दें जिनमें ये समालोचनाएं प्रकाशित हुई हैं। उन्होंने कोई भी अङ्क नहीं भेजा है। यदि आप उसके ग्राहक हों और उसमें इस प्रकार के लेख निकले हों तो कृपया वे सब अङ्क मेरे पास भेज दीजिए। उनको देखकर मैं लौटा दूँगा।

मुझे पता नहीं कि लाला बालमुकुन्द वापस कलकत्ते पहुँच गए अथवा नहीं और न ही मुझे यह ज्ञात है कि हमारे मित्रवर पंडित माधवप्रसाद इन दिनों कहाँ हैं। 'सुदर्शन' के व्यवस्थापक बाबू देवकीनंदन ने बड़े अनुरोध से 'सुदर्शन' में प्रकाशनार्थ नागरी पर मुझसे एक कविता माँगी थी जिसे मैंने कल लिख डाली

1. पं० बालकृष्ण भट्ट
2. पं० अमृतलाल चक्रवर्ती का 'हिन्दी बङ्गवासी' पत्र।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Do you get Sanscrit Chandrika from Kolhapur, a monthly magazine. If not, I think you should get it. It is the only Sanscrit periodical in India worth having.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

है। जयपुर की 'विद्या प्रचारिणी सभा'[3] नागरी पर मेरी चार कविताओं को वितरण के उद्देश्य से पुस्तकाकार छपवा रही है। पुस्तक इलाहाबाद में छप रही है।

जबसे मैंने पुस्तकें लिखना प्रारम्भ किया है बमुश्किल दस रुपये तक कि मैं बेच सका हूँ। जब कोई माँगता है मैं उसे मुफ़्त दे देता हूँ। मेरी पुस्तकों को बेचने के लिए मेरे पास कोई प्रकाशक नहीं है और न ही मैंने कभी उनका विज्ञापन निकलवाया। पर आप अपनी पुस्तकों की बिक्री के लिए 'राजपूत प्रेस' से व्यवस्था करवा सकते हैं। विज्ञापन करने में मुझे कोई हानि नहीं दीखती।

कोल्हापुर की मासिक पत्रिका 'संस्कृत-चंद्रिका' क्या आपके पास आती है? यदि नहीं तो मेरी राय में आपको मँगानी चाहिए। भारतवर्ष में मँगाने योग्य यही एक मात्र संस्कृत पत्रिका है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

---

3. इस सभा का परिचय देते हुए जयपुर के प्रसिद्ध हिन्दी विद्वान पं० गोपाल नारायण जी बहुरा ने अपने पत्र दि० २२.४.१९७८ में मुझे लिखा था कि "विद्या प्रचारिणी सभा" या "नागरी भवन संस्था" स्व० पं० चन्द्रधर शर्मा गुलेरी और उनके मित्र जवाहरलाल जैन "मिस्टर जैन वैद्य" आदि ने संस्थापित की थी। पं० सोमदेव गुलेरी इसके मन्त्री थे। "जैन वैद्य" जी के प्रयत्नों से महावीर प्रसाद द्विवेदीजी को यहां से सहायता चुपचाप दी जाती थी, शायद ३२ रुपए मासिक। इसका कोई अभिलेख तो नहीं मिलता परन्तु वृद्धवाक्य प्रमाण हैं.....जैन वैद्य जी की सिफ़ारिश पर ही द्विवेदीजी का महत्व महाराजा माधोसिंह ने स्वीकारा और चुपचाप सहायता भेज देते थे"। इन्होंने "कमल मोहिनी और भँवरसिंह" नामक एक उपन्यास भी लिखा था। वह छपा भी। जैन वैद्यजी के पिता श्री नेमिचन्द कपड़द्वारा में मुलाजिम थे और द्विवेदीजी को यह सहायता इसी महकमें से दी जाती थी। कपड़द्वारा के दर्जी मनजी उस्ता को इस आर्थिक सहायता की जानकारी न थी और उन्होंने सवाई माधोसिहजी से शिकायत कर दी। सुनते ही महाराजा ने उन्हें बड़ी फटकार लगाई थी। इन्हीं मिस्टर जैन वैद्य ने "काव्य मञ्जूषा" भाग १ शीर्षक से द्विवेदीजी की स्फुट कविताओं का संग्रह भी छपवाया था जो हरिप्रकाश और तारा यंत्रालय, बनारस से १९०३ ई० में मुद्रित हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(27)

Jhansi
31.5.1900

My dear Panditjee,

Your 2 cards and a letter. Thanks for your allowing me to keep the numbers of the Hindi Pradip. I have returned 8 volumes of the Pradip–15th to 22nd, also खिलौना with Babu Dalchand of this office. Please let me know if recd.

Herein please find a Railway receipt for a parcel and acknowledgment receipt. I have sent by Railway for the sake of economy. In the parcel you will find :

(1) Your manuscripts.
(2) My misc. poems.
(3) My misc. prose articles, containing among other things an account of आशु कवि अयोध्यानाथ.
(4) 8 numbers of Sanscrit Chandrika.
(5) One copy of देवीस्तुतिशतक.
(6) शिशुपाल वध. the 8th canto of which is in प्रहर्षिणी better than the one contained in किरात.

It is not incumbent on you to do as the Editor of Bharat Mittra wishes you to do. If you can conveniently send further instalments of the Traveller, do so, but pray do not make haste, for doing so might mar the beauty of the composition. It is no doubt very encouraging to find that you like my translation of Kumar, but my own opinion is that it is much inferior to your Hermit.

I possess a copy of the old edition of your Hermit and in it the reading as regards पुरवां and प्रेम is correct. However, in the new edition (my own copy) I have made the latter correction.

I thank you for writing to Girja Dutta. Let me know if he sent you a reply and if so, what he said.

I want to take rest now, for a month at least, When rains set in I will commence translating the 4th canto of Kumar, for the

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
३१.५.१६००

प्रिय पंडितजी,

आपके दो कार्ड और एक पत्र मिले। 'हिन्दी-प्रदीप' के अङ्कों को रखने की अनुमति देने के लिए धन्यवाद। मैंने १५ से २२ तक की जिल्दें और 'खिलौना' इस कार्यालय के बाबू डालचन्द के साथ वापस कर दी हैं। मिल गई हों तो कृपया सूचित करें।

इस पत्र के साथ रेलवे पार्सल की एक रसीद और पहुँच की सूचना-पत्र आपको प्राप्त होंगे। किफ़ायत की दृष्टि से मैंने रेल द्वारा भेजी हैं। पार्सल में आपको निम्नलिखित सामग्री मिलेगी।

१, आपकी पाण्डुलिपियाँ।
२. मेरी स्फुट कविताएँ
३. मेरे विविध गद्य लेख जिनमें अन्य चीज़ों के अतिरिक्त आशुकवि अयोध्यानाथ का भी विवरण है।
४. 'संस्कृत चंद्रिका' की आठ जिल्दें।
५. 'देवीस्तुति शतक' की एक प्रति
६. 'शिशुपाल वध' जिसका आठवाँ सर्ग प्रहर्षिणी में है जो कि 'किरात' वाले से भी अच्छा है।

आपके लिए यह कोई बंदिश नहीं कि आप 'भारत-मित्र' के संपादक की इच्छानुसार काम करें। यदि आप सुविधा से 'ट्रैवलर' की अगली क़िस्त भेज सकें तो भेज दें परन्तु निवेदन है कि जल्दी न करें क्योंकि ऐसा करने से रचना का सौन्दर्य मारे जाने की सम्भावना है। यह बात वास्तव में उत्साहवर्द्धक है कि आपने मेरे 'कुमार' का अनुवाद पसन्द किया परन्तु मेरे विचार में वह आपके 'हरमिट' जितना अच्छा नहीं है।

आपके 'हरमिट' के प्राचीन संस्करण की एक प्रति मेरे पास है। उसमें पुरवां और प्रेम का प्रयोग उचित है। फिर भी मैंने नए संस्करण वाली अपनी प्रति में परवर्ती संशोधन कर लिया है।

गिरजादत्त को पत्र लिखने के लिए आपका आभारी हूँ। यदि उसने आपको उत्तर भेजा हो तो मुझे सूचित कीजिएगा कि उसने क्या लिखा है?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

1st श्लोक I will test both एला and लावनी and see which suits better and which it is easy to compose. I will then decide which to select and which not.

I reached Jhansi all right. Hoping you are doing well.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अब मैं कम से कम एक मास तक विश्राम करना चाहता हूँ। वर्षा प्रारम्भ होने पर मैं 'कुमार' के चौथे सर्ग का अनुवाद प्रारम्भ करूँगा। पहले श्लोक के लिए मैं 'एला' और 'लावनी' दोनों का प्रयोग करके देखूँगा कि कौन सा अधिक फबता है और सुगमता से लिखा जा सकेगा। तभी मैं यह निर्णय करूँगा कि उनमें से किसे अपनाऊँ और किसे नहीं। मैं सकुशल झाँसी पहुँच गया। आशा है कि आप प्रसन्न होंगे।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

East India Post Card

(28)

Jhansi
17.6.1900

My dear Panditjee,

Thanks for your letter of the 15th. The vomiting was due to terrible heat and disagreeable taste of the medicine which I took that day—I took 2 days rest again.

I feel better now and propose going to office tomorrow. My parents are too old. It will be a sort of punishment to ask them to come here during this season I have taken 10 days leave from the 25th and have arranged as best as possible for my transport from the Rly. Station Bindki Road to my native village. There are no good वैद्य's here. The Doctor of Sur & Niogi's Medical Hall is a friend of mine. He treats me and I am satisfied with his treatment. I am much obliged to you for (your) very sympathetic letter.

Yours very sincerely
M. Prasad

Pandit Sridhar Pathak
Panni gali
Agra.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१७.६.१६००

प्रिय पंडितजी,

आपके दिनांक १५ के पत्र के लिए धन्यवाद। वमन का कारण भीषण गर्मी और वह बदज़ायक़ा दवा थी जो मैंने उस दिन ली थी। मैंने वापस दो दिन तक विश्राम किया।

अब मैं पहले की अपेक्षा स्वस्थ हूँ और कल कार्यालय जाने की सोचता हूँ। मेरे माता-पिता बहुत वृद्ध हैं। इस मौसम में उन्हें यहाँ बुलाना उन्हें एक प्रकार से दंड देना होगा। मैंने दि० २५ से दस रोज़ का अवकाश ले लिया है और जितना बन पड़ा है 'बिंदकी रोड' रेलवे स्टेशन से अपने पैतृक गाँव तक सवारी का अच्छा प्रबन्ध कर लिया है। यहाँ अच्छे वैद्य नहीं हैं। 'सूर और नियोगी' दवाख़ाने के चिकित्सक मेरे मित्र हैं। वे मेरा इलाज करते हैं और मैं उनके इलाज से संतुष्ट हूँ। आपके सहानुभूतिपूर्ण पत्र के लिए मैं आपका अति आभारी हूँ।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

पंडित श्रीधर पाठक
पन्नी गली
आगरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(29)

Merchant Press
Railganj,
Cawnpore.
30.6.1900

My dear Panditjee,

Fever having shattered my constitution and there being no sign of its leaving me, I became somewhat alarmed and took 2 months sick leave on half pay. My friend Baboo Sitaram of the Merchant Press has removed me to Cawnpore. I am more comfortable here. Fever has left me but its attendant complaints, want of appetite, weakness etc. are still present. I am carefully treated here by two Doctors both of them being my friends. I came here about a week ago. I shall write to you again when I feel better. I could not go to my native place to take part in the द्विरागमन ceremony of my niece. No rains here even. The heat is terrible. I hope you are getting on well.

Yours very sincerely
Mahabir Pd.
(Jhansi)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मरचेन्ट प्रेस
रेलगंज
कानपुर
३०.६.१६००.

प्रिय पंडितजी,

ज्वर ने मेरे शरीर को तोड़ दिया है और उसके विदा होने के कोई लक्षण न दीखने के कारण मैं थोड़ा घबरा गया था। अतः आधे वेतन पर दो महीने की बीमारी की छुट्टी ली है। मरचेन्ट प्रेस,[1] के मेरे मित्र बाबू सीताराम मुझे कानपुर ले आए हैं। यहाँ मैं अधिक आराम में हूँ। ज्वर तो उतर गया है परंतु सहयोगी शिकायतें-भूख न लगना, कमज़ोरी आदि अब भी यथावत् हैं। मेरे परिचित दो चिकित्सकों द्वारा सावधानी से मेरा उपचार हो रहा है। कोई एक सप्ताह पूर्व मैं यहाँ आया था। स्वस्थ होने पर आपको फिर लिखूँगा। अपनी भानजी के द्विरागमन संस्कार में सम्मिलित होने के लिए मैं अपने घर भी नहीं जा सका।

यहाँ भी वर्षा नहीं हुई है। भीषण गर्मी है। विश्वास है कि आप सानन्द हैं।

आपका अति विश्वस्त
महाबीर प्रसाद
(झांसी)

---

1. कानपुर स्थित एक प्रेस का नाम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Jhansi
18.8.1900

(30)

Repld.
19.8.1900

My dear Panditjee,

Yours of the 16th to hand. I was about an hour in the Labri Press. During this time I recited no less than 12 verses on different subjects as occasion arose but the fellow (Madhava Pd) remained mute. He did not let slip from his lips even one single verse. I now know fully what he is about. He said, there should be नित्य सन्धि in अखंड+उदरे. Truly ! He does not know it is अखंडे+उदरे. Neither did I tell him so. I only said the grammar is correct. He raised another objection. I forgot what it was. I told him to write in some papers or to you direct. If he wrote in any paper he will get his dues as he did in the case of गुनवन्त हेमन्त. I did not purposely give the correct explanation. I said to myself let him write and thus let people know his folly.

He has written all sort of nonsense in his magazine in connection with my book. Pt. Ambica Datta Vyas told me that I should keep quiet as he did when his Bihari Bihar was criticised. But I think I should write something to clear myself. I am sorry your children are ill. Yes, in some respects it is good to have no children, but in other it is not so. However man must remain contented with what he is.

I like सावित्री. It is no doubt a sweet name. What about your Traveller. Have you stopped your translation.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१८.८.१९००

उत्तर दिया
१९.८.००

प्रिय पंडितजी,

आपका १६ ता० का पत्र मिला। लाहरी प्रेस में मैं लगभग एक घन्टे रहा। इस अवधि में मैंने कम से कम बारह बार अनेक विषयों पर यथासमय छंद पाठ किया परन्तु ये महाशय (माधवप्रसाद) चुप्पी साधे रहे। अपनी ज़बान से उन्होंने एक भी छंद नहीं निकाला। अब मैं ताड़ गया हूँ कि ये किस फ़िराक़ में हैं। वे बोले कि अखंड+उदरे में नित्य सन्धि होनी चाहिए। सचमुच! उन्हें यह ज्ञात नहीं कि वस्तुतः यह अखंडे+उदरे है। मैंने यह बात उन्हें बतलाई नहीं और केवल यही कहा कि व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध है। उन्होंने दूसरी आपत्ति उठाई। मुझे वह स्मरण नहीं। मैंने उनसे कहा कि वे कुछ समाचार-पत्रों में अथवा सीधे आपको लिखें। यदि उन्होंने किसी पत्र में लिखा तो उन्हें 'गुनवन्त-हेमन्त'[1] की तरह लिखे का प्रसाद मिल जायगा। मैंने जानबूझ कर उनको सही बात नहीं बतलाई और मन-ही-मन सोचा कि इन्हें लिख लेने दो ताकि लोगों को इनके अज्ञान का पता लग जाएगा।

मेरी पुस्तक के विषय में उन्होंने अपनी पत्रिका में दुनियाभर की बकवास लिखी है। पंडित अंबिकादत्त व्यास[2] ने मुझे बतलाया है कि जिस प्रकार वे अपने 'बिहारी-विहार'[3] की आलोचना पर चुप्पी साध गए थे मुझे भी उसी प्रकार मौन रहना चाहिए। उनका कथन है कि पंडित माधवप्रसाद मेरी बराबरी के नहीं अतः मुझे उनके लिखे को नज़रन्दाज़ कर देना चाहिए। परन्तु मेरा विचार है कि मुझे अपनी सफ़ाई में कुछ लिखना ही चाहिए। यह जानकर दुःख हुआ कि आपके बच्चे बीमार हैं। हाँ, कुछ मायनों में बाल-बच्चों का न होना अच्छा है; परन्तु कुछ मायनों में अच्छा नहीं भी है, परन्तु मनुष्य को जो कुछ है उसी पर संतोष करना चाहिए।

---

1. लेखक पं० श्रीधर पाठक, मनोविनोद, पृ० ७२—७३
2. पटना कालिज में संस्कृत के अध्यापक थे।
3. प्रकाशित "साहित्य नवनीत" संकलनकर्त्ता अंबिकादत्त व्यास, चन्द्रप्रभा यंत्रालय, काशी, १८९९ ई०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

The one copy of मनोविनोद which you gave me has been taken by Baboo Kashi Prasad of Mirzapur. Please send me only one more. I will ask for more if I require.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुझे सावित्री (नाम) पसन्द है। निसंदेह यह नाम सुन्दर है। आपके 'ट्रैवलर' का क्या हुआ ? क्या आपने अपना अनुवाद बन्द कर दिया है ?

'मनोविनोद' की जो प्रति आपने मुझे दी थी उसे मिर्जापुर के बाबू काशीप्रसाद ने ले ली है। कृपया मुझे केवल एक प्रति और भेज दीजिए। यदि आवश्यकता हुई तो आपसे और माँग लूँगा।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(31) Jhansi
20.8.1900

My dear Panditjee,

Here is a Rly. parcel receipt. Please send your chaprasi to get the bundle. It contains सत्यामृत प्रवाह. P. Madhav Mohan's book on Nagari and the remaining numbers of the Hindi Pradipa.

I wrote a preface to the reviews of Lata Sitaram's Kalidasa. I recollect having appended it to my review of Raghuvamsa. Did you see and read the preface with the Review I sent you sometime ago ? I do not find it now. The review is with me but not the Preface. Please see if it is left behind there.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२०.८.१६००

प्रिय पंडितजी,

ये रही रेलवे पार्सल की एक रसीद। कृपया अपने चपरासी को भेज बंडल मँगवा लें। इसमें 'सत्यामृत प्रवाह', नागरी पर पंडित माधवमोहन की पुस्तक तथा 'हिन्दी-प्रदीप' के शेष अङ्क हैं।

लाला सीताराम लिखित कालिदास की समालोचनाओं पर एक भूमिका मैंने लिखी है। मुझे स्मरण है कि मैंने 'रघुवंश' की अपनी समालोचना के साथ उन्हें जोड़ दिया था। क्या आपने उस समालोचना के साथ भूमिका देखी और पढ़ी है जो मैंने कुछ समय पूर्व आपको भेजी थी? अब वह मुझे मिल नहीं रही है। समालोचना तो मेरे पास है, परन्तु भूमिका नहीं है। कृपया निगाह कर लें, कहीं वहीं तो नहीं रह गई?

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(32)

Jhansi
26.8.1900

My dear Panditjee,

Yours of the 24th. No, no, never think of chucking up your job simply because an insignificant fellow is troublesome to you. I am sure the Kerani must be in the wrong and that you will be able to convince your Sahib of this. Your post is pensionable. Stick to it until you are entitled to pension.

I have ordered a..... for you. You will get a V.P. from Janardan......Bombay. I......places. I have not seen......but I have......In it a portion of your Hermit is printed. P. Ambika Datta has given your name and thanked you for the permission you gave him to publish that piece.

If you find time, please write a short reply to Sudarshan's chattering and send it to some paper for publication. I am collecting material. As soon as ready I shall write a detailed reply but it will take sometime before the article will be ready. Kindly add to your article......or something to that effect which may serve as a hint that I would write a reply.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२६.८.१९००

प्रिय पंडितजी,

आपका २४ का पत्र मिला। ना! ना! एक साधारण से व्यक्ति से खिन्न हो अपनी नौकरी छोड़ने की क़तई न सोचें। मुझे विश्वास है कि यह 'किरानी'[1] ग़लती पर होगा और इस बात के लिए आप अपने साहब को आश्वस्त कर लेंगे। आपको अपने पद की पेन्शन मिलेगी। जब तक आप पेन्शन के हक़दार न हो जावें अपने पद पर बने रहिए।

आपके लिए मैंने....का आर्डर भेज दिया है। आपके पास जनार्दन[2].... बंबई से वी०पी० आवेगी।...मेंने...देखी[3] तो नहीं पर आपके 'एकान्तवासी योगी' का कुछ अंश छपा है। पंडित अंबिकादत्त ने आपका नामोल्लेख कर इस अंश को छापने की अनुमति देने के लिए आपको धन्यवाद दिया है। यदि आपके पास अवकाश हो तो 'सुदर्शन' की टें-टें पर एक छोटा सा उत्तर तैयार कर किसी पत्र को प्रकाशनार्थ भेज दें। मैं सामग्री जुटा रहा हूँ। जैसे ही यह पूरी हो जावेगी मैं एक विस्तृत उत्तर लिखूँगा, परन्तु इसके पूरा होने में थोड़ा समय लगेगा। कृपया अपने लेख में....कुछ ऐसी भनक डाल दें जिससे ज्ञात हो सके कि (मेरा उत्तर) भी आने को है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्र० द्विवेदी

---

1. युरेशियन क्लार्क
2. पुस्तक विक्रेता
3. साहित्य-नवनीत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(33)

Jhansi
27.8.1900

My dear Panditjee,

Your letter of the 25th. I have already written to you yesterday about पुन्ना. You must have received my letter by this time. I have also ordered a धातु रूपावली for you.

In my article I am going to prove that Sri Harsh was a poet of 12th century and that Dr. Buhler is correct in placing him there. The article on Ratnavali has been written by Madho Prasad. He gives his brothers name but he himself is the writer. That article is not finished yet and therefore I cannot deal with the question in an exhaustive manner. However, I will answer Sudarshan's charges as far as I can.

If you write anything in answer to Sudarshan's review of my book you might confine your observations to the kind of poetry Sri Harsha has written in the Naishadha and prove that the critic (Sudarshana) has failed to judge the merits of the Kavya.

I thank you for taking so much interest in this matter.

Yours very sincerely
M. Prasad.

In my article I am going to defend you as regard सुदर्शन's remarks made in the last number of that paper in connection with my book.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२७.८.१९००

प्रिय पंडितजी,

आपका २५ ता० का पत्र मिला । 'पुत्र' के सम्बन्ध में मैं कल ही आपको लिख चुका हूँ । इस समय तक आपको मेरा पत्र मिल गया होगा । आपके लिए 'धातु रूपावली' मैंने मँगवाई है ।

अपने लेख में मैं यह सिद्ध करने वाला हूँ कि श्रीहर्ष १२ वीं शताब्दी के कवि थे और यह कि डाक्टर ब्हूलर का यह काल निर्धारण सही है । 'रत्नावली' पर लेख माघोप्रसाद ने ही लिखा है जबकि लेख पर नाम उन्होंने अपने भाई का दिया है, लेकिन वास्तविक लेखक वे स्वयं हैं । वह लेख अभी तक पूरा नहीं हुआ है । अतः मैं इस प्रश्न पर विस्तार से कुछ न कह सकूँगा । फिर भी जहां तक बन पड़ेगा मै 'सुदर्शन' के आरोपों का उत्तर दूँगा ।

मेरी पुस्तक पर 'सुदर्शन' की समालोचना के उत्तर में यदि आप कुछ लिखें तो आप अपने विचार उस प्रकार की कविता तक सीमित रख सकते हैं जैसी की श्री हर्ष ने नैषध में लिखी है और यह सिद्ध कर सकते हैं कि आलोचक (सुदर्शन) काव्य के गुणों को परखने में असफल रहा ।

इस विषय में इतनी रुचि लेने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ ।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

पत्र के पिछले अङ्क में मेरी पुस्तक के सम्बन्ध में सुदर्शन ने जो टिप्पणी की थी उस पर अपने एक लेख में मै आपका पक्ष लूँगा ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(34)

Jhansi
20.9.1900

My dear Panditjee,

Your letter and post card both to hand. I am sorry you are still down with dysentry.

Baboo Balmukund has written to me also for the same purpose. As you are aware a change has taken place in me as regards religious matters. I do not like to write anything on that subject against my conscience. However, I am going to extract some verses from my old Devi Sataka and send the same to him. Let him publish or not publish, I don't care. I was pleased to read Sakal Narain's letter about सावित्री स्तम्भ. What have you written about it? I thought you would not write until M.P. said anything against it. If Baboo Balmukund objects to print your contributions against Sudarshana and Lala Sitaram's works there are other papers which would do so. If he is a just and truthful man he should have no objection. Please let me know what reply you received from Bharat Mittra.

Has the copy of Naishadha purchased by you been printed in Bombay or is it a Calcutta book?

Yes, I saw Rai Devi Prasad and learnt all about the correspondence that has passed between him and yourself. In translating Sanscrit poems this is his first effort, so his version cannot of course claim to be without faults. He is however making improvements upon it. I have asked him to endeavour to make it as sweet and sonorous as possible. He did not at all feel offended at your remarks. He is a very good gentleman of good literary tastes. He, like myself, is an admirer of you.

About Sitaram's translations what does भाषा signify ? He calls all his works—I mean translations भाषा, such as रघुवंश भाषा, मेघदूत भाषा etc. It must mean translation. In fact he has said nothing against such an interpretation in his prefaces of his previous translation. If his works are not translations what are they then ? They are not certainly abridgements. The originals are in Sanskrit and these are in भाषा. Whatever Sanskrit contains भाषा must also contain. The difference should be only in the garb. In the absence of any

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२०.९.१९००

प्रिय पंडितजी,

आपका पत्र और पोस्टकार्ड दोनों मिले। मुझे खेद है कि आप अभी तक अतिसार से पीड़ित हैं।

उसी उद्देश्य से बाबू बालमुकुन्द ने मुझे भी लिखा था। जैसा कि आप जानते हैं धार्मिक मामलों में मेरे में परिवर्तन आ गया है। मैं अपने अन्तःकरण के विरुद्ध इस विषय में कुछ नहीं लिखना चाहता हूँ। फिर भी मैं अपने पुराने 'देवी-शतक' से कुछ छन्द निकालकर उन्हें भेजे देता हूँ। छापें या न छापें, मेरी बला से !

'सावित्री स्तम्भ'[1] के बारे में सकलनारायण[2] का पत्र पढ़कर मुझे प्रसन्नता

1-2 'सावित्री स्तम्भ' शीर्षक से 'भारत-मित्र' ने एक कालम शुरु किया था जिसका नामकरण पं० श्रीधर जी पाठक ने किया था। 'भारत-मित्र' (९.७.१९००) के अङ्क में इस स्तम्भ के अन्तर्गत कुछ पद्यमय चुटकुले मिलते हैं। इसी पत्र के १७.९.१९०० वाले अङ्क में पं० सकलनारायण पांडे, चौक आरा, शाहाबाद ने 'सावित्री-स्तम्भ' पर एक लम्बा-चौड़ा शोधपूर्ण लेख लिख डाला जिसको समाप्त करते हुए वे लिखते हैं कि "जहाँ पर कविता रूप लेख हो उसे 'सावित्री स्तम्भ' कहते हैं।" इस लेख को पढ़कर दिल्ली के एक पं० विश्वम्भर देव शर्मा आपे से बाहर हो गए और इसी 'भारत-मित्र' के अङ्क दिनांक १.१०.१९०० में उन्होंने अपनी ज्ञान गंगा बहा दी। आखिरकार, पाठकजी को भी 'सावित्री-स्तम्भ' से अपना आशय खोलना पड़ा उद्यपि उन्होंने अपनी बात प्रारम्भ करते हुए पहले यह लिखा कि "गत 'भारत-मित्र' में जो विश्वम्भर दयालु अथवा विश्वम्भर देव का पत्र छपा है उसकी अशिष्टता हमें उत्तर देने से रोकती है।" इसके बाद उन्होंने सात बिन्दुओं में अपना अभिप्राय प्रस्तुत किया। उन्हीं के शब्दों में :-

"सावित्री का शब्दार्थ क्या है ? 'उत्पन्न करने वाली–' यदि उत्पन्न करने वाली शक्ति का ग्रहण इस शब्द से कर लिया जाय तो कुछ क्षति है ? उत्पन्न करने वाली शक्ति का सम्बन्ध विश्व मात्र से हो सकता है। ऐसी जो कोई शक्ति है उस शक्ति को समर्पित जो स्तम्भ (समाचार पत्र का विभाग) वह 'सावित्री-स्तम्भ'– यह अर्थ अवगत हुआ। वह स्तम्भ उच्च श्रेणी के उत्तम लेखों के लिए नियत किया गया था। हमें कोई अनुपयुक्तता उक्त नाम में नहीं दृष्टि आती।
मुख्य कारण उक्त नाम व्यवहार करने का यह है कि हमें सावित्री शब्द बहुत प्रिय है।
यदि 'भारत-मित्र' को अथवा उसके पाठकों को उक्त शब्द से चिढ़ हो तो आगे से उसे व्यवहार में न लावें" आदि आदि। "भारत-मित्र", २२.१०.१९००

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(34)

Jhansi
20.9.1900

My dear Panditjee,

Your letter and post card both to hand. I am sorry you are still down with dysentry.

Baboo Balmukund has written to me also for the same purpose. As you are aware a change has taken place in me as regards religious matters. I do not like to write anything on that subject against my conscience. However, I am going to extract some verses from my old Devi Sataka and send the same to him. Let him publish or not publish, I don't care. I was pleased to read Sakal Narain's letter about सावित्री स्तम्भ. What have you written about it? I thought you would not write until M.P. said anything against it. If Baboo Balmukund objects to print your contributions against Sudarshana and Lala Sitaram's works there are other papers which would do so. If he is a just and truthful man he should have no objection. Please let me know what reply you received from Bharat Mittra.

Has the copy of Naishadha purchased by you been printed in Bombay or is it a Calcutta book?

Yes, I saw Rai Devi Prasad and learnt all about the correspondence that has passed between him and yourself. In translating Sanscrit poems this is his first effort, so his version cannot of course claim to be without faults. He is however making improvements upon it. I have asked him to endeavour to make it as sweet and sonorous as possible. He did not at all feel offended at your remarks. He is a very good gentleman of good literary tastes. He, like myself, is an admirer of you.

About Sitaram's translations what does भाषा signify ? He calls all his works—I mean translations भाषा, such as रघुवंश भाषा, मेघदूत भाषा etc. It must mean translation. In fact he has said nothing against such an interpretation in his prefaces of his previous translation. If his works are not translations what are they then ? They are not certainly abridgements. The originals are in Sanskrit and these are in भाषा. Whatever Sanskrit contains भाषा must also contain. The difference should be only in the garb. In the absence of any

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२०.६.१६००

प्रिय पंडितजी,

आपका पत्र और पोस्टकार्ड दोनों मिले। मुझे खेद है कि आप अभी तक अतिसार से पीड़ित हैं।

उसी उद्देश्य से बाबू बालमुकुन्द ने मुझे भी लिखा था। जैसा कि आप जानते हैं धार्मिक मामलों में मेरे में परिवर्तन आ गया है। मैं अपने अन्तःकरण के विरुद्ध इस विषय में कुछ नहीं लिखना चाहता हूँ। फिर भी मैं अपने पुराने 'देवी-शतक' से कुछ छन्द निकालकर उन्हें भेजे देता हूँ। छापें या न छापें, मेरी बला से !

'सावित्री स्तम्भ'[1] के बारे में सकलनारायण[2] का पत्र पढ़कर मुझे प्रसन्नता

1-2 'सावित्री स्तम्भ' शीर्षक से 'भारत-मित्र' ने एक कालम शुरु किया था जिसका नामकरण पं० श्रीधर जी पाठक ने किया था। 'भारत-मित्र' (९.७.१९००) के अङ्क में इस स्तम्भ के अन्तर्गत कुछ पद्यमय चुटकुले मिलते हैं। इसी पत्र के १७.९.१९०० वाले अङ्क में पं० सकलनारायण पांडे, चौक आरा, शाहाबाद ने 'सावित्री-स्तम्भ' पर एक लम्बा-चौड़ा शोधपूर्ण लेख लिख डाला जिसको समाप्त करते हुए वे लिखते हैं कि "जहाँ पर कविता रूप लेख हो उसे 'सावित्री स्तम्भ' कहते हैं।" इस लेख को पढ़कर दिल्ली के एक पं० विश्वम्भर देव शर्मा आपे से बाहर हो गए और इसी 'भारत-मित्र' के अङ्क दिनांक १.१०.१९०० में उन्होंने अपनी ज्ञान गंगा बहा दी। आखिरकार, पाठकजी को भी 'सावित्री-स्तम्भ' से अपना आशय खोलना पड़ा उद्यपि उन्होंने अपनी बात प्रारम्भ करते हुए पहले यह लिखा कि "गत 'भारत-मित्र' में जो विश्वम्भर दयालु अथवा विश्वम्भर देव का पत्र छपा है उसकी अशिष्टता हमें उत्तर देने से रोकती है।" इसके बाद उन्होंने सात बिन्दुओं में अपना अभिप्राय प्रस्तुत किया। उन्हीं के शब्दों में :-

"सावित्री का शब्दार्थ क्या है ? 'उत्पन्न करने वाली–' यदि उत्पन्न करने वाली शक्ति का ग्रहण इस शब्द से कर लिया जाय तो कुछ क्षति है ? उत्पन्न करने वाली शक्ति का सम्बन्ध विश्व मात्र से हो सकता है। ऐसी जो कोई शक्ति है उस शक्ति को समर्पित जो स्तम्भ (समाचार पत्र का विभाग) वह 'सावित्री-स्तम्भ'– यह अर्थ अवगत हुआ। वह स्तम्भ उच्च श्रेणी के उत्तम लेखों के लिए नियत किया गया था। हमें कोई अनुपयुक्तता उक्त नाम में नहीं दृष्टि आती।

मुख्य कारण उक्त नाम व्यवहार करने का यह है कि हमें सावित्री शब्द बहुत प्रिय है।

यदि 'भारत-मित्र' को अथवा उसके पाठकों को उक्त शब्द से चिढ़ हो तो आगे से उसे व्यवहार में न लावें" आदि आदि। "भारत-मित्र", २२.१०.१९००

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

statement to the contrary no other meaning can be assigned to his भाषा. This is my opinion. Perhaps Lala Sahib takes me to be his unequal. This may be the reason of his not endeavouring to refute the charges brought by me against him. The case is somewhat different with you. So, if you will write anything in connection with his versions he would perhaps reply and thus say what his भाषा means.

I have send my reply to Sudarshan for publication to the सरस्वती but have received no acknowledgement. I am doubtful whether they would publish it.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुई । आपने उसके संबंध में क्या लिखा है ? मैंने सोचा था कि आप कुछ न लिखेंगे जब तक म० प्र० (माधवप्रसाद) उसके विरुद्ध कुछ न कहें । यदि बाबू बालमुकुन्द 'सुदर्शन' के विरुद्ध आपके लेख व लाला सीताराम की कृतियों को छापने में आपत्ति करते हैं, तो दूसरे पत्र हैं जो उन्हें छाप सकेंगे । यदि वे निष्पक्ष और खरे हैं तो उन्हें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए । कृपया मुझे बतलाइयेगा कि 'भारत-मित्र' से आपको क्या उत्तर मिला ? 'नैषध' की जो प्रति आपने खरीदी है वह बम्बई में मुद्रित हुई या कलकत्ते वाली प्रति है ?

हाँ, मैंने राय देवीप्रसाद[3] से भेंट की और आपके व उनके मध्य हुए पत्राचार के विषय में सब कुछ ज्ञात हुआ । संस्कृत काव्यों का अनुवाद करने का यह उनका प्रथम प्रयास है अतः उनका अनुवाद सर्वथा दोषरहित होने का दावा नहीं कर सकता है । फिर भी, वे उसमें सुधार कर रहे हैं । मैंने उनसे कहा है कि वे उसे ललित और मधुर बनाने का प्रयत्न करें । उन्होंने आपके कथनों का तनिक भी बुरा नहीं माना है । वे बड़े शरीफ़ और अच्छी साहित्यिक रुचि के व्यक्ति हैं । मेरी तरह वे भी आपके प्रशंसक हैं ।

सीताराम के अनुवाद में 'भाषा' से क्या तात्पर्य है—वे अपनी समस्त रचनाओं को, मेरा तात्पर्य अनुवादों को 'भाषा' कहते हैं जैसे रघुवंश–भाषा, मेघदूत–भाषा आदि । 'भाषा' से उनका अभिप्राय अनुवाद से ही होगा । वस्तुतः भाषा के इस अर्थ में प्रयुक्त किए जाने के सम्बन्ध में उन्होंने पिछले अनुवादों की भूमिका में कुछ नहीं कहा है । यदि उनकी कृतियाँ अनुवाद नहीं तो और क्या हैं? निश्चय ही वे मूल का संक्षिप्तीकरण नहीं है । मूल तो संस्कृत में है और ये सब 'भाषा' में । जो संस्कृत में है वही 'भाषा' में भी होना चाहिए । अन्तर केवल ऊपरी पहिनावे का है । इस बात के विरुद्ध कोई उल्लेख न होने से 'भाषा' का और कोई अर्थ नहीं लगाया जा सकता है । ऐसी मेरी धारणा है । सम्भवतः लाला साहब मुझे अपनी जोड़ी का नहीं समझते हैं और हो सकता है कि इसी कारण मेरे द्वारा उनके विरुद्ध लगाए गए आरोपों का खंडन करने का वे प्रयत्न ही नहीं करते हैं । आपकी बात और है । अतः यदि आप उनके अनुवादों के सम्बन्ध में कुछ लिखें तो सम्भव है कि वे 'भाषा' के अपने प्रयोग को स्पष्ट करते हुए उत्तर दें ।

'सरस्वती' में छपने को मैंने 'सुदर्शन' को अपना उत्तर भेज दिया है परन्तु उसके प्राप्ति की कोई सूचना नहीं—मुझे उसके छपने में सन्देह है ।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

---

3. कानपुर निवासी राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' अथवा राय साहब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

East India Post Card

Jhansi

(35) 5.11.1900

My dear Pathakjee,

Long since I have heard nothing from you. I hope you are getting on well.

My paper regarding नैषध चरित and सुदर्शन is being printed in the next number of the Saraswatee.

I find Rai Sahib is still discussing with you about certain words and phrases in his own and Raja L.S. poems. I do'nt know when will this come to a close? The sooner the better.

Yours very sincerely
M. Prasad

Pandit Sridhar Pathak
Panni gali
Agra.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईस्ट इंडिया पोस्ट कार्ड

झाँसी

५-११-१९००

प्रिय पाठकजी,

बहुत समय से आपका कोई समाचार नहीं मिला। विश्वास है आप अच्छी तरह होंगे।

'नैषध चरित' और 'सुदर्शन' के सम्बन्ध में मेरा लेख 'सरस्वती' के अगले अङ्क में छप रहा है।

मुझे पता है कि अपनी और राजा ल.स.[1] की कविताओं के कुछेक शब्दों और वाक्यांशों के सम्बन्ध में राय साहब अब भी आपसे बहस कर रहे हैं। मैं नहीं जानता कि इसका अन्त कब होगा। जितनी जल्दी हो उतना ही अच्छा है।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

पं० श्रीधर पाठक
पन्नी गली,
आगरा

---

1. लक्ष्मणसिंह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(36) Jhansi
12.11.1900

My dear Panditjee,

Your letter of the 9th and 10th duly to hand. I had been to Cawnpore on duty on Saturday last and there availed the opportunity of seeing Rai Sahib. I had a long discussion on various points in connection with his trans. of the........ and the correspondence which have been going on between him and yourself. He did not send me all the letters that went to him from you but yesterday I saw a number of them with him. The correspondence is well worth preservation. If not already done so please do not destroy Rai Sahib's letters. They might be required for publications sometime afterwards. I have asked Rai Sahib to preserve your letters.

I went to Rai Sahib with a friend and we both dissuaded him from further discussion with you. He has promised to do as we desired but said he would write one more letter defending his rendering of the 2 verses of the Uttar Megha. We, however, told him it was useless to dilate on the matter. If he did not mean to profit by your suggestions, further correspondence is unnecessary.

You have much improved your two कवित्त's. They are very pleasing to the ear now. नभलौं उंचाई है is a very good rendering of अभ्रंलिहाग्रा :

It is, I believe a mistake in Bhattjee's remarks to say that your Deserted V. has been printed by Lazarus. Perhaps he referred to the first edition, I think. He should have said that the book has been printed by Lazarus and can be had from you. You might ask him what he means. I will send you the latest issue of the Chandrika tomorrow. Why should not the editor send you the book now that you have paid the subscription. I do not——.

Rai Sahib is of my age-36 years. He has some landed property. I don't think he is rich. चन्द्रोदय does not seem to be Kishori Lal's production, although I have not seen such a piece in Bengali, but there is every likelihood of its being borrowed from that language.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१२.११.१६००

प्रिय पंडितजी,

आपके दि० ६ व १० के पत्र मिले।

गत शनिवार को मैं सरकारी काम से कानपुर गया था और वहाँ राय साहब से भेंट करने का अवसर मिला। उनके....के अनुवाद तथा आपके और उनके बीच चल रहे पत्राचार के अनेक मुद्दों पर खुलकर बातें हुईं। उनके नाम आपके द्वारा प्रेषित सभी पत्रों को तो उन्होंने मेरे पास भेजा नहीं था परन्तु कल मैंने उनके पास कई पत्र देखे। यह पत्राचार सर्वथा संरक्षणीय है। यदि राय साहब के पत्र अभी आपके पास हों तो कृपया उन्हें नष्ट न करें। कुछ समय पश्चात् इनके प्रकाशन की आवश्यकता पड़ सकती है। आपके पत्रों को भी सुरक्षित रखने के लिए मैंने राय साहब को कह दिया है।

राय साहब के पास मैं अपने एक मित्र के साथ गया था और हम दोनों ने उन्हें आपसे आगे विवाद न करने के लिए रोका है। हमारी बात वे मान गए हैं परन्तु यह भी कहा है कि वे अपने 'उत्तर-मेघ' के दो छंदों के अनुवाद के समर्थन में एक पत्र और लिखेंगे। किन्तु हम लोगों ने उनसे कह दिया है कि इस विषय को और आगे खींचना निरर्थक है। यदि वे आपके सुझावों से लाभ नहीं उठाना चाहते हैं तो आगे लिखा-पढ़ी करना व्यर्थ है। आपने अपने दोनों कवित्तों में बड़ा सुधार कर दिया है। अब वे कर्णप्रिय बन गए हैं। "नभलौं उंचाई है," "अभ्रंलिहाग्राः" का बड़ा सुन्दर अनुवाद है।

मेरी समझ में भट्टजी का यह कथन सही नहीं कि आपका 'डेज़र्टिड विलेज' लेज़ारस[1] से छपा है। हो सकता है उन्होंने प्रथम संस्करण का उल्लेख किया हो। मेरी समझ में उसका केवल एक ही संस्करण निकला है। उन्हें यह कहना चाहिए था कि इस पुस्तक को लेज़ारस ने छापा है जिसको आपसे प्राप्त किया जा सकता है। उनके आशय के बारे में आप उनसे पूछ सकते हैं।

कल आपके पास 'चन्द्रिका' का नवीनतम अङ्क भेजूँगा। जब आपने चन्दा भेज ही दिया है फिर तो कोई कारण नहीं कि सम्पादक आपके पास पुस्तक न भेजें।

---

1. इस पुस्तक के १८८९ ई० वाले संस्करण के मुखपृष्ठ के अनुसार-Printed by E.J. Lazarus & Co. at the Medical Hall Press. Benares.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Kishori Lal is a peculiar fellow. He does not know a word of English but in his two articles in the last issue of the N. P. Patrika you must have seen he has copiously quoted from English authors! Of the चन्द्रोदय some lines read sweetly enough but a majority of them I do not like. You will perhaps say I do not like any piece which appears in the Saraswatee. Well, such is truly the case——Sahib's Kirat is the worst among the——4 cantos so far printed. I had sent my rendering of a portion of the Ist canto of Kirat to the Saraswatee people. Let me see if they print it.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राय साहब मेरी उम्र (३६ वर्ष) के हैं। उनके पास कुछ भू-सम्पत्ति है। मेरी समझ में वे मालदार नहीं ।

'चन्द्रोदय', किशोरीलाल की रचना नहीं प्रतीत होती है। यद्यपि मैंने बंगला में ऐसी कोई कृति नहीं देखी है, परन्तु पूरी सम्भावना है कि उसे बंगला से ग्रहण किया गया हो। किशोरीलाल एक विचित्र व्यक्ति है। वे अंग्रेज़ी का एक शब्द भी नहीं जानते हैं परन्तु आपने देखा होगा कि नागरी प्रचारिणी पत्रिका के पिछले अङ्क में अपने दो लेखों में उन्होंने अंग्रेज़ी लेखकों को खुलकर उद्धृत किया है। 'चन्द्रोदय' की कुछ पंक्तियों में तो पर्याप्त मिठास है परन्तु उनमें से अधिकांश मुझे नहीं भाती हैं। हो सकता है कि आप यह समझें कि 'सरस्वती' में प्रकाशित कोई चीज़ मुझे रुचिकर नहीं लगती है। ठीक है-वास्तविकता भी यही है....(राय) साहब का 'किरात' अब तक के मुद्रित चारों सर्गों में सबसे लचर है। 'किरात' के प्रथम सर्ग के कुछ भाग का अपना अनुवाद मैंने 'सरस्वती' वालों को भेजा है। देखता हूँ कि छापते हैं या नहीं ?

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(37) Jhansi
18.11.1900

My dear Panditjee,

Your letter of yesterday reached me this morning. I perfectly agree with you in your opinion as regards literary criticism. Literary criticism is certainly useful if the critic is the master of the subject criticised by him. As I wrote to you before I consider P. Shyam Behari unfit for that work, this being the case there is every likelihood his observations would not be correct. If such happens to be the case it would be incumbent on you to respond to his assertions by publishing a rejoinder. लवकुश चरित्र is, as you say, a masterpiece of plebeian poetry. Sometime ago pressure was brought on me from more than one quarters (to) publish a review of it. (I) declined to do so, for I did not think it worthwhile wasting my time in writing anything in connection with such trash as ल. कु. च. is.

When will you write your promised article on Lala Sitaram's translation? The Saraswati people have accepted by verses being a translation of a portion of the 1st canto of किरात. I have also contributed a short paper to the Saraswati on the life of Late Mr. Aptey the author of the Sanskrit-English dictionary and vice-versa.

Rai Devi Prasad has not returned me your letter but has acknowledged receipt of it and sent a short reply to me. I wish you would make no further reference about it.

Yours very sincerely
M. Prasad

P. S Where would you have your (X-mas) vacation? I don't think I would get it.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

१८-११-१६००

प्रिय पंडितजी,

आपका कल वाला पत्र आज प्रातः मुझे मिला।

साहित्यिक समालोचना के सम्बन्ध में मैं आपकी राय से पूरी तरह सहमत हूँ। जिस विषय पर समालोचक लिखे उस पर उसका पूर्ण अधिकार होने की स्थिति में ही साहित्यिक समालोचना वस्तुतः उपयोगी हो सकती है। जैसा कि मैंने आपको पहले लिखा था मैं पंडित श्याम बिहारी[1] को इस काम के योग्य नहीं समझता। ऐसी अवस्था में उनकी लिखी आलोचना में भूल होने की पूरी सम्भावना रहती है। यदि ऐसा हुआ तो उनकी दृढोक्तियों का प्रत्युत्तर देना आपके लिए आवश्यक हो जाएगा।

जैसा कि आपने कहा है 'लव कुश चरित्र'[2] घटिया काव्य का बहुत अच्छा उदाहरण है। कुछ समय पूर्व कई तरफ़ से मुझ पर उसकी समीक्षा प्रकाशित करने के लिए दबाव डाला गया था। मैंने ऐसा करने से इन्कार कर दिया क्योंकि मैंने "लव कुश चरित्र" जैसी निकृष्ट रचना पर कुछ भी लिखने में अपना समय नष्ट करना उचित नहीं समझा।

लाला सीताराम के अनुवाद पर लेख लिखने का आपने जो वायदा किया था, उसे कब पूरा करेंगे? "किरात" के पहले सर्ग के एक भाग के अनुवाद से सम्बन्धित मेरे पद्यों को 'सरस्वती' वालों ने स्वीकार कर लिया है। संस्कृत-अंग्रेजी व अंग्रेज़ी-संस्कृत कोष के लेखक स्व. श्री आप्टे के जीवन पर भी मैंने एक छोटा सा लेख 'सरस्वती' में प्रकाशनार्थ भेजा है।

राय देवीप्रसाद ने आपका पत्र मुझे वापस नहीं किया है परन्तु उसकी पहुँच की सूचना और एक छोटा-सा उत्तर मुझे भेजा है। मैं चाहता हूँ कि आप आगे इस बात की कोई चर्चा न करें।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

आप बड़े दिन की छुट्टियाँ कहाँ बिताएँगे? मुझे ये छुट्टियाँ मिलने की कोई आशा नहीं है।

---

1. पं० श्यामबिहारी मिश्र।
2. पं० श्यामबिहारी मिश्र का एक काव्य ग्रंथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Jhansi

(38) 22.11.1900

My dear Panditjee,

Your letter of 20th. Here is the letter from Rai Sahib which you want to see. I would not have sent it to you had you not asked me for it. I wrote to Rai Sahib accordingly and said that if you asked me for the letter I would send it, and added that this procedure would not put a stop to the discussion. So, if you feel inclined to send a reply to Rai Sahib to his letter kindly send it direct. I wish you would ignore the letter altogether and make an end of this unpleasent correspondence.

The editor of the Bharat Mittra appears to be a man of no principles whatever. He is eccentric and even insolent in his actions. I have written to him about his remarks on Naishadha Charit—I mean my reply to Sudarshana. He is goading the Sudarshana now to publish a reply to my article printed in the Saraswatee. Well let him do so.

The editor has my translation of Bacon with him. He wished to print and give it as an उपहार to the readers of the Bharat Mittra. No sooner however the Bangbasi intended its desire to give महाभारत than this man changed his original plan and notified that he would give भागवत as उपहार. Now he has asked me (this he did about 3 weeks ago) to publish a few essays from my book and if they are liked by the public, he has promised he would print the book at his cost. I am however disgusted with him and have no hopes from him of this kind. I have therefore written to him that he must not print more than 2 essays and asked him to return the book thereafter.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
२२.११.१६००

प्रिय पंडितजी,

आपका दि० २० का पत्र मिला। यह रही राय साहब[1] वाली चिट्ठी जिसे आप देखना चाहते थे। यदि आपने मुझसे इसकी माँग न की होती तो मैं इसे आपके पास न भेजता। मैंने तदनुसार राय साहब को लिख भी दिया था कि यदि आपने पत्र की माँग की तो मैं उसे भेज दूँगा तथा इसका भी संकेत कर दिया था कि इस ढंग से तो विवाद का अंत होने से रहा। अतः यदि आप राय साहब को उत्तर देने के इच्छुक हों तो कृपया उन्हीं को सीधे लिख भेजें। मेरी इच्छा है कि आप इस पत्र को कतई नज़रन्दाज़ कर इस अप्रिय पत्राचार की इतिश्री कर दें।

ऐसा लगता है कि 'भारत-मित्र' के सम्पादक[2] किसी उसूल के आदमी नहीं। वे झक्की और व्यवहार में ढीठ तक हैं। 'नैषध-चरित' सम्बन्धी उनके कथन के बारे में मैंने उन्हें लिखा है-अर्थात 'सुदर्शन' के मेरे उत्तर के बारे में वे 'सरस्वती' में प्रकाशित मेरे लेख का उत्तर छापने के लिए 'सुदर्शन' को उकसा रहे हैं। ठीक है, जचे सो करें।

बेकन (के लेखों) का मेरा अनुवाद सम्पादक के पास है। वे उसे छापकर 'भारत-मित्र' के पाठकों को उपहार स्वरूप देना चाहते हैं। जैसे ही 'बंगवासी' ने महाभारत देने की इच्छा व्यक्त की, इस व्यक्ति ने अपनी मूल योजना पलट दी और सूचित किया कि वे भागवत को उपहार में देंगे। उन्होंने, कोई ३ सप्ताह पूर्व मुझसे कहा था कि मेरी पुस्तक में से कुछ लेख प्रकाशित करें और यदि वे लोगों को रुचिकर हुए तो वे अपने खर्चे पर पुस्तक को छापने का वचन देते हैं। मैं इनसे धाप गया हूँ और इस प्रकार की कोई आशा नहीं रखता हूँ। अतः मैंने उन्हें लिख दिया है कि वे दो से अधिक लेख न छापें और काम हुए बाद पुस्तक वापस कर दें।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

---

1. राय देवीप्रसाद 'पूर्ण'
2. बाबू बालमुकुन्द गुप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(39)

Jhansi
15.12.1900

India Post Card

My dear Panditjee,

I referred to कुवलयानन्द, चंद्रालोक, काव्य प्रकाश. साहित्य दर्पण, काव्यादर्श and रस गंगाधर but did not find a definition of खण्डितोपमा. I do not know what P. Shyam Bihari means by खण्डितोपमा. If he means that... ...... (simile) is not complete .. ..does not constitute a ....for there are several...... लुप्तोपमा etc. and yours.........one of them In your comparison of Harishchandra with हरि (sun) and चन्द (moon), I see no fault.

Yours very sincerely
M. Prasad.

Pandit Sridhar Pathak
Panni gali
Agra.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इंडिया पोस्ट कार्ड

झाँसी
१५.१२.१६००

प्रिय पंडितजी,

मैंने कुवलयानंद, चन्द्रालोक, काव्य-प्रकाश, साहित्य-दर्पण, काव्यादर्श और रस गंगाधर आदि पुस्तकों को देखा-भाला परन्तु खण्डितोपमा की परिभाषा कहीं नहीं मिली। मैं नहीं जानता कि पंडित श्यामबिहारी मिश्र का (खण्डितोपमा)[1] से क्या तात्पर्य है। यदि उनका तात्पर्य.....
आपने हरिश्चन्द्र की तुलना हरि (सूर्य) और चन्द्रमा से की है, उसमें मुझे कोई दोष नहीं दिखलाई देता।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

पं० श्रीधर पाठक
पन्नी गली
आगरा।

---

1. ई० सन् १९०० की 'सरस्वती' में पाठकजी की कुछेक कृतिओं की समीक्षाएँ निकली थीं। इनमें भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की स्मृति में लिखा गया उनका 'श्रीहरिश्चन्द्राष्टक' भी था जिसकी अंतिम पंक्तियों में पं० श्यामबिहारी मिश्र को 'खण्डितोपमा' दोष दिखलाई दिया था। इसी प्रसङ्ग में भेजे गए इस पत्र को दीमक खा गई है। इतना अंश ही शेष रह गया है। 'भारत-मित्र' (५.१.१९०१) ने भी साहित्य समालोचना शीर्षक से इस समालोचना का उत्तर देते हुए 'खण्डितोपमा दूषण' को समालोचक का भ्रम मात्र बतलाया था।

'खण्डितोपमा' की इस चर्चा को लेकर पाठकजी के नाम भेजे गए अपने पत्र दि. १४.१२.१९०० में पं० श्यामबिहारी मिश्र ने अपनी सफ़ाई में जो कुछ लिखा था, उस पत्र को भी इस पत्र के बाद प्रस्तुत कर दिया है।

जब पं० श्यामबिहारी मिश्र का प्रसङ्ग चल ही पड़ा है तो उनके दि. २.३.१९१२ व १२.४.१९१२ के भी दो अप्रकाशित पत्रों में से वे पंक्तियाँ नीचे दी जा रही हैं जिनमें उन्होंने आलोचक के रूप में द्विवेदीजी को अपने नजरीए से देखा है। ये दोनों पत्र पाठकजी के नाम हैं और मिश्र-बन्धुओं के हिन्दी 'नवरत्न' आदि पर की गई द्विवेदीजी की आलोचना पर पं० श्यामबिहारी की प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रिक्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"I am sure, however, that a poet of your status and eminence can hardly review any such work in such a carping spirit and tone as the good Dwivediji has thought fit to adopt." (2.3.1912)

"I am thankful to you for a favourable expression of your opinion about our Hindi Nava-ratna in which our friend the good Dwivediji sees nothing but hideous spots." (12 4.1912).

"मुझे विश्वास है कि आपके तबक़े और प्रसिद्धि का कोई कवि ऐसी रचना को शायद ही ऐसे निन्दात्मक भाव व लहज़े में आंकेगा जैसा कि श्रीमान् द्विवेदीजी ने अपनाना उचित समझा है"(२.३.१९१२)

"हमारे 'हिन्दी नवरत्न' के सम्बन्ध में आपके कृपापूर्ण कथन के लिये मैं आपका आभारी हूँ। हमारे मित्र श्रीमान् द्विवेदीजी को तो इसमें दाग़ ही दाग़ नज़र आते हैं" (१२.४.१९१२)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(40)

Benares Cantt.
14.12.1900

My dear Pathakjee,

I have to earnestly thank you for your very kind letter of the 13th instant. Seldom can an average man have the patience to allow anyone to point out his defects, but your letter in question is most mild and gentlemanly in tone as well as in spirit, which at once corroborates once for all my impression that you are really a great man.

There is no human being without any defect; much less his productions. There is therefore no wonder if I here and there found occasions for adverse criticism on your works, but I have openly admitted the general vigour and greatness of your diction, tone and ideas. Though I have tried to be as impartial and candid in reviewing your works as possible for me, you will perhaps agree with me that I have as well made an honest attempt to do so in a spirit of friendliness and sympathy.

The simplicity and open-heartedness with which your appear to have accepted or at least acquiesced in my review on your poems has simply overpowered my heart. My only prayer to Almighty is that He may give you a long and prosperous career and enable you to enrich the Hindi literature more.

You know I have reviewed your work in co-operation with my younger brother, Pt. Sukhdeo Behari Misra B.A., who is at present at Lucknow. I have written to him about your question as to the Khanditopma blemish, for opinion, and as soon as I receive a reply from him I will give you a full reply as candidly and honestly as I can. If I may be wrong, I will openly admit it.

Yours very sincerely
Shyam Behari Misra.

Pandit Sridhara Pathakji
Panni gali
Agra.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बनारस छावनी
१४.१२.१६००

प्रिय पाठकजी,

आपके दिनाङ्क १३ के अति कृपापूर्ण पत्र के लिए मैं आपको तहेदिल से धन्यवाद देता हूँ। किसी व्यक्ति के दोष बतलाने पर साधारणतः वह कभी-कभार ही धैर्य का प्रदर्शन करते हैं किन्तु आपका आलोच्य पत्र भाव एवं ओज में इतना मृदु और शालीन है कि तत्काल ही सदा के लिए मेरी इस धारणा की पुष्टि हो जाती है कि वास्तव में आप एक महान व्यक्ति हैं।

सर्वथा दोषरहित तो कोई व्यक्ति नहीं होता-उसकी रचना की निर्दोषता की क्या कहिए। अतः यदि मुझे आपकी कृतियों में जहाँ-तहाँ विपरीत आलोचना का अवसर मिल भी गया तो इसमें कोई अचरज की बात नहीं, किन्तु आपके वाक्यविन्यास, भावों एवं विचारों की महत्ता एवं तेजस्विता को मैंने खुलकर स्वीकारा है। यद्यपि, जहाँ तक बन पड़ा है मैंने आपकी कृतियों की समीक्षा तटस्थता एवं सचाई से की है किन्तु आप मुझसे सहमत होंगे कि इसके बावजूद मैंने मैत्रीभाव एवं सहानुभूति से यह खरा प्रयास किया है।

आपकी कविताओं पर मेरी समीक्षा को जिस सरलता एवं खुले दिल से आप स्वीकार करते अथवा उससे सहमत होते से प्रतीत होते हैं, उसने मुझे अभिभूत कर दिया है। उस सर्वशक्तिमान से मेरी यही प्रार्थना है कि वह आपको दीर्घजीवी और खुशहाल रखे ताकि आप हिन्दी साहित्य को और अधिक समृद्ध बना सकें।

आपको पता है कि मैंने आपकी रचनाओं की समीक्षा अपने छोटे भाई पंडित सुखदेव बिहारी मिश्र बी०ए० जो इन दिनों लखनऊ में हैं के सहयोग से की है। 'खण्डितोपमा दोष' के बारे में आप द्वारा उठाए गए प्रश्न को मैंने उन्हें लिख भेजा है और उनसे उत्तर मिलते ही मैं जितनी स्पष्टता और ईमानदारी से होगा आपको पूर्ण उत्तर भेजूँगा। यदि मैं ग़लती पर हुआ तो उसे खुलकर स्वीकार कर लूँगा।

आपका अति विश्वस्त
श्याम बिहारी मिश्र

पं० श्रीधर पाठकजी
पन्नी गली
आगरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(41)

Jhansi
16.1.1900

My dear Panditjee,

In my school life I recollect having read in some grammar that the note of admiration (!) is only used after interjections, passionate exclamation and when invocation is meant. I now find that the Hindi writers use it invariably after address (सम्बोधन). I have myself done this in my writings. I find you have also followed the same course c. f.

सुनिये झाड़खंड वनवासी दयाशील ! etc.
वहां न जाना पुत्र ! etc.
क्यों यह दुख तुझे परदेसी ! etc.

Kindly consult some standard English authors and grammarians if necessary and let me know whether we can use this note after address generally. Lala Sitaram in translating अलं महीपाल तव श्रमेण (रघुवंश) has used the note—बस ! नरेस ! etc. and so has done Pt. Jiwanand Vidyasagar B.A. of Calcutta in his edition of Naishadha Charit where not a single सम्बोधन has been allowed to appear without being followed by (!)

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

१६.१.१६०१

प्रिय पंडितजी,

मुझे याद आ रहा है कि अपने विद्यार्थी जीवन में मैंने व्याकरण की किसी पुस्तक में पढ़ा था कि विस्मयादि बोधक चिह्न का प्रयोग केवल विस्मय, तीव्र मनोभाव तथा ईश स्तवन के उपरान्त किया जाता है, किन्तु आजकल हिन्दी के लेखक सम्बोधन के बाद इसका खुलकर प्रयोग कर लेते हैं। मैंने स्वयं अपनी रचनाओं में ऐसा ही किया है। आपने भी यही मार्ग अपना रखा है।

उदा० 'सुनिये झाड़खंड वनवासी दयाशील! आदि
'वहाँ न जाना पुत्र! आदि
'क्यों यह दुख तुझे परदेसी! आदि

यदि आवश्यक समझें तो कृपया जाने-माने अंग्रेज़ी लेखकों और वैयाकरणों की पुस्तकों में देखकर मुझे सूचित करें कि क्या हम इस चिह्न को आम तौर पर सम्बोधन के आगे प्रयुक्त कर सकते हैं? लाला सीताराम ने 'अलं महीपाल तव श्रमेण' (रघुवंश) के अनुवाद में 'बस! नरेस!' आदि का प्रयोग किया है और कलकत्ते के पंडित जीवानन्द विद्यासागर बी० ए० ने अपने 'नैषध-चरित' के संस्करण में भी ऐसा ही किया है जहाँ एक भी सम्बोधन बिना (!) चिह्न के प्रस्तुत नहीं हुआ है।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(42)

Jhansi
23.1.1901

My dear Panditjee,

It has extremely pained me to hear of the sad and untimely death of your daughter. May God give you strength to bear this shock. To say more in this connection is to increase your sorrow.

I forgot all about सा. समालोचना. I do not now recollect what I wrote to you. If I get opportunity I would like to come to Agra to see you and when I am there I would give you my opinion on any points asked by you.

This Railway has been amalgamated with G. I. P. Rly. Two clerks from my branch go to Bombay today to work in the office of the G.T. Manager there. No orders for me yet. I am in great anxiety. If it is settled that I should go there I would try to come to see you.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

२३.१.१९०१

प्रिय पंडितजी,

आपकी कन्या की दु:खद व असामयिक मृत्यु की सुनकर मुझे अत्यधिक पीड़ा हुई। भगवान आपको इस आघात को सहन करने की शक्ति दे। इस सम्बन्ध में और कुछ कहना आपके दु:ख को और बढ़ाना होगा।

साहित्य समालोचना के सम्बन्ध में मैं सब कुछ भूल-भाल गया। मुझे अब स्मरण नहीं कि मैंने आपको क्या लिखा था। यदि अवसर मिला तो मैं आपसे मिलने आगरा आऊँगा और वहाँ पहुंचने पर आप जिन जिन-मुद्दों के बारे में पूछेंगे उन पर मैं अपनी राय दूँगा।

यह रेलवे जी०आई०पी० रेलवे में मिला दी गई है। मेरी शाखा के दो बाबू गी०टी० मैनेजर के कार्यालय में काम करने के लिए आज बम्बई जा रहे हैं। मेरे नाम अभी कोई आदेश नहीं हुए हैं। इस कारण पशोपेश में हूँ। यदि वहाँ मेरा जाना भी तय हो गया तो आपसे भेंट करने का प्रयत्न करूँगा।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(43)

Jhansi
6.4.1901

My dear friend,

Yours of 3rd. I recd. yesterday in the evening. I expected a letter from you this morning but it has not come. In number 7 there is no mention of you. I therefore do not send the number to you. In it, I have been called द्विवेदिकाल नन्दन etc. and indirectly critics of this age attacked upon my being called हठी, दुराग्रही etc. If not already done do not also fail to read in the 11th No. the article "सब मिट्टी हो गया." This No. 7. must have been issued after my article appeared in the Saraswati, so I do not think these 2 last numbers can be 3 or 4 months old. I had, however, no information as to when they were issued but I think this must have been issued only lately.

When you have done with the 11 and 12 No's please return them. I want to send them to one or two other friends of mine.

I have sent a copy of 11th No. to Rae Sahib and asked his legal advice whether the editor can be prosecuted. I think, if I prosecuted him there is doubt of my being able to obtain a correction. My case is not so strong as yours is. The attack on you is altogether uncalled for and unwarranted. What he has written as regards रति प्रिय etc. is most objectionable. Please obtain legal advice at Agra personally, pending receipt of reply from Rae Saheb. You can write to him (Rae Saheb) direct. The man has not only abused me and you but Dr. Bhandarkar and Pt. Sheodutta also.

You have been abused because I praised you so, I am at the root of all this. The seed was sown by me about 10 months ago, when I refused to support this fellow's view of your गुनवन्त हेमन्त. I do not know how to mend matters now. If I decide to make a reply I shall not say anything in reply to what he has said in the 11th No. of Sudarshana. It is nothing but trash and nonsense. I shall only quote from his private letters sent to me before he asked me to support him as regards his review of your हेमन्त and show to the public what opinion he held of me and of yourself before that occurrence and how it was subsequently changed.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
६.४.१९०१

प्रिय मित्र,

आपका दि० ३ का पत्र मुझे कल शाम मिला। आज प्रातः भी आपके पत्र की प्रतीक्षा थी। आया नहीं।

सातवें अङ्क में आपकी कोई चर्चा नहीं है। अतः मैं आपके पास यह अङ्क नहीं भेज रहा हूँ। इसमें मुझे 'द्विवेदिकाल नन्दन' आदि कहा गया है और परोक्षतः इस युग के आलोचकों ने मुझे हठी, दुराग्रही आदि कहकर मुझ पर प्रहार किए हैं। आपने यदि पहले से ही देख न रखा हो तो ग्यारहवें अङ्क में 'सब मिट्टी हो गया' वाले लेख को भी पढ़ना न भूलिएगा। यह सातवाँ अङ्क 'सरस्वती' में प्रकाशित मेरे लेख के बाद ही निकला होगा अतः मैं नही समझता कि ये अंतिम दो अङ्क ३ या ४ मास पुराने होंगे। यद्यपि इनके प्रकाशित होने के सम्बन्ध में मेरे पास कोई सूचना नहीं है परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि ये हाल ही में निकले होंगे। ग्यारहवें और बारहवें अङ्क देखकर कृपया वापस भेज दें। मैं उन्हें अपने दो-एक मित्रों के पास भेजना चाहता हूँ।

मैंने ग्यारहवें अङ्क की एक प्रति राय साहब को भेजी है और उनसे कानूनी सलाह माँगी है कि क्या सम्पादक पर मुक़दमा चलाया जा सकता है? मेरे द्वारा उन पर मुक़दमा करने पर भी मुझे 'भूल सुधार' करवा लेने में शङ्का है। मेरा मामला आप जितना ठोस नहीं है। आप पर हुआ प्रहार पूरी तरह अनावश्यक और अनुचित है। 'रतिप्रिय' शब्द के सम्बन्ध में उन्होंने जो कुछ लिखा है वह अत्यन्त आपत्तिजनक है। राय साहब का उत्तर आने से पूर्व आप कृपया स्वयं ही आगरे में कानूनी सलाह-मशविरा कर लें। राय साहब को आप सीधे लिख सकते हैं। इस व्यक्ति ने न केवल आपको और मुझको अपितु डाक्टर भंडारकर और पंडित शिवदत्त को भी अपशब्द कहे हैं।

आपको इसलिए लपेटा गया क्योंकि मैंने आपकी प्रशंसा की थी। अतः इस सब की जड़ में मैं हूँ। कोई छह मास पूर्व मैंने यह बीज बोया था जब मैंने आपके 'गुनवन्त हेमन्त' पर इस व्यक्ति के विचारों का समर्थन करने से इन्कार कर दिया था। मेरी समझ में नहीं आता कि यह बात अब कैसे सुधारी जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

It would not be wise on the part of P. Shyam Behari to renew that subject, for if we do like that there will be no end to such controversies and much of our valuable time will be wasted for nothing.

I hope to receive a letter from you tomorrow.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यदि मैंने उत्तर देने का निश्चय किया तो मैं 'सुदर्शन' के ग्यारहवें अङ्क में उन्होंने जो कुछ कहा है उस सम्बन्ध में कुछ नहीं कहूँगा। वह केवल कूड़ा-करकट और बकवास है। मैं उनके उन व्यक्तिगत पत्रों से उद्धरण लूँगा जो उन्होंने आपके 'हेमन्त' पर अपनी समीक्षा का मुझसे समर्थन माँगने से पूर्व मुझे लिखे थे। इससे लोगों को ज्ञात हो जायगा कि इस घटना से पूर्व मेरे और आपके बारे में उनकी क्या धारणा थी और बाद में वह कैसे पलट गई।

पंडित श्यामबिहारी द्वारा इस विषय को वापस उठाया जाना बुद्धिमतापूर्ण नहीं रहेगा क्योंकि यदि हम भी वैसा ही करने लगें तो ऐसे विवादों का कोई अन्त सम्भव नहीं है और अकारण हमारे बहुमूल्य समय का एक बड़ा भाग नष्ट हो जाएगा।

कल आपसे एक पत्र प्राप्त होने की आशा करता हूँ।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(44) Jhansi
8.4.1901

My dear Panditjee,

Yours of the 6th instant. I am very sorry you were unwell. I hope you are alright now. It is Bharat Mittra who has instigated and induced the Sudarshan to write the article. He must be jubilating over the matter. So he must remain silent. He did his duty when my article appeared by drawing Sudarshana's attention to it and making unpleasent remarks. He is doing his duty now by keeping quiet.

The Bharat Mittra must have written to Sudarshana that you were the ....

Certainly these attacks are exceedingly discouraging and disappointing but such is the case with every language. Whenever there is a change people are averse to it. Sudarshana is an insignificant being and we should not bid adieu to Hindi because he maliciously makes unpleasent remarks against us. The remedy is that if you are advised you should prosecute the man for his audacity. I am waiting for Rai Sahib's opinion and will let you know when I have recd it. Please let me know what your Barr. advised.

Yours very sincerely
M. P. Dvivedi.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

८-४-१९०१

प्रिय पंडितजी,

आपका दि० ७ का पत्र मिला। मुझे बड़ा खेद है कि आप अस्वस्थ थे। विश्वास है अब आप ठीक-ठाक होंगे। 'भारत-मित्र' ने ही 'सुदर्शन' को वह लेख लिखने के लिए उकसाया एवं प्रोत्साहित किया था। इस बात पर वे प्रफुल्लित हो रहे हैं। अतः वे क्यों बोलें! मेरे लेख के निकलने पर उन्होंने 'सुदर्शन' का उस ओर ध्यान आकृष्ट कर एवं (वह) अप्रिय चर्चा कर अपना कर्त्तव्य निभाया। अब वे चुप्पी साधकर अपना फर्ज़ निभा रहे हैं।

'भारत-मित्र' ने निश्चय ही 'सुदर्शन' को लिखा होगा कि आप ....

निश्चय ही ये दोषारोपण बड़े हताश और निराश करने वाले हैं, परन्तु यह बात तो हर भाषा के साथ पाई जाती है। जब भी परिवर्तन होता है लोग उसका विरोध करते हैं। 'सुदर्शन' एक नाचीज़ है, और केवल इस बात पर कि वह ईर्षावश हमारे विरुद्ध ऐसे अप्रिय आरोप लगाता है हमें हिन्दी से नाता नहीं तोड़ना चाहिए। इसका हल यह है कि यदि आपको सलाह दी जावे तो आप उसकी (इस) ढिठाई के लिए उसके विरुद्ध अभियोग लगावें। मैं राय साहब के विचारों की प्रतीक्षा में हूँ। आते ही आपको सूचित कर दूँगा। आपके वकील ने जो सलाह दी है वह मुझे भी कृपया बतलाइयेगा।

आपका अति विश्वस्त

म० प्र० द्विवेदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(45)

Jhansi
15.4.1901

My dear Panditjee.

Your post card of the 13th recd. today. I have sent you a card yesterday. I do not think you recd. Rai Sahib's reply that I sent you with my letter. I am afraid my letter went astray. I retraced a copy of Rai Sahib's letter from which I send you another copy.

Rai Sahib is not a man who will bring to memory your disagreement with his opinion regarding धाराधर धावन and refuse to send a reply to you. I am sure his silence is due to some unusual occurence. He has not replied to my letters also. I sent him 2 letters and a small poem in Sanscrit for his approval but no reply.

Pt. Shyam Behari Misra is of the opinion that we should not take the matter to Court.

I am drafting a brief reply to Sudarshan and will send you the draft shortly. I had several letters from Madhava Pd. praising me and you also and I am making extracts to embody in my reply. I think I should say as little about you as possible in my reply for if I do otherwise you will be the subject of a further attack by Sudarshana.

Yours very sincerely
M. P.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१५.४.१६०१

प्रिय पंडितजी,

आपका दि० १३ का पोस्टकार्ड आज मिला। कल ही मैंने आपके नाम एक कार्ड भेजा है। मैं नहीं समझता कि आपको राय साहब का वह उत्तर मिला होगा जो मैने अपने पत्र के साथ भेजा था। मुझे भय है कि मेरा पत्र इधर-उधर हो गया है। मैंने राय साहब के पत्र की प्रतिलिपि वापस ढूँढ़ी जिसकी प्रतिलिपि करके आपके पास भेज रहा हूँ।

राय साहब ऐसे व्यक्ति नहीं जो 'धाराधर धावन'[1] के सम्बन्ध में उनकी राय से आपकी असहमति को याद कर आपको उत्तर न दें। मुझे विश्वास है कि उनकी चुप्पी किसी असाधारण कारणवश है। उन्होंने मेरे पत्रों का भी उत्तर नहीं दिया है। मैंने उन्हें दो पत्र और संस्कृत में लिखी एक छोटी सी कविता उनके अनुमोदनार्थ भेजी थी। कोई उत्तर नहीं।

पंडित श्यामबिहारी मिश्र का मत है कि हमें इस मामले को कचहरी में नहीं ले जाना चाहिए।

'सुदर्शन' के लिए एक संक्षिप्त उत्तर का प्रारूप बना रहा हूँ। शीघ्र ही उसे आपके पास भेजूँगा। मेरे पास माधवप्रसाद के अनेक ऐसे पत्र थे जिनमें उन्होंने हम दोनों की प्रशंसा की है। मैं अपने उत्तर के लिए उनमें से उद्धरण छाँट रहा हूँ। सोचता हूँ कि मुझे अपने उत्तर में आपके सम्बन्ध में यथासम्भव कम-से-कम कहना चाहिए क्योंकि ऐसा न करने पर 'सुदर्शन' वाले फिर आप पर बरस पड़ेंगे।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

1. राय देवीप्रसाद पूर्ण कृत मेघदूत का अनुवाद।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(46)

Jhansi
17.4.1901

Repld
18.4.1901

My dear friend,

Yours of the 16th. I am sending you काक कूजितम. It is a draft. I would have sent it to you when fair-copied without asking.

The D.T. Superintendant is going to Cawnpore by mail tonight for 3 days leaving me in charge of the office. If he is back on Saturday I shall be at Agra on Sunday morning as desired by you.

I agree with you in your definition of defamation.

I have sent the draft of my rejoinder to Rai Sahib. On return I will send it to you and you can make any additions or alterations you like. I shall not publish the काक कूजितम at present. Please return it with your suggestions.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर दिया
१८.४.०१

झाँसी
१७.४.१६०१

प्रिय मित्र,

आपका १६ ता० का पत्र मिला। मैं आपके पास 'काक-कूजितम[1]' भेज रहा हूँ। यह केवल प्रारूप है-इसे मैं साफ़ लिखवाकर बिना माँगे आपको भेजता। कार्यालय का भार मुझे सँभलाकर, 'डिविज़नल ट्राफिक सुपरिन्टेडेंट' मेल से आज रात ३ दिन के लिए कानपुर जा रहे हैं। यदि वे शनिवार को लौट आए तो आपकी इच्छानुसार मैं रविवार को आगरा पहुँच जाऊँगा। 'मानहानि' की आपकी परिभाषा से मैं सहमत हूँ। रायसाहब के नाम अपने प्रत्युत्तर का प्रारूप मैने भेज दिया था। वापस पहुँचकर आपके पास भेज दूँगा और आप उसमें यथेच्छ परिवर्तन-परिवर्धन कर सकते हैं। फ़िलहाल मैं 'काक-कूजितम' को प्रकाशित नहीं करूँगा। कृपया अपने सुझावों के साथ उसे लौटा दीजिएगा।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

---

1. 'छत्तीसगढ़ मित्र' जून १९०१ में प्रकाशित द्विवेदीजी की एक व्यंग्यपूर्ण संस्कृत कविता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(47)

Jhansi
17.6.1901

My dear Panditjee,

I am sorry to hear you are surrounded with difficulties. But it were you who the other day adviced me to face these household troubles manfully and I can only repeat your own words to you. To tell you the truth there is very little happiness in this world, if there is any at all. Everyone has some complaint and the only remedy is that one should patiently submit to the decree of fate. If you think you have improved upon the इसबोध to your satisfaction you should publish it. Why should you let your labours go for nothing. I have composed 24 stanzas in blank verse and sent them for publication in the Saraswati. They will appear in the current month's issue. They do not sound sweet at all. I will send them to you when published or if you like to see the manuscript I will send it to you at once.

Last month's Saraswati has nothing against you. It contains my विधि विडम्बना and an editorial proposing the formation of a समालोचक समिति. Your name and mine being among the names who have been selected to be nominated as members. The question will be placed before the नागरी प्रचारिणी सभा for sanction in due course.

The 1st number of Sudarshana of this year contains a virulent attack on Pt. Din Dayal. I have lately written an article condeming the नायिका भेद and sent it to Saraswati for publication.

It is terribly hot here. The sun is simply scorching. Perhaps you do not know I live in a tiled house. If you were to pass a day at my house at this time you would simply be roasted. Your house is hundred times more comfortable than mine.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१७.६.१६०१

प्रिय पंडितजी,

मुझे यह जानकर दुःख हुआ कि आपको कठिनाइयों ने आ घेरा है। परन्तु उस दिन आपही ने इन पारिवारिक झंझटों का पौरुष-पूर्वक सामना करने की मुझे सलाह दी थी और मैं तो केवल आपके ही शब्द आपके सम्मुख दोहरा सकता हूँ। सच पूछिए तो इस संसार में सुख यदि कहीं है भी तो बहुत कम है। सबको कोई न कोई शिकायत रहती है। हल केवल यही है कि भाग्य के लिखे को धैर्य से स्वीकार करना चाहिए। यदि आप समझते हैं कि आपने डंसबोध[1] में अपनी इच्छानुसार संतोषजनक सुधार कर लिया है तो आपको उसे प्रकाशित कर देना चाहिए। अपने परिश्रम को अकारण क्यों ज़ाया होने दें। मैंने अतुकांत छन्दों में २४ चरण बनाए हैं और 'सरस्वती' में छपने को भेज दिए हैं। वे इस महीने के अङ्क में निकलेंगे। इनमें माधुर्य कतई नहीं है। प्रकाशित होने पर मैं आपके पास भेजूँगा और यदि आप पाण्डुलिपि देखना चाहें तो मैं तुरन्त आपके पास भेज दूँगा।

पिछले मास की 'सरस्बती' में आपके विरुद्ध कुछ नहीं है। उसमें मेरी 'विधि विडम्बना' और एक समालोचक समिति बनाने के लिए सम्पादकीय प्रस्ताव है। आपका और मेरा नाम उन लोगों में है जिन्हें सदस्यता के लिए चुना गया है। यह विषय 'नागरी प्रचारिणी सभा' के सम्मुख यथासमय स्वीकृति के लिए रखा जावेगा।

इस वर्ष के 'सुदर्शन' के प्रथम अङ्क में पंडित दीनदयालु पर तीव्र प्रहार किया गया है। मैंने अभी हाल में नायिका, भेद की निन्दा करते हुए एक लेख 'सरस्वती' में छपने को भेजा है।

यहाँ भीषण गर्मी पड़ रही है। सूर्य की तीक्ष्णता झुलसा देने वाली है। शायद आपको ज्ञात नहीं कि मैं खपरैल के मकान में रहता हूँ। यदि आपको इस समय मेरे मकान में एक दिन व्यतीत करना पड़े तो आप झुलस जावेंगे। आपका मकान मेरे घर से सौ गुना आरामदायक है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

---

1. मनोविनोद, पृ० १४५, प्रयाग, १९१७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(48)

Jhansi
1.7.1901

My dear Panditjee,

Your favour of 29th to hand. I am very glad you hold such a good opinion of my work but you see Sir, friends are generally partial to one's friend. However, your kind words will go a great way to encourage me in the field of literary criticism and I am obliged to you for the expressions which you have made in your letter.

The edition of this book contains 250 copies only, out of which I have received 50. The (rest) are in the course of preparation. Kindly let me know how many more you require and I will be glad to send the same to you. Your suggestions in connection with रघु and मेघदूत have been given effect to almost in their entirety. As regards the other 2 works, Rae Sahib said I must publish the same as I had done once in the newpapers or else Lala Sahib might say that I softened the articles because I thought they were too strong and defamatory. This is why I did not carry out your suggestions.

Hoping you are getting on well. It.........here since last 2 days but no rains yet.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१.७.१६०१

प्रिय पंडितजी,

आपका २६ का पत्र मिला। मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप मेरी कृति[1] के बारे में इतनी अच्छी राय रखते हैं, परन्तु श्रीमन्! मित्रगण बहुधा एक दूसरे का पक्षपात भी कर जाते हैं। तो भी, आपके सहानुभूतिपूर्ण शब्द मुझे साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में बड़ा प्रोत्साहित करेंगे और आपने अपने पत्र में जो भाव व्यक्त किए हैं उनके लिए मैं कृतज्ञ हूँ।

पुस्तक के इस संस्करण की केवल २५० प्रतियाँ छपी हैं जिनमें से मुझे ५० मिली हैं। शेष तैयार हो रही हैं। कृपया लिखें कि आपको और कितनी प्रतियाँ चाहिए। उन्हें भेजने में मुझे प्रसन्नता होगी। 'रघु' और 'मेघदूत' के बारे में आपके सुझावों को प्रायः पूर्णतः क्रियान्वित कर दिया है। शेष दो कृतियों के बारे में राय साहब ने कहा है कि मुझे उन्हें उसी रूप में प्रकाशित करना चाहिए जिस प्रकार समाचारपत्रों में एक बार कर रखा है अन्यथा लाला साहब कह सकते हैं कि मैंने लेखों में इसलिए परिवर्तन ला दिया क्योंकि वे अधिक तीव्र और मानहानिजनक थे। इसी कारण मैं आपके सुझावों का पालन नहीं कर सका।

विश्वास है आप ठीकठाक होंगे। पिछले दो दिनों से (बदली तो है) परन्तु अभी वर्षा नहीं हुई है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

1. द्विवेदीजी की किसी रचना विशेष के सन्दर्भ में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(49)

Jhansi
20.4.1902

My dear Panditjee,

I am sorry, to hear of the death of your son. Not very long ago you lost your daughter and now you have lost your son. The shock must be terrible to you but in such matters there is no help but silence and patience. Please bear it manfully and try to cheer up your spirits by removing yourself to a quarter inhabited by natives, if that be possible.

As you are already aware I like your poetry-anything and everything that you write, and when I say anything in that connection I always say candidly. I liked your 'Varsha' and if I recollect well I asked you to complete your translation of Ritu Samhar as soon as possible. I now repeat this request and trust you will take up the work in right earnest. Simla is the place where you will better be able to produce a good translation of the natural scenes described by Kalidas in this poem.

The editor of Saraswati has displeased me on more than one occasion. The thing is, he is entirely devoid of any knowledge of Sanscrit; and besides this he has no taste for poetry and therefore cannot appreciate it. He has allowed Pandit Shyam Behari's version of the 3rd canto of Kumar Sambhava to appear, which, if comes to your notice you would perhaps tear off the book in rage and disgust.

Like many others I have also given my opinion on Rai Devi Prasad's Meghduta as I was asked to do so. It is in my opinion, superior to Lala Sitaram's work and many of its verses are really very sonorous and charming. As regards.......... I saw it at Cawnpore for a few minutes while sitting at Rai Devi Prasad's but I do not know why I did not like it. It contains errors of transla-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झांसी

२०.४.१६०२

प्रिय पंडितजी,

आपके पुत्र के स्वर्गवास की सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ। आपकी पुत्री के देहान्त को कोई बहुत अधिक समय नहीं हुआ था कि अब आपका पुत्र चला गया। आपको बड़ा सदमा पहुँचा होगा परन्तु ऐसे मामलों में संतोष और मौन के सिवाय और कोई चारा नहीं है। कृपया हिम्मत के साथ इसे सहन करें और यदि हो सके तो अपने मन को प्रसन्न रखने के लिए किसी ऐसी बस्ती में चले जावें जहाँ मेल-जोल वाले भारतीय लोग रहते हों।

जैसा कि आपको ज्ञात ही है आप कुछ भी लिखें मैं तो आपकी प्रत्येक कविता को पसन्द करता हूँ और इस सम्बन्ध में मैं जो कुछ कहता हूँ सर्वदा स्पष्ट रूप से कहता हूँ। आपकी 'वर्षा' मुझे पसन्द आई और सम्भवतः मैंने आपको ऋतसंहार का अनुवाद यथाशीघ्र पूरा करने को कहा था। मैं अपनी इस प्रार्थना को दोहराता हूँ और विश्वास करता हूँ कि आप इस काम को तत्परता से उठा लेंगे। शिमला ऐसी जगह है जहाँ इस काव्य में कालिदास द्वारा वर्णित प्राकृतिक दृश्यों का आप सुन्दर अनुवाद कर सकेंगे।

'सरस्वती' के सम्पादक ने मुझे अनेक बार अप्रसन्न किया है। वास्तविकता यह है कि उन्हें संस्कृत का तनिक भी ज्ञान नहीं और दूसरे उन्हें काव्य के प्रति कोई रुझान भी नहीं, अतः वे काव्य के गुणों को परख ही नहीं सकते। उन्होंने 'कुमार सम्भव' के तीसरे सर्ग का पंडित श्यामबिहारी कृत (अनुवाद। टीका ?) प्रकाशित कर दिया है। यदि वह आपके हाथ पड़ जाए तो शायद आप क्रोधित होकर ग्लानिवश उसे फाड़ ही फेकेंगे।

अनुरोध पर ही औरों की भांति मैंने भी राय देवीप्रसाद के मेघदूत पर अपनी सम्मति प्रकट की है। मेरी राय में लाला सीताराम के (अनुवाद) से बेहतर है और अनेक पंक्तियाँ वास्तव में बड़ी मधुर और रमणीय हैं। मैंने....को कानपुर में राय देवीप्रसाद के घर चन्द मिनटों के लिए देखा था परन्तु न जाने क्यों मुझे वह पसन्द नहीं आया। उसमें अनुवाद की त्रुटियाँ हैं। इसे लाला सीताराम को समर्पित किया गया है जो कि बहुत आश्चर्यजनक एवं हास्यास्पद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

tion. It has been dedicated to Lala Sitaram which is very amazing and amusing. I do not know why this step has been taken, to mock the Lala Sahib or really to do him honour.

Yours very sincerely
M. Prasad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगता है। मुझे पता नहीं ऐसा क़दम क्यों उठाया गया-लाला साहब की खिल्ली उड़ाने को अथवा उन्हें वास्तविक सम्मान देने के लिए ?

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(50)

Jhansi
12.9.1902

Repld.
14.9.1902

My dear Panditjee,

Your of the 9th to hand yesterday. Yes do please write to me when you be in Agra in December and I will endeavour to run up for a day in case Sunday intervenes, to pass a few hours with you.

Baboo Amir Singh of Hari Prakash Press is in trouble, his press is about to be seized and sold by auction. The printing of my collections has therefore come to a stand. I have now written to him to make over the work to another Press.

When will you come down the hills and to which province will the commission proceed first? Cannot you send me a copy of the programme? I want it to facilitate writing letters to you at the proper place. It is only since the 1st of this month that I get time to breathe. Previous to that I was surrounded by difficulties on all sides so much so that I had no peace even during the night. Telegrams used to come in heaps at a time, sometimes at about 2'O clock at night which broke the continuity of my rest. Then the D.T. Supdt,, my office superior was a tyrant but he has been transferred and the circumstances have now changed for the better. While labouring under these difficulties I lost my father in May last and this added to my misery. I was seriously thinking of resigning my appointment and would have certainly done so had the District Traffic Supdt. shown the least indication of treating me otherwise than I deserved. I refused to work in Bombay where had I remained, I would have been holding a post of double the pay than I am getting, simply because I thought I would be more comfortable here but these last 18 months of Jhansi have been 18 years to me. But thanks to God; He has after all sent me relief and I am comparatively happy now. How truly the poet has said:—

भानुर्य एव दहतीह खरैर्मयूखैः
सद्य : स एव जगदावृणुते पयोभिः ।।

These last 15 days I have been reading Shankaracharya's exposition

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर दिया
१४.६.०२

झाँसी
१२.६.१६०२

प्रिय पंडितजी,

आपका ६ ता० का पत्र कल मिला। जी हाँ, कृपया मुझे अवश्य सूचित करें कि दिसम्बर में आप आगरा कब आवेंगे। यदि रविवार बीच में पड़ा तो मैं आपके साथ चन्द घंटे व्यतीत करने के लिए एक दिन के लिए आने का प्रयत्न करूँगा।

हरिप्रकाश मुद्रणालय[1] के बाबू अमीरसिंह दिक्कत में पड़ गए हैं। उनका मुद्रणालय ज़ब्त होकर नीलाम होने को है अतः मेरी कृतियों का मुद्रण रुक गया है। अब मैंने उन्हें लिख दिया है कि मेरी कृतियों को किसी अन्य मुद्रणालय में दे दें।

आप पहाड़ों से कब लौटेंगे और सबसे पहले कमीशन[2] किस प्रान्त में जावेगा? क्या आप अपने कार्यक्रम की एक प्रति नहीं भेज सकेंगे? सही ठिकाने पर आपको पत्र लिखने की सुविधा की दृष्टि से मुझे उसकी आवश्यकता रहेगी। इस महीने की पहली से ही मुझे साँस लेने की फुरसत मिली है। इससे पूर्व मैं इस सीमा तक दिक्कतों में घिर गया था कि मुझे रात में भी शांति नहीं मिलती थी। एक बार में ही तारों का अंबार लग जाता था-कभी कभी रात के लगभग दो बजे-जिससे मेरे विश्राम का क्रम टूट जाता था। फिर, हमारे साहब (जिला ट्राफिक सुपरिन्टेंडेंट) एक अत्याचारी था, किन्तु उसका तबादला हो चुका है और हालात बेहतर हो गए हैं। इन झंझटों के बीच संघर्ष करते हुए मेरे पिता का गत मई को स्वर्गवास हो गया और इससे मेरी परेशानियाँ और बढ़ गई। मैं गम्भीरता पूर्वक त्याग पत्र देने की सोच रहा था और वास्तव में ऐसा कर बैठता यदि ज़िला ट्राफिक सुपरिन्टेंडेंट ने मेरे योग्य व्यवहार करने में तनिक भी उदासीनता दिखलाई होती। बंबई में काम करने से मैंने इन्कार कर दिया। यदि मैं वहाँ चला जाता तो मुझे मेरे वर्तमान पद से दुगने वेतन वाला पद मिल जाता, पर मैंने सोचा कि में यहाँ अधिक आराम में हूँ। परन्तु झाँसी के ये अठारह महीने अठारह वर्ष के बराबर सिद्ध हुए हैं। ईश्वर को धन्यवाद कि आखिरकार उसने मुझे सहायता पहुँचाई और अब में अपेक्षाकृत अधिक प्रसन्न हूँ। कवि ने कितना सत्य कहा है: —"भानुर्य........पयोभि"।

"गर्मी के मौसम में जो सूर्य अपनी तीखी किरणों से जलाने वाला लगता है, वही इन दिनों पानी बरसा कर सब लोगों को सुख देने वाला बन जाता है। तात्पर्य

1. बनारस में था।
2. इरिगेशन कमीशन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

of Brahma-Sutra and the deeper I go into it the more it displays the profound learning of the philosopher. I have read works of Mill and Spencer, but I did not feel so much pleasure in them as I do in the writing of Śankar. This may be due to my not being able to fully understand the works mentioned. But anyhow, Sankar was certainly a very great man. He was quite right when he said:—

य: केवलो ऽस्ति परम: स शिवोऽहमस्मि ।

As you are aware Kavya has been my special study, but I am beginning to dislike that branch now. I now feel inclined to study philosophy and very often think of what Bhartrihari has said:—

एकाकि निस्पृह : शान्त: पाणिपात्रो दिगम्बर:
कदा शम्भो ! भविष्यामि कर्म निर्मलन क्षम: ।।

If this state of my mind continues I think I shall have to retire soon. And the sooner it is so the better.

You once told me of your intention of building a house at Dehradun. Have you given up the idea? How many years more for you to be entitled to earn a pension?

I am undergoing Louis Kune's system of water cure since last 7 months. I have to take daily different kinds of baths and live on fruits and रोटी दाल only. The diet is very simple—the simplest-No ghee, no milk......... .

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह है कि सूर्य तो वही रहता है जो गर्मी में झुलसाता है मगर वर्षा में वही लोगों को सुख देने वाला क्यों बन जाता है, यह सब समय का ही प्रभाव है।"

गत पन्द्रह दिनों से मैं शङ्कराचार्य के ब्रह्मसूत्र की व्याख्या पढ़ रहा हूँ और जितने गहरे जाता हूँ उतनी ही इस दार्शनिक की गम्भीर विद्वता प्रदर्शित होती है। मैंने 'मिल' और 'स्पेन्सर' की कृतियाँ पढ़ी हैं परन्तु मुझे वह आनन्द नहीं आया जो शङ्कराचार्य की रचनाओं में मिला। ऐसा इस कारण भी हो सकता है कि मैं इनकी कृत्तियों को भली भांति समझ न सका हूँ। खैर, निसंदेह शङ्कर एक बहुत महान व्यक्ति थे। उन्होंने बिल्कुल ठीक कहा है:—

'जो केवल (निर्गुण) परम शिव रूपी तत्त्व है, वह मैं ही हूँ अर्थात संसार में और मुझमें कोई भेद नहीं है।'

जैसा कि आपको ज्ञात है, काव्य मेरे विशिष्ट अध्ययन की वस्तु रही है परन्तु अब मुझे इससे अरुचि होने लगी है। दर्शन के अध्ययन की ओर अब मेरा झुकाव बढ़ गया है और बहुधा भर्तृहरि के इस कथन का स्मरण करता हूँ:-

"अकेला, कामनाओं से रहित, शान्तवृत्ति से केवल पाणिपात्र (हाथ ही पात्र है जिसका, अर्थात जो कोई पात्र न रखता हो) दिगम्बर के रूप में मैं कब होऊँगा हे भगवान शम्भु! मुझे बतलाओ जिससे कि मैं अपने कर्मों के फल को धोने में समर्थ हो सकूँ।

यदि मेरे मस्तिष्क की यही दशा बनी रही तो मैं सोचता हूँ मुझे शीघ्र ही अवकाश लेना पड़ेगा और जितनी जल्दी ऐसा हो उतना ही अच्छा है।

आपने एक बार मुझसे देहरादून में एक मकान बनाने की इच्छा व्यक्त की थी। क्या आपने उसका विचार छोड़ दिया है? पेन्शन के हकदार हो जाने के लिए आपको कितने वर्ष और शेष हैं?

पिछले सात मास से मैं लुई कोने[1] की जल-चिकित्सा पर हूँ। प्रतिदिन मुझे अनेक प्रकार के स्नान करने पड़ते हैं। केवल फलों और रोटी-दाल पर रहना पड़ता है। बड़ा ही साधारण भोजन है—न घी, न दूध.........

(अपूर्ण)

---

1. जर्मन लेखक लुई कोने के अंग्रेजी अनुवाद का हिन्दी-अनुवाद द्विवेदीजी ने "जल चिकित्सा" नाम से छपवाया था; (इंडियन प्रेस. इलाहाबाद, सन् १९०७)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Repld. (51) Jhansi
7.6.03 5.6.1903

My dear Panditjee,

Your Udgar Chikitsa is very amusing. It is perfectly curative of the itching from which the Vyakarni appears to be suffering. I shall print it in Saraswati, but I think it should appear in the Prayag Samachar so that the readers of व्याकरणी may be able to enjoy it to the fullest extent.

About 2 weeks ago one Pandit Ram Chandra Shukla wrote to me from Mirzapur whether I would publish a poem in Saraswatee on you. I said in reply that I would first like to see the poem before giving a definite reply. But I at the same time added, that you and I are friends and as this fact is known to readers of Hindi newpapers generally it would look rather odd if I printed your eulogy, for a friends praise is often misunderstood and if the poem is an attack on you I would then most decidedly decline to publish it. I did not however get a reply to my letter and I do not know what became of that poem. It is possible this व्याकरणी may be Ram Chandra Shukla—But this only a press (presumption).

Hoping you are doing well.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उत्तर दिया
७.६.०३

झांसी
५ ६ १६०३

प्रिय पंडितजी,

आपकी 'उद्गार चिकित्सा'[1] बड़ी मनोरंजक है। जिस खुजलाहट से व्याकरणी व्याकुल मालूम पड़ते हैं उसके लिए यह रामबाण है। मैं इसे 'सरस्वती' में छापूँगा, पर सोचता हूँ कि इसे 'प्रयाग समाचार' में निकलना चाहिए ताकि 'व्याकरणी' के पाठक उसका पूर्ण आनन्द ले सकें।

कोई दो सप्ताह पूर्व मिर्ज़ापुर से पंडित रामचन्द्र शुक्ल[2] नामक एक व्यक्ति ने मुझे लिखा था कि क्या मैं आपके ऊपर 'सरस्वती' में एक कविता प्रकाशित कर दूँगा। उत्तर में मैंने लिखा कि निश्चित उत्तर देने से पूर्व मैं कविता को देखना चाहूँगा। परन्तु साथ ही मैंने यह भी लिख दिया कि मैं और आप मित्र हैं और चूँकि यह तथ्य हिन्दी समाचार पत्रों के पाठकों को ज्ञात है अतः सामान्यतः यह थोड़ा अटपटा लगेगा यदि मैंने आपकी स्तुति छापी, क्योंकि एक मित्र की प्रशंसा को बहुधा ग़लत समझ लिया जाता है और यदि वह कविता आपके विरुद्ध हुई फिर तो निश्चय ही मैं उसे छापने से रहा। मुझे मेरे पत्र का उत्तर नहीं मिला है और मुझे ज्ञात नहीं कि उस कविता का क्या हुआ? सम्भव है कि यह 'व्याकरणी' रामचन्द्र शुक्ल हो-परन्तु ऐसा मेरा अनुमान ही है।

आशा है आप प्रसन्न होंगे।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

---

1. पं० कामता प्रसाद गुरु एवं पं० श्रीधर पाठक के बीच एक मनोरंजक साहित्यिक संघर्ष हुआ था। श्री रामेश्वर प्रसाद गुरु लिखते हैं—
"वैद्यरत्न जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल प्रयाग से 'प्रयाग-समाचार' निकालते थे। बात सन् १९०२ के लगभग की है। उन दिनों स्व० पं० श्रीधर पाठक खड़ी बोली के सर्वोत्तम (Premier) कवि माने जाते थे। कुछ नौसिखिये भी आजकल के समान पद्य रचना करते थे। इन लोगों को लक्ष्य कर पिताजी ने 'उद्गार' शीर्षक पर कुछ पद्य लिखे, जो 'प्रयाग समाचार' में छपे।

हाय हुई कविता तुकबन्दी
सड़ी हवा में सुगन्ध गन्दी।
करो लेखनी अपनी बन्द
श्रीधर को सौंपो सब छन्द।

शेष पृष्ठ १४८ पर देखें

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(52)

Cawnpore
30 11.1904

Recd. 6.12.

Repld. 6.12.

My dear Panditjee,

Your favour of 29th to hand. The further 2 copies of your poem to hand. The receipt of one I have already acknowledged.

I shall notice your poem in the Saraswati as soon as possible. Kindly show your pictures to the Manager of the Indian Press. If he considers them fit for reproduction, then please write a short descriptive note of them and thus greatly oblige us. Prose description will do.

I am obliged to you for your promise to contribute to Saraswati and shall be anxiously looking for a paper for the January issue articles for which would go about the 7th Decr.

Yours very sincerely
M. P. Dwivedi

कविता के नीचे पिताजी का नाम नहीं था। पाठकजी ने इसका उत्तर 'उद्गार चिकित्सा' नाम से 'प्रयाग समाचार' में छपवाया कि–

कविता नई निराला छन्द, दालभात में मूसरचन्द।
लिखो, न करो लेखनी बन्द, श्रीधर सम सब कवि स्वच्छन्द।

'प्रयाग समाचार' बड़े चाव से पढ़ा जाने लगा और कुछ खलबली सी मच गई। तारीफ यह थी कि विश्वास पूर्वक कोई नहीं जानता था कि लिखने वाले कौन हैं" ? आदि। विस्तृत जानकारी के लिए देखें- 'श्री गुरु-स्मृति ग्रंक'–युगारम्भ, सम्पादक-ब्यौहार राजेन्द्रसिंह भाग १, ग्रंक ६ मानस-मन्दिर, साहित्य प्रेस, जबलपुर (२७ अगस्त, १९४७),

2. बाद में हिन्दी के प्रसिद्ध आलोचक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राप्त ६.१२ कानपुर
उत्तर दिया ६.१२ ३०.११.१९०४

प्रिय पंडितजी,

आपका २९ ता० का कृपापत्र मिला। आपकी कविता की दो और प्रतियाँ मिलीं। एक की पहुँच की रसीद पहले ही भेज चुका हूँ। जितनी जल्दी हो सकेगा मैं 'सरस्वती' में आपकी कविता की चर्चा करूँगा।

कृपया अपनी फोटो 'इंडियन प्रेस' के व्यवस्थापक को दिखला दें। यदि वे उन्हें पुनर्मुद्रण योग्य समझें तो कृपया उन पर एक छोटी सी विवरणात्मक टिप्पणी लिखकर हमें अनुगृहीत करें। गद्य विवरण चलेगा।

'सरस्वती' के लिए रचनाएँ भेजने के आपके वचन से मैं उपकृत हूँ और उत्सुकता से जनवरी के अङ्क के लिए एक लेख की प्रतीक्षा करूँगा, जिसके लिए लेखादि ७ दिसम्बर के आसपास चले जाएँगें।

आपका अति विश्वस्त
म० प्र० द्विवेदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

India Post Card

(53)

Cawnpore
29.12.1904

My dear Panditjee,

I beg to acknowledge the receipt of a copy of your 'काश्मीर सुषमा' and to express my sincere thanks for the same. I have gone through it. It is a very delightful reading.

Yours very sincerely
M. P. Dwivedi

Pandit Sridhar Pathak
Secretariat office
Allahabad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कानपुर
२६.१२.१६०४

प्रिय पंडितजी,

आपकी 'काश्मीर सुषमा' की एक प्रति की प्राप्ति पर हार्दिक धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। मैंने उसे पढ़ डाला है। बड़ी ही रोचक है।

आपका अति विश्वस्त
म० प्र० द्विवेदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(54)

Dowlatpur
16.3.1906

My dear Panditjee,

Many thanks for your further post card. In writing the remarks alluded to by you, my only object—my only intention was to show that I did not mind the scurrilous outpourings of my critic, when persons of so high attainments and learning like your own goodself appreciated my essay. Let me repeat I had no other motive. Of this please-rest assured. You must have noticed, your views have been misrepresented in the last issue of the Bharat-Mittra in so far as your opinion about Atmaram's criticism has been withheld.

Yours very sincerely
M. P. Dwivedi.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दौलतपुर
१६.३.१६०६

प्रिय पंडितजी,

आपके दूसरे पोस्टकार्ड के लिए अनेक धन्यवाद। जिन टिप्पणियों का आपने उल्लेख किया है उनको वैसा लिखने के पीछे मेरा यही उद्देश्य और अभिप्राय था कि मैं अपने आलोचक के अनर्गल प्रलाप की कतई परवाह नहीं करता, जब कि आप जैसे उच्च ख्याति प्राप्त व्यक्ति और विद्वान ने मेरे लेख की सराहना की है। मैं इस कथन को दोहराता हूँ कि इसके अतिरिक्त और मेरा कोई उद्देश्य नहीं था। आप विश्वास रखें। आपने देखा होगा कि 'भारत-मित्र' के पिछले अङ्क में आपके विचारों को इस सीमा तक तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया है कि आत्माराम[1] की आलोचना पर आपकी सम्मति को आगे नहीं आने दिया गया।

आपका अति विश्वस्त
म० प्र० द्विवेदी

---

1. नवम्बर १९०५ की 'सरस्वती' में द्विवेदीजी ने 'भाषा और व्याकरण' शीर्षक से एक लेख लिखा था जिसमें उन्होंने 'अनस्थिरता' शब्द का प्रयोग कर दिया था। इसी शब्द को ले 'भारत-मित्र में 'भाषा की अनस्थिरता' शीर्षक से एक लेखमाला आत्माराम (बालमुकुन्द गुप्त ?) के नाम से निकली थी जिसमें द्विवेदीजी के लेख की खिल्ली उड़ाते हुए बड़ी कटु आलोचना की गई थी। द्विवेदीजी घबड़ा गए थे। आत्माराम की इस बौछार के उत्तर में द्विवेदीजी ने पाठकजी के उस निजी पत्र का भी उपयोग किया था जिसमें उन्होंने द्विवेदीजी के लेख की प्रशंसा कर दी थी। परन्तु द्विवेदीजी को यह शिकायत रही कि 'भारत-मित्र' ने पाठकजी के इस पत्र के आशय को अपने ढंग से हेरफेर करके प्रस्तुत किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

East India Post Card

(55)

Juhi, Cawnpore
8.4.1912

Dear Panditjee.

Your post card of 7th. Many thanks for the two copies of your वनाष्टक. I always like your poetry.

I regret I have no copy of मंजूषा available. I got only a few copies from the publishers which all have been sold. The advertisment in the Saraswati (last issue) was inserted by mistake.

Yours very sincerely
M. P. Dwivedi

Pandit Sridhar Pathak
103 & 115, Lukerganj,
Allahabad.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईस्ट इंडिया पोस्ट कार्ड

जूही, कानपुर
८.४.१९१२

प्रिय पंडितजी,

आपका दि० ७ का पोस्टकार्ड मिला। आपकी 'वनाष्टक' की दो प्रतियों के लिए अनेक धन्यवाद। मैं सदैव आपकी कविता को पसन्द करता हूँ।

मुझे खेद है कि मेरे पास 'मंजूषा' की कोई प्रति उपलब्ध नहीं है। प्रकाशकों से मुझे चन्द प्रतियाँ मिली थीं। वे सब बिक चुकी हैं। 'सरस्वती' के पिछले अङ्क में भूल से विज्ञापन कर दिया गया था।

आपका अति विश्वस्त
म० प्र० द्विवेदी

---

1. काव्य-मंजूषा। देखें टिप्पणी पृ० ८१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(56)

Jhansi
22.12.1899

My dear Sridharjee,

I have received your letter of the 19th. You have done very well in sending your Ghana Vinay to the Press. I shall be very glad to see it printed soon. You call it a jingling of words. Be it so. My own opinion is that the jingling of words is very much superior to what is passing for poetry in these days and the sooner the people come to realize its value the better.

You do not say whether the defects of Babu Sitaram's version of Kalidas etc. exposed by me are correct. Can I make use of your opinion in the preface to my criticism of this gentleman's translation which I propose to publish in a book form sooner or later? I have finished my review of his Raghuvansa and will now take his Meghduta in hand. I will send the former to you very shortly.

I would propose for your consideration the desirability of your criticising his नाटक मणि माला. It is worse than Kalidass. If I take up that series also, people will think that I am too much after him, whereas the case will be different if you criticized them.

Yours very sincerely
M. P. Dwivedi

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झांसी
२२.१२.१८६६*

प्रिय श्रीधरजी,

आपका दि० १६ वाला पत्र मुझे मिल गया ।

आपने अपने 'घन विनय'1 को प्रेस में भेजकर बहुत अच्छा किया। इसे शीघ्र ही मुद्रित देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी । आप इसे शब्दों की झनझनाहट मानते हैं। यही सही । मेरी अपनी राय तो यह है कि कविता के नाम पर आजकल जो कुछ निकल रहा है उसकी तुलना में तो यह कहीं अधिक श्रेष्ठ है। जितनी जल्दी लोग इसका महत्व समझ लें उतना ही श्रेयस्कर है।

बाबू सीताराम के कालिदास के अनुवादों पर मेरे द्वारा बतलाए गए दोषों के औचित्य पर आपने कुछ नहीं कहा। क्या मैं इन महाशय के अनुवाद पर की गई अपनी आलोचना की प्रस्तावना में आपकी राय का उपयोग कर सकता हूँ ? इसे मैं पुस्तक के रूप में देर-सवेर प्रकाशित करना चाहता हूँ। मैंने उनके 'रघुवंश' पर अपनी समीक्षा लिख डाली है। अब उनका मेघदूत उठाऊँगा। (रघुवंश) की समीक्षा मैं शीघ्र ही आपके पास भेजूँगा।

आपके द्वारा उनके 'नाटक मणिमाला' की आलोचना किए जाने के औचित्य के सम्बन्ध में विचार करने का मैं आपके सम्मुख प्रस्ताव रखता हूँ। यह तो कालिदास से सम्बन्धित उनके लिखे से भी निकृष्ट है। यदि मैंने यह सिलसिला भी उठा लिया तो लोग यही समझेंगे कि मैं हाथ धोकर पीछे पड़ा हूँ, जबकि आप द्वारा आलोचना किया जाना दूसरी बात है ।

आपका अति विश्वस्त
म० प्र० द्विवेदी

---

1. सम्वत् छप्पन के अकाल पर लिखित पाठकजी की कविता। 'मनोविनोद' पृ०४५-५० प्रयाग, १९१७.

*इस पत्र को दसवें पत्र के पहले एवं अंतिम पत्र (५७) को पैंतीसवें पत्र के बाद प्रस्तुत होना चाहिए था। इन्हें अन्त में इस कारण देना पड़ा क्योंकि इनकी केवल टंकित प्रतियां मुझे विलम्ब से एक बस्ते में प्राप्त हुई। पाठकों से एक निवेदन और—कुछेक पत्रों को जहाँ-जहाँ से दीमक ने खा लिया है वहाँ '......' चिह्न लगा दिए गए हैं, यद्यपि अधिकांश स्थल ऐसे हैं कि लिखी बात सरलता से पकड़ में आ जाती है।

GC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(57)

Jhansi
8.11.1900

My dear Panditjee,

I sent you a letter yesterday. In the evening I received your note and the copy of your letter to Rae Devi Prasad.

Rae Sahib sent the letter to me to read. I read and posted it This course I followed in one or two previous occasions also. I never asked that the correspondence should pass through me but as Rae Sahib desired that I should see his reply I had to submit to him.

I asked you to stop the discussion because it was growing rather hot. The same thing I told to Rae Sahib and wrote to him more than once to drop the matter.I am not at all in favour of such discussions between friends. In my last letter I wrote to Rae Sahib to say that had this discussion been carried on in a newspaper it would have been better as the public would have benefitted by it. But as the matter stood it was not advisable to carry the correspondence further.

I sent you my review of Lala Sitaram's works for your perusal and opinion and all the suggestion that you made were thankfully carried out by me. Similarly I sent some of my pieces of poetry to Rae Saheb for his opinion. He made suggestions and I accepted them. And so I think others also should do.

From the very beginning I discouraged the correspondence between Rae Saheb and yourself not for any other reason but because it was not conducive of friendly relations.

I hope this matter would not make any unfavourable impression upon you as far as I am concerned. Your letter (last) was not worded as usual and this shows that you are displeased. Well, I beg your pardon if I did anything amiss and remain

Yours very sincerely
M. P. Dwivedi.

Pt. Sridhar Pathak
Pannigali
Agra.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झांसी
८.११.१९००

प्रिय पंडितजी,

आपके नाम मैंने कल एक पत्र भेजा है। शाम को मुझे आपकी टिप्पणी एवं राय साहब के नाम आपके पत्र की प्रतिलिपि मिली।

राय साहब ने पढ़ने के लिए मुझे एक पत्र भेजा था। मैंने पढ़ कर डाक से भेज दिया। ऐसा मैंने पहले भी दो-एक बार किया था। मैंने उनसे कभी भी यह नहीं कहा कि (यह) पत्राचार मेरे माध्यम से किया जाय किन्तु राय साहब की इच्छा थी कि मैं भी उनका उत्तर पढ़ लूँ। मुझे स्वीकार करना पड़ा।

विवाद को समाप्त करने के लिए मैंने इसलिए आपको कहा था क्योंकि वह गर्मा-गर्मी का रूप लिए जा रहा था। यही बात मैंने रायसाहब से भी कही और एक छोड़ अनेक बार उनसे इस प्रसङ्ग को समाप्त करने के लिए लिखा। मित्रों के बीच ऐसे वाद-विवाद का मैं कतई पक्षधर नहीं हूँ। अपने पिछले पत्र में मैंने राय साहब को लिखा था कि यदि यह विवाद किसी समाचार पत्र में छपता तो वह अपेक्षाकृत कहीं अधिक उपयुक्त रहता क्योंकि उससे तो पाठकों को भी लाभ पहुँचता। किन्तु परिस्थितियों को देखते हुए इस पत्राचार को आगे बढ़ाना उचित नहीं।

लाला सीताराम की कृतियों पर अपनी समीक्षा मैंने आपके अवलोकनार्थ एवं विचारार्थ भेजी थी। आपने जो सुझाव दिए उन सबकी सधन्यवाद मैंने अनुपालना की है। इसी प्रकार मैंने राय साहब को अपनी कविता के कुछ अंश उनकी राय जानने हेतु भेजे थे। उन्होंने सुझाव दिए जिन्हें मैंने स्वीकार किया। ऐसा ही औरों को भी करना चाहिए।

ठेठ से ही मैं आपके और राय साहब के मध्य चल रहे पत्राचार को प्रोत्साहित करने के विरुद्ध था। कारण और कुछ नहीं केवल यही कि इससे मैत्री भाव पर आँच आती है। आशा है कि जहाँ तक मेरा प्रश्न है यह विषय आप पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं डालेगा। आपके पिछले पत्र की भाषा सदा की भाँति लिखे जाने वाले आपके पत्रों जैसी न होने से लगता है कि आप अप्रसन्न हो गए हैं। ख़ैर, यदि मुझसे कोई चूक हो गई हो तो आपसे क्षमा माँगते हुए मैं रहा

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद द्विवेदी

पं० श्रीधर पाठक
पन्नी गली
आगरा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हमारी अन्तिम योजना :

श्रीधर पाठक ग्रन्थावली

शीर्षक	वर्ष (ई० सन्)
एकान्तवासी योगी	१८८६
ऊजड़ ग्राम	१८८९
श्रान्त पथिक	१९०२
मनोविनोद (पद्य में) (१४८ शीर्षकों पर कविता)	१८७७-१९१७
जगत सचाई सार	१८८७
काश्मीर सुषमा	१९०४
आराध्य शोकाञ्जलि	१९०६
जार्ज वन्दना	१९१२
श्री गोखले प्रशस्ति	१९१५
श्री गोखले गुणाष्टक	१९१५
व्योम वीणा	१९१६
सांध्य-अटन	१९१८
अटवि-अटन	१९१८
बंक–मयंक	१९१८
विज्ञान–मंगल	१९१५-१९२०
मजदूरनियों के लिए (बलि बलि जाऊँ)	१९१७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत-गीत (६० शीर्षकों पर कविता; अधिकांशतः राष्ट्रीय कविताएँ)	१८८२-१९२७
देहरादून	१९१५
परिवर्तन-तत्त्व	१९२५
स्व-जीवनी (अपूर्ण) (गद्यमय-पद्यता, पद्यमय-गद्यता मद्यता से मिलित)	१९२७
तिलिस्माती मुँदरी (कहानी)	१९१६
बाल-भूगोल	१८८५
मनोविनोद (गद्य में) (५० लेखों का संग्रह जिन्हें संकलित एवं संशोधित कर पृथक् से छपवाने की लेखक की योजना थी)	१८८४-

इसके अतिरिक्त विविध सामग्री के अन्तर्गत ग्रंत में :—

अनेक महत्वपूर्ण अप्रकाशित पत्र एवं प्राचीन डायरियों से चुने गए ग्रंश, दुर्लभ संस्मरण, दुर्लभ चित्र, आदि-आदि ग्रंथावली की उपयोगिता में और सहायक होंगे।

इस आशा के साथ,

राम प्यारी पाठक
व्यवस्थापक
गिरिधर-प्रकाशन
जोधपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(58)

Jhansi
4-1-1900

My dear Sridharjee,

Yours of the 2nd. Thanks for your Hemant. It is most timely. The 20th line is :

पियहिँ प्रेम मकरन्द मन्द गज गामिनी

Is this the line you mean. If so, it is not altogether meaningless as you say. It is however somewhat objectionable and you can substitute it by another line saying something about the cold and lengthy nights, ending the line in यामिनी. It would be a very good thing if you write out short descriptions of other seasons as well and then publish them all in a book form. I would also ask you to complete your version of Ritu Samhar as soon as you find it convenient to do so.

I do not want any more copies of Hemant but please send me 2 copies more of your Hermit. Those sent by you have already been disposed of.

I am sending you a copy of my criticism on Hindi Reader no III. Its language is no doubt not very agreeable, specially to the revisers but I doubt whether it is scurrilous. Will you please let me know what your opinion is about it.

Baboo Balmukund has given us best compliments in the last issue of the Bharat Mittra. Did you write for Lala Sitaram's version of Kalidass and if so have you recd. the books ?

I thank you very much for what you have said in your letter about Girija Datta. His M.A. Examination will be over on the 10th instant. He is at Allahabad just now.

Yours very sincerely

M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
४–१–१९००

प्रिय श्रीधरजी,

आपका दि० २ का पत्र मिला। 'हेमन्त'[1] के लिए धन्यवाद। यह बहुत समयोचित रहा। बीसवीं पंक्ति इस प्रकार है :–

'पियहिं प्रेम मकरन्द मन्द गज गामिनी'[2]

क्या इसी पंक्ति की ओर आपका संकेत है? यदि हाँ, तो आप इसे एकदम निरर्थक क्यों समझते हैं? हाँ, कुछ आपत्तिजनक भले ही समझा जाय। आप इसके स्थान पर कोई ऐसी दूसरी पंक्ति रच लें जिसमें शीतल और लम्बी रातों का हवाला हो और उसकी समाप्ति 'यामिनी' से हो। बहुत अच्छा रहेगा यदि आप दूसरी ऋतुओं पर भी ऐसे संक्षिप्त वर्णन लिखकर पुस्तकाकार छपवा दें। यह भी चाहूंगा कि आप 'ऋतुसंहार' के अनुवाद को सुविधानुसार शीघ्र पूरा करें।

'हेमन्त' की और प्रतियों की मुझे आवश्यकता नहीं किन्तु कृपया अपने 'हरमिट' की दो प्रतियां और भेज दें। आपने जो भेजी थीं वे तो ठिकाने लग गईं।

मैं तीसरी हिन्दी पाठ्य पुस्तक की अपनी समीक्षा की एक प्रति आपके पास भेज रहा हूँ। इसकी भाषा, विशेष कर पुनरीक्षकों को बहुत जंचेगी तो नहीं किन्तु उसमें कोई भद्दापन भी नहीं है। इस सम्बन्ध में क्या आप अपनी राय बतलाने की कृपा करेंगे।

'भारत मित्र' के पिछले अङ्क में बाबू बालमुकुन्द ने हम लोगों को भरपूर सराहा है। क्या आपने लाला सीताराम कृत कालिदास के अनुवाद के लिए लिखा था? यदि, हाँ, तो क्या वे पुस्तकें प्राप्त हो गई हैं?

आपने अपने पत्र में गिरिजादत्त के सम्बन्ध में जो लिखा है उसके लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ। उसकी एम. ए. की परीक्षा दि० १० को समाप्त हो जावेगी। इस समय वह इलाहाबाद में हैं।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

---

1. 'गुनवन्त हेमन्त', मनोविनोद १९१७, पृ० ७२-७३।
2. बीसवीं न होकर 'हेमन्त' की तेईसवीं और चौबीसवीं पंक्तियाँ इस प्रकार पाई जाती हैं :–

"सेवहिं सुखित इकन्त कन्त कुल-कामिनी
दम्पति-प्रनय-पुनीत रीति-अनुगामिनी"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(59)

Jhansi
10-2-1900

My dear Panditjee,

I am much obliged to you for writing to Bharat Mittra about the article which appeared in the last number of that paper.

My review will be printed at the Merchant Press Cawnpore. The proprietor is my friend. He has too much work to do and I fear it would be several months before I could expect the book to be completely printed, but there is no help.

I am glad you are getting out your Mano-Vinode. The Rajputa Press is a great help to you.

With due deference to the opinion expressed by my Pleader all the same I wish you would kindly go through my review of ऋतुसंहार and रघुवंश and make such suggestions as you deem proper. The same you have already seen but on hearing from you, I will send it again with the other review. There is nothing defamatory in them as they stand but I know your suggestions will be very valuable. I will see my Pleader friends again with your suggestions and adopt them with their consent.

The review of मेघदूत will be finished in about a week surely. I see Baboo Balmukund is a man not to be trusted While his article against me was under print he wrote to me without giving any hint about it and asked me as he did in your case to write something for the Holi number of the Bharat Mittra. I have send in reply that he perhaps wants something very witty and comic for the Holi and that I am not the fittest person to produce such pieces of poetry. I might have sent him something but I would do nothing of the kind since he has been so unreasonable towards me so much so that he did not hesitate in mentioning even your name in that article.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी

१०–२–१६००

प्रिय पण्डित जी,

'भारत मित्र' पत्र के पिछले अङ्क में प्रकाशित लेख के सम्बन्ध में उनको लिखने के लिए मैं आपका बहुत आभारी हूँ।

मेरी समालोचना कानपुर के 'मर्चेन्ट प्रेस' में छपेगी। उसके मालिक मेरे मित्र हैं। वे काम से लदे हुए हैं और मुझे इस बात की आशंका है कि मेरी पुस्तक के छपने में कई महीने लग सकते हैं।

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप अपना 'मनोविनोद' निकाल रहे हैं। 'राजपूत-प्रेस' से आपको बड़ी सुविधा प्राप्त है।

अपने वकील की सलाह को यथोचित सम्मान देते हुए मेरी इच्छा है कि आप कृपाकर ऋतु संहार और रघुवंश की समालोचना को देख जावें और जो सुझाव देना आप उचित समझें, दें। इन्हें आप देख तो चुके हैं किन्तु आपसे सूचना पाकर मैं (उस) दूसरी समीक्षा के साथ इसे पुनः भेज दूंगा। इनमें कोई निंदात्मक बात नहीं है किन्तु मैं जानता हूं कि आपके सुझाव बड़े मूल्यवान रहेंगे। आपके सुझावों के साथ मैं अपने वकील मित्रों से फिर मिलूंगा और उनकी सहमति होने पर इन्हें अपना लूंगा।

'मेघदूत' की समालोचना निश्चय ही कोई एक सप्ताह में पूरी हो जावेगी।

बाबू बालमुकुन्द मुझे विश्वसनीय व्यक्ति नहीं लगते हैं। जब मेरे विरुद्ध उनका लेख छपने को था, उन्होंने, जैसा कि आपके साथ हुआ इसकी भनक दिये बग़ैर 'भारत मित्र' के होली अङ्क के लिए मुझसे कुछ सामग्री मांगी है। उत्तर में मैंने लिख दिया है कि सम्भवतः वे होली पर कोई बड़ी चटकीली और ठिठोली भरी रचना चाहते हैं किन्तु ऐसी कविता के लिए मेरा चयन कतई उपयुक्त नहीं है। मैं उन्हें कुछ भेज भी देता किन्तु अब तो भेजने से रहा क्योंकि मेरे प्रति वे इतने विवेकहीन रहे हैं कि उस लेख में आपका नामोल्लेख करने में भी वे नहीं झिझके।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

I have translated in your 'खड़ी बोली' the 1st canto of कुमार सम्भव one instalment of which I have already sent to Bharat Mittra. This being the case I shall have to send the remaining of it but to tell you the truth this gentleman (?) has no sense of delicacy and I am afraid I shall have to discontinue sending my contributions, although I have not yet decided to do so. I am waiting for a reply from him.

Yours very sincerely
M. Prasad

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आपकी 'खड़ी बोली' में मैंने 'कुमार सम्भव' के पहले सर्ग का अनुवाद किया है जिसकी एक क़िस्त मैं 'भारत मित्र' को भेज भी चुका हूं। ऐसी सूरत में मुझे इसका शेष भाग भी वहीं भेजना होगा किन्तु सच कहूं तो इस भले आदमी (?) का शिष्टाचार से कोई लेना देना नहीं और लगता है कि मुझे अपनी रचनाओं को वहाँ भेजना बन्द करना पड़ेगा यद्यपि मैंने ऐसा करने पर अभी कोई निर्णय नहीं लिया है। उनके उत्तर की मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

आपका अति विश्वस्त

म० प्रसाद

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(60)

Jhansi
14-12-1900

My dear Panditjee,

Your post card and letter both to hand.

I have read the 11th number of सरस्वती with great pain and surprize In many instances I do not agree with your critics remarks. He has found faults with your lines in connection with यतिभङ्ग but in going to translate the first few lines of the Hermit he himself has made more than one mistake of that kind. Then the line × × अतिथि-समादर होता है has no यति भङ्ग nor the line ending in मृणाल has any कर्णकटु words. I do not know what is (this) खंडितोपमा is. I am in the affix. When I go home in the evening I will refer to my books and let you know tomorrow about it. I think it is only right for you to defend yourself where you consider it necessary. I would have been very glad to write something on your behalf but I am debarred from doing so on account of the friendly relations which exists between P. Shyam Behari and myself. I shall however write to him, when I differ from him, as he has asked me in one of his letters to give my opinion.

I have kept back the 4th canto of Kumar. I was at the point of sending it to the Bharat Mittra first but then I thought I should do so when I have finished the 5th canto also. But under the present circumstances I have stopped all brain work.

Thanks for your advice to use बादाम का हलुवा. I always do this in the morning.

I shall write to you again tomorrow. Please await a further letter from me.

Yours very sincerely
M. Prasad

I used unknowingly 2 sheets of paper in writing this letter. You can judge in what state my mind is—I found this mistake when closing the letter.

M. P.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

झाँसी
१४-१२-१९००

प्रिय पंडितजी,

आपका पोस्टकार्ड और पत्र दोनों मिल गए।

'सरस्वती' का ग्यारहवाँ अङ्क पढ़कर मुझे बड़ा कष्ट और अचम्भा हुआ। अनेक स्थलों पर मैं आपके आलोचक के लिखे से सहमत नहीं हूँ। 'यतिभङ्ग' को लेकर उन्होंने आपकी पंक्तियों में दोष पाया है किन्तु 'हरमिट' की आरंभिक पंक्तियों का अनुवाद करते हुए उन्होंने स्वयं एक छोड़ अनेक ऐसी भूलें की हैं। और फिर '× × अतिथि समादार होता है' पंक्ति में 'यतिभङ्ग' जैसी कोई बात भी नहीं और न ही 'मृणाल' से समाप्त होंने वालो पंक्ति में कोई कर्णाकुटता है। यह 'खंडितौपमा' क्या बला है—मैं नहीं जानता हूँ। पशोपेश में हूँ। शाम को घर पहुँच कर मैं अपनी पुस्तकें टटोलूंगा और इस सम्बन्ध में कल आपको लिखूंगा। जहाँ आवश्यक समझें अपने पक्ष के सम्बन्ध में आपका लिखना मैं उचित ही मानता हूँ। आपकी ओर से कुछ लिखने में मुझे बड़ी प्रसन्नता होती किन्तु मेरी और पं० श्याम बिहारी के बीच मैत्री सम्बन्ध होने से मैं ऐसा करने से वंचित हो जाता हूँ। फिर भी क्यों कि उन्होंने अपने एक पत्र में मेरी राय जाननी चाही है अतः जहाँ मैं उनसे असहमत हूंगा उन्हें लिख दूंगा।

'कुमार' के चौथे सर्ग को मैंने रोक रखा है। पहले मैं उसे 'भारत-मित्र' को भेजने ही वाला था पर सोचा कि पांचवे सर्ग को पूरा कर लेने पर ही वहाँ भेजना चाहिए। किन्तु वर्तमान परिस्थितियों में मैंने सभी दिमाग़ी काम छोड़ रखे हैं।

बादाम का हलुवा प्रयोग करने के लिए आपके सुझाव के लिए धन्यवाद। रोज़ सबेरे मैं नियमित लेता हूँ।

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद

इस पत्र को लिखने में अनजाने ही मैंने दो पन्ने प्रयोग में ले लिये हैं। इसीसे आप अनुमान लगा सकते हैं कि मेरे मस्तिष्क की क्या दशा है? इस पत्र को समाप्त करते समय यह भूल पकड़ में आई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(61)

Bombay
16th February, 1901

My dear Panditjee,

Your letter of the 12th instant has been redirected to me here at Bombay where I arrived on the 11th instant. If my memory serves me well I sent you a card the next day of my arrival here. Kindly let me know if you have received it.

Our friendship is eternal. Nothing can विभक्त it. These are the words you wrote to me in one of your letters. I therefore simply repeat them.

I have not recd. the 1st number of the 2nd vol. of the Saraswati. It would be redirected from Jhansi. I do not therefore know what this सूचना is but if Pandit Shyam Behari says any such things as to wound your feelings he would be amply rewarded in return by you. This is sure and certain.

I am in a death trap here. My mind is very much disturbed. I have no books with me. As far as I remember there was very little or nothing in your साहित्य समालोचना to which I could take exception, but if you will kindly let me know on which particular points you want my opinion I shall give it at once and without bias or reserve.

The G.T. Manager tells me that my stoppage here is only temporary but I do not know when I shall get permission to leave Bombay. I am trying to secure a house in the suburb and if successful will remove there. Plague is on the increase here.

With best wishes.

Yours very sincerely
M. Prasad
General Traffic Managers Office
G.I.P. Railway, Bombay.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बम्बई
१६ २.१६०१

प्रिय पंडित जी,

आपका दि० १२ वाला पत्र यहाँ बम्बई के पते पर भेज दिया गया जहाँ मैं दि० ११ को पहुंचा हूँ। यदि मेरी याददाश्त ठीक है मैंने यहाँ पहुँचते ही आपके नाम एक कार्ड भेजा था। कृपया सूचित करें कि आपको मिल गया ?

हमारी मैत्री अनन्तकालीन है। इसे कोई विभक्त नहीं कर सकता है। ये शब्द आपने अपने एक पत्र में मुझे लिखे थे। मैं मात्र इन्हें दोहराए देता हूं।

'सरस्वती' के भाग २ का प्रथम अङ्क मुझे नहीं मिला है। उसे झाँसी से यहाँ भेजा जावेगा अतः इस 'सूचना' के सम्बन्ध में मुझे कुछ पता नहीं किन्तु यदि पंडित श्याम बिहारी कोई ऐसी बात कहते हैं जिससे आपकी भावनाओं को ठेस पहुंचती हो तो उन्हें उत्तर में आपसे पर्याप्त प्रसाद मिल जावेगा। यह पक्की बात है।

यहाँ मैं मौत के घेरे में हूँ। मेरा मस्तिष्क बड़ा क्षुब्ध रहता है मेरे पास पुस्तकें भी नहीं। जहाँ तक मुझे स्मरण है आपकी 'साहित्य-समालोचना' में तनिक या कतई ऐसा कुछ नहीं था जिसे मैं आपत्ति के रूप में लेता। किन्तु यदि आप कृपा कर मुझे बतला दें कि किन विशेष मुद्दों पर आप मेरी राय चाहते हैं तो मैं बिना किसी लाग-लपेट या संकोच के तत्काल ही अपने विचार व्यक्त कर दूंगा।

'ग्रैन्ड ट्रंक' (रेलवे) के प्रबन्धक मुझसे कहते हैं कि मेरा यहाँ का ठहराव केवल अल्प अवधि के लिए है किन्तु मुझे पता नहीं कि बम्बई छोड़ने की अनुमति कब मिलेगी ? मैं नगर के बाहरी भाग में कोई मकान लेने की कोशिश में हूं। सफलता मिली तो वहाँ चला जाऊँगा। प्लेग यहाँ फैलता जा रहा है।

शुभ कामनाओं सहित

आपका अति विश्वस्त
म० प्रसाद
जनरल ट्राफिक मैनेजर कार्यालय
जी० आई० पी० रेलवे, बम्बई

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(62)

Agra
19-12-1899

Dear Mahavirji,

I am glad to inform you that I completed my घनविनय on 16th instt: in 116 lines. Although I am sure there is less of poetry in it than of word jingling, yet something—it may be variety or something worse—prompts me to publish it in pamphlet form—So I have already sent it to Press—You will be glad to know that I have replaced by more euphonious phraseology the t'd words you took exception to when perusing the poem at my house on 10th instt—I mean कठिन कटन छुन and अटूट.

Last night I enjoyed part of your Bacon and the whole of your review of Sitaram's Kalidas. While the former pleased me with its chaste style and elegant diction (not to speak of the charm owned by the subjects treated of) the latter failed not to fire my soul with indignation at Sitaram's audacious tampering with Kalidas which you have so successfully and scholastically exposed. A thousand pities that such literary vagaries and excrements as those noticed by you should be allowed to flourish unchallenged and unpunished by the Literary world. There is no doubt we are going down in a body.

These reviews of yours ought to have thrilled literate society long ago and drawn down its righteous wrath upon the head of the culprit. But no such thing has happened. How hapless !

I will return all your Mss. most probably tomorrow.

Yours very sincerely
Sridhara Pathaka

Pt. Mahavira Prasad Dwivedi
Jhansi

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आगरा
१६-१२-१८९९

प्रिय महावीर जी,

हर्ष के साथ आपको सूचित करता हूं कि मैंने दि० १६ को ११६ पंक्तियों में अपनी 'घनविनय' पूरी कर ली है। यद्यपि वस्तुतः इसमें काव्यत्व कम और शब्दों की झनकार अधिक है, फिर भी रंगारंगी या इससे भी कुछ घटिया ऐसी बात है जिसने मुझे इसे पैंफ्लेट रूप में प्रकाशित कराने को प्रवर्तित किया है और इसे मैं छपने को भेज भी चुका हूँ। १० तारीख़ को मेरे यहाँ इस कविता का वाचन करते समय आपने 'कठिन कटन छन' और 'अटूट' के प्रयोग पर आपत्ति की थी। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उनके स्थान पर अब मैंने और भी अधिक श्रुतिमधुर पदावली का विन्यास कर दिया है।

गत रात्रि मैंने आपके बेकन के कुछ अंश तथा सीताराम के कालिदास पर आपकी पूरी समीक्षा का आनन्द लिया। एक तरफ बेकन की विशुद्ध शैली एवं सुरुचिसंपन्न शब्द चयन (प्रयुक्त विषयों के अपने आकर्षण के अलावा) ने मुझे आनंदित किया तो दूसरी तरफ मेरी अन्तरात्मा को इस बात से गहरा आक्रोश भी हुआ कि सीताराम ने धृष्टतापूर्वक कालिदास के श्लोकानुवाद में अनधिकृत परिवर्तन कर डाले हैं। आपने बड़ी तार्किक और बौद्धिक सूक्ष्मता के साथ सफलता पूर्वक पर्दाफाश किया है। यह अत्यधिक खेद का विषय है कि ऐसी साहित्यिक सनक और विष्टा को साहित्यिक जगत् बिना चुनौती और दंडित किए पनपने दे रहा है। निस्संदेह ऐसे तो हम सभी का पतन हो रहा है।

आपकी इन समीक्षाओं से शिक्षित समुदाय को बहुत पहले पुलकित होकर दोषी के प्रति अपना सच्चा रोष भी व्यक्त कर देना चाहिए था पर दुर्भाग्यवश ऐसा कुछ भो तो नहीं हुआ।

पूरी संभावना है मैं आपकी सभी पांडुलिपियाँ कल तक लौटा दूंगा।

आपका अति विश्वस्त
श्रीधर पाठक

पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी
झांसी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(63)

Agra
26-12-1899

Dear Mahavirjee,

I have just recd. two copies of this weeks भा० मि० I really do not know how to express myself reg: the poem which you have published in it on my poetry for I am well aware that none of my performances deserve the praise which your beautiful septenary so graciously bestows on them. I however humbly accept it as a sevenfold blessing flowing from the never failing fountain of a friend's poetic heart; I take it as a warm encouragement to me in my literary undertakings.

With your poem appears my "Evangeline" (i.e. my rendering of it), which it will be noticed, has not been very correctly printed, due probably to want of good type in the भा० मि० Press or to carelessness of the proof examiners. However, I am not going to be hard on Lala Balmukund on that account. It will be observed that it is not actually a translation, it was composed before I commenced उजरगाम. If liked by the people, I will endeavour to bring it to completion. "शेष आगे" shd not have been omitted by the Press.

Your review of Sitaram's Kalidas is so interesting that I am going to send you a copy of his complete translation. I will go thro them with your review if I get them soon. Yes, you can insert extracts from my letters* in your preface to the Review. I shall however be glad if you will kindly let me see the proofs etc. So far as I am able to judge your criticisms are correct. It seems to me however that certain passages might well be omitted or altered. I will point them out to you if you will enable me to look at the proofs or I will do so shortly when returning the Ms.

Yours very sincerely
Sridhara Pathaka

*I shd like them to appear in a slightly modified form (in the preface)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आगरा
२६-१२-१८९९

प्रिय महावीर जी,

अभी अभी मुझे इस सप्ताह के 'भारत-मित्र' की दो प्रतियाँ मिली हैं। मेरे काव्य पर आपने जो कविता इसमें प्रकाशित की है उसके लिए वास्तव में कुछ कहने को मेरे पास शब्द ही नहीं हैं, क्योंकि मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मेरी कोई भी कविता उस प्रशंसा के योग्य नहीं है जैसा कि आपका सुन्दर 'सप्तक' उसे उदार भाव से प्रतिपादित कर रहा है। फिर भी मैं एक मित्र के काव्यमय हृदय के सतत प्रवहमान निर्झर से निकले 'सप्तक' की इस सप्तगुण माँगलिक अभिव्यक्ति को नम्रता पूर्वक स्वीकार करता हूं। इसे मैं अपने साहित्यिक उपक्रमों के लिए बेहद उत्साहवर्द्धक समझता हूँ।

आपकी कविता के साथ 'इवंजलाइन' का मेरा अनुवाद निकला है। यह पूरी तरह शुद्ध नहीं छपा है। 'भारत-मित्र' के मुद्रणालय में संभवतः अच्छे टाइप का अभाव है या फिर प्रूफ संशोधकों ने लापरवाही बरती होगी। खैर, इस बात को लेकर मैं लाला बालमुकुन्द के प्रति कठोर नहीं होना चाहता। ज़ाहिर है कि यह वास्तव में अनुवाद नहीं है। इसे मैंने 'ऊजर-गाम' शुरू करने से पहले लिखा था लोगों को रुचिकर हुआ तो मैं इसे पूरा करने की कोशिश करूंगा। प्रेस को 'शेष आगे' का संकेत करना नहीं भूलना चाहिए था।

सीताराम के 'कालिदास' की आपकी समीक्षा इतनी रोचक है कि मैं आपको उनके पूरे अनुवाद की एक प्रति भेजने वाला हूं। यदि मुझे यह यथाशीघ्र मिल सके तो इसे मैं आपकी समीक्षा के साथ साथ पढ़ डालूंगा। हां, आप अपनी समीक्षा की भूमिका में मेरे पत्रों* के अंश अवश्य उद्धृत कर सकते हैं। फिर भी यदि आप कृपा कर मुझे प्रूफ आदि दिखला दें तो ठीक रहेगा। जहाँ तक मैं आँक सका हूँ आपकी समालोचनाएँ सही हैं। तो भी मेरे हिसाब से कुछ अंश सुभीते से निकाले या बदले जा सकते हैं। यदि आप मुझे प्रूफ देखने देंगे तो मैं ऐसे स्थलों की ओर संकेत कर दूंगा, या फिर शीघ्र पाण्डुलिपियाँ लौटाते समय ही कर दूंगा।

आपका अति विश्वस्त
श्रीधर पाठक

*भूमिका में मैं इन्हें थोड़े परिवर्तन के साथ देखना चाहूंगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अभिमत———>

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पं० बनारसी दास चतुर्वेदी

स्व० पाठकजी के पौत्र बन्धुवर पद्मधरजी पाठक ने इस ग्रन्थ को निकाल कर निस्संदेह एक बड़ा महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। ये पत्र मुख्यतया सन् १८९९ से १९०३ तक के हैं। पहले पूज्य द्विवेदीजी अंग्रेज़ी में पत्र लिखते थे। फिर आगे चलकर वे अंग्रेज़ी में पत्र लिखने के विरोधी बन गये थे और मैंने जब एक विशेषाङ्क पर 'Complimentary Copy' ये दो शब्द लिखकर उन्हें भेजा था तो उन्होंने एक अंग्रेज़ी पत्र द्वारा मुझे काफ़ी डांट बतला दी थी।

इन पत्रों को पढ़कर मेरे हृदय में अनेक भाव उत्पन्न हुए। पहला भाव तो यह था कि पिछले ३०-४० वर्षों में स्व० पाठकजी का साहित्यिक श्राद्ध क्यों नहीं किया गया? उनके सुपुत्र भाई गिरिधरजी दिसम्बर १९४४ में जौंधरी और फीरोज़ाबाद पधारे थे और मुझसे मिलने मेरे घर पर भी आए थे पर दुर्भाग्यवश मैं उन्हीं दिनों पूज्य पिताजी के फूल लेने के लिए जमनाजी गया हुआ था। भाई गिरिधरजी लौटने की जल्दी में थे, इसलिए उनसे मुलाक़ात नहीं हो सकी थी।

इस श्राद्ध कार्य की जो उपेक्षा हुई है उसमें सब से बड़ा अपराधी मैं स्वयं अपने ही को मानता हूं। मैंने सन् १९२० में ही स्व० पाठकजी का जीवन चरित्र लिखने का दृढ़ निश्चय कर लिया था और प्रयाग जाकर मैं १६ दिन उनके चरणों के निकट 'पद्मकोट' में रहा था। पिछले ६२ वर्षों में भी मैं जीवन चरित्र लिख नहीं पाया। हाँ, इस विषय में कुछ सेवा तो मुझसे अवश्य बन पड़ी है।

इस ग्रन्थ के अन्त में श्रीधर पाठक ग्रन्थावली की सूची दी गई है। यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि पाठकजी के ग्रन्थों के नवीन संस्करण अभी तक प्रकाशित नहीं हुए। स्व० पाठकजी व्रजभाषा और खड़ी बोली दोनों के आचार्य थे पर मूलत: वे व्रजभूमि के निवासी थे इसलिए व्रज साहित्य मण्डल का यह कर्त्तव्य है कि इस यज्ञ में भरपूर सहायता दें। हमें सभी से सहयोग लेकर आगे बढ़ना है। चूँकि पाठकजी साहित्य सम्मेलन के सभापति थे, इसलिए सम्मेलन का सहयोग तो सुनिश्चित ही समझिए। व्रज साहित्य मण्डल और आगरा विश्वविद्यालय से भी हमें भरपूर आशा है। सर्वश्री गोपाल प्रसाद व्यास, डॉ० विद्यानिवास मिश्र और गोविन्द रजनीश इस यज्ञ में सहायक होंगे। हमारा अनुरोध है कि भाई पद्मधरजी इन सब से सम्पर्क स्थापित करें।

इस ग्रन्थ में द्विवेदीजी का श्रीधर सप्तक हमें पहली बार पूरा पूरा पढ़ने को मिला है। द्विवेदीजी पाठकजी को श्रद्धा की दृष्टि से देखते थे। इस संग्रह में इसके प्रमाण यत्र तत्र विद्यमान हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यह साहित्यिक-श्राद्ध कार्य अखिल भारतीय महत्त्व का है और पत्र-व्यवहार द्वारा हिन्दी के प्रमुख लेखकों और कवियों की सम्मति इसके बारे में मंगाई जा सकती है। यह पत्र संग्रह डॉ० पद्मधर पाठक, राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान, राजेन्द्र मार्ग, जोधपुर-३४२००१ ने तैयार किया है। आशा है कि हिन्दी जगत् इसका सम्मान करेगा।

फीरोज़ाबाद (आगरा)
६ जनवरी, १९८२

× × ×

श्री वियोगी हरि

पत्राचार, खासतौर पर बड़ों के बीच हुआ पत्राचार काल बीतने पर आगे जाकर भावी पीढियों के लिए कितना महत्वपूर्ण होता है, और उससे कितनी कुछ प्रेरणा तथा मार्गदर्शन मिलता है इस सबका सही मूल्य यदि हमने नहीं आँका, तो यह भारी भूल हो सकती है, अनजान में ही सही, हम कृतघ्नता के भी भागी हो सकते हैं।

मेरे सामने महत्त्वपूर्ण पत्रों का एक संकलन प्रस्तुत है। हिन्दी-जगत के एक महारथी ने दूसरे महारथी को ये पत्र लिखे थे। पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ने जो ५७ पत्र पं० श्रीधर पाठक को लिखे, उनका यह संग्रह पाठकजी के पौत्र श्री पद्मधर पाठक ने किया है। तब ये दोनों प्रात: स्मरणीय साहित्यकार सरकारी सेवा में थे। उन पत्रों का हिन्दी-अनुवाद स्वयं पद्मधर जी ने किया है। अनुवाद यथार्थ और बड़ा सुन्दर हुआ है।

मैं अपने को भाग्यशाली मानता हूँ कि इन दोनों श्रद्धेय बुज़ुर्गों के कृपा भाजन होने का मुझे सुयोग मिला था। द्विवेदीजी से केवल तीन बार मिला था कानपुर में, किन्तु अपने इलाहाबाद के निवास काल (१९१९-१९२२) में श्रद्धेय पाठकजी के बीसियों बार दर्शन किये थे उनके निवास-स्थान 'पद्मकोट' में।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन संकलित पत्रों से सिद्ध होता है कि पाठकजी की साहित्यिक प्रतिभा के प्रति द्विवेदीजी की कितनी अधिक श्रद्धा थी। 'भारत-मित्र' में २५ दिसम्बर, १८९९ को द्विवेदीजी द्वारा रचित जो 'श्रीधर-सप्तक' प्रकाशित हुआ था वह इस बात का स्वयंसिद्ध प्रमाण है कि पाठकजी को वे उस काल का सर्वोत्कृष्ट कवि मानते थे, यहाँ तक कि 'जयदेव का अवतार' उनको कहा था :

जाकी कवित्व-पद-कोमलताऽधिकाई ।
आबाल वृद्ध–जन चित्त लियो चुराई ।।
सोई कवीन्द्र-विजयी जयदेव आई ।
लीन्ह्योऽवतार कह श्रीधर-देह पाई ।।

साहित्य के ये दोनों महारथी पहले ब्रजभाषा में ही काव्य-रचना करते थे। द्विवेदीजी ने ८ नम्बर के पत्र में लिखा है, "मैं ब्रजभाषा में लिखता हूँ, इसलिए मैंने उसे ही अपनाया"।

इन पत्रों से तत्कालीन साहित्यिक समीक्षा एवं मूल्यांकन का एक विस्मृत चित्र हमारे सामने आ जाता है जिसकी रेखाएँ स्पष्ट और जीवन्त हैं। कतिपय पत्रों के ये अंश बरवस खुद के तईं देखने की प्रेरणा देते हैं :

"आपकी कृतियों के गुणों को कतई बढ़ा चढ़ाकर मैंने प्रस्तुत नहीं किया है। यह बात मैं ईमानदारी से कह रहा हूँ।" (पत्र सं० ७)

"इस पुस्तक (कामसूत्र) का विषय निःसंदेह गन्दा है, किन्तु अपनी प्राचीनता के कारण पठनीय है।" (पत्र संख्या ११)

"इंडियन प्रेस वाले बहुत मालदार हैं और मैं नहीं समझता वहाँ से निमन्त्रण आने पर हम अपने परिश्रम को अकारण जाया कर दें।" (पत्र संख्या २१)

" 'सुदर्शन' में सब कुछ रहता है—पुराण, शास्त्र, वेदान्त, अलंकार शास्त्र, उपन्यास और क्या कुछ नहीं है। 'होली' जैसे लेख निरर्थक हैं। बात यह है कि सम्पादक अंग्रेज़ी से अनभिज्ञ जान पड़ते हैं। अयोध्या की पवित्रता पर जो कुछ कहा गया है क्या आपको पसन्द आया ? मुझे तो कदापि नहीं। सम्भवतः सम्पादक महोदय समाज के पुरातन पंथियों को अपनी ओर आकृष्ट कर ग्राहकों की संख्या बढ़ाना चाहते हैं।" (पत्र संख्या २२)

" 'भारत-जीवन' ने नैषध-चरित चर्चा' की पहुंच तक की सूचना नहीं दी। आपकी पुस्तकों की प्राप्ति-स्वीकार करने की कृपा के लिये हमें इस पत्र का कृतज्ञ होना चाहिए। आकाश तक ऊंचा उठाने के लिए उनके पास अपने स्वयं के उपन्यास हैं, और जिन लोगों में उन्हें कोई रुचि नहीं उनकी पुस्तकों के साथ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न्याय करना वे पाप समझते हैं। ऐसे खुदगर्ज़ लोगों की कथनी और करनी को हमें घृणा की दृष्टि से देखना चाहिए। (पत्र संख्या २३)

[भविष्य के गर्भ में यह छिपा हुआ था कि "सरस्वती" पत्रिका की अभूत-पूर्व ख्याति द्विवेदीजी के सम्पादकत्त्व में ही सम्भव होगी।]

"मेरी राय में भारत में 'सम्पर्ण' किसी उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति नहीं करता है।" (पत्र सं० २६)

[किन्तु आज 'समर्पण' ही नहीं, 'विमोचन' भी खूब चल पड़ा है।]

"राय देवीप्रसाद 'पूर्ण' से मैंने भेंट की। संस्कृत काव्यों का अनुवाद करने का यह उनका प्रथम प्रयास है, अतः वे अनुवाद सर्वथा दोषरहित होने का दावा नहीं कर सकते हैं। मैंने उनसे कहा है कि वे उसे ललित और मधुर बनाने का प्रयत्न करें। उन्होंने आपके कथनों का तनिक भी बुरा नहीं माना है। वे बड़े शरीफ और अच्छी साहित्यिक रुचि के व्यक्ति हैं। मेरी तरह वे भी आपके प्रशंसक हैं।" (पत्र सं० ३४)

"साहित्यिक समालोचना के सम्बन्ध में मैं आपकी राय से पूरी तरह सहमत हूँ। जिस विषय पर समालोचक लिखे उस पर उसका पूर्ण अधिकार होने की स्थिति में ही साहित्यिक समालोचना वस्तुतः उपयोगी हो सकती हैं।" (पत्र सं० ३७)

"ऐसा लगता है कि 'भारत-मित्र' के सम्पादक (बाबू बालमुकुन्द गुप्त) किसी उसूल के आदमी नहीं। वे झक्की और व्यवहार में ढीठ तक हैं।" (पत्र सं० ३८)

"किसी व्यक्ति के दोष बतलाने पर साधारणतः वह कभी-कभार ही धैर्य का प्रदर्शन करते हैं। किन्तु आपका आलोच्य पत्र भाव एवं ओज में इतना मृदु और शालीन है कि तत्काल ही सदा के लिए मेरी इस धारणा की पुष्टि हो जाती है कि वास्तव में आप एक महान व्यक्ति हैं।

आपकी कविताओं पर मेरी समीक्षा को जिस सरलता एवं खुले दिल से आप स्वीकार करते अथवा उससे सहमत होते से प्रतीत होते हैं, उसने मुझे अभिभूत कर दिया है। उस सर्वशक्तिमान से मेरी यही प्रार्थना है कि वह आपको दीर्घजीवी रखे ताकि आप हिन्दी-साहित्य को और अधिक समृद्ध बना सकें।" (पत्र सं० ४०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'सरस्वती' के सम्पादक ने मुझे अनेक बार अप्रसन्न किया है। वास्तविकता यह है कि उन्हें संस्कृत का तनिक भी ज्ञान नहीं और उन्हें काव्य के प्रति कोई रुझान भी नहीं, अतः वे काव्य के गुणों को परख ही नहीं सकते। उन्होंने 'कुमार-सम्भव' के तीसरे सर्ग का पंडित श्यामबिहारी कृत (अनुवाद ! टीका) प्रकाशित कर दिया है। यदि वह आपके हाथ पड़ जाए तो शायद आप क्रोधित होकर ग्लानिवश उसे फाड़ ही फेंकेंगे। (पत्र सं० ४९)

"मित्रों के बीच वाद-विवाद का मैं कतई पक्षधर नहीं हूं। इससे मैत्री-भाव पर आंच आती है।" (पत्र सं० ५७)

द्विवेदीजी रेलवे विभाग में नौकरी करते हुए उन दिनों झांसी में रहते थे। झाँसी की प्रचण्ड झुलसाने वाली गर्मी और रहने के लिए छोटा सा मकान। सचमुच हिन्दी के बिरवा को द्विवेदीजी जैसे प्रेरक साहित्यकारों ने अपने पसीने और रक्त से सींचा था। यह निम्न उद्धरण द्विवेदीजी के झांसी के कष्टकर निवास पर प्रकाश डालता है।

"यहां भीषण गर्मी पड़ रही है। सूर्य की तीक्ष्णता झुलसा देने वाली है। शायद आपको ज्ञात नहीं कि मैं खपरैल के मकान में रहता हूँ। यदि आपको इस समय मेरे मकान में एक दिन व्यतीत करना पड़े तो आप झुलस जावेंगे। आपका मकान मेरे घर से सौ गुना आरामदायक है।" (पत्र सं० ४७)

झांसी से रेलवे बोर्ड के एक निर्णय के अनुसार द्विवेदीजी को बम्बई चले जाने आशंका थी। परन्तु बम्बई उनको पसन्द नहीं थी। पत्र संख्या २५ में वे पाठकजी को लिखते हैं :

"तीन वर्ष तक मैं बम्बई में रहा था। मुझे वह जगह कतई पसन्द नहीं। मैं जन्म से ग्रामीण हूँ और इस कारण बम्बई व कलकत्ता जैसे व्यस्त नगरों को में पसन्द नहीं करता हूं।"

पत्र संख्या ३० में लिखी गई द्विवेदीजी की यह पंक्तियां उनके आत्मसंतोष को व्यक्त करती हैं—"यह जानकर दुःख हुआ कि आपके बच्चे बीमार हैं। हाँ, कुछ मायनों में बाल-बच्चों का न होना अच्छा है परन्तु कुछ मायनों में अच्छा नहीं भी है। परन्तु मनुष्य को जो कुछ है उसी पर सन्तोष करना चाहिए।"

पद्मधरजी ने कई पत्रों के सम्बन्ध मे जो पाद-टिप्पणियाँ दी हैं वे बड़े काम की हैं। तत्कालीन परिस्थिति और साहित्य-जगत् में हो रहे पारस्परिक व्यवहार तथा कटु एवं मधुर प्रसंगों और दृष्टियों तथा समीक्षाओं पर ये टिप्पणियाँ बड़ा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अच्छा प्रकाश डालती हैं। पद्मधरजी ने इन पत्रों का जो यह संकलन परिश्रमपूर्वक प्रकाशित किया है वह वस्तुतः अपने पूज्य पितामह के श्राद्ध का एक अनुकरणीय प्रतीक है।

दिल्ली
४-११-८१

× × ×

श्री मन्मथ नाथ गुप्त

महावीर प्रसाद द्विवेदी (१८६४–१९३८) अपने युग के इतने बड़े मनीषी थे कि उनके नाम पर हिन्दी साहित्य का एक युग द्विवेदी युग कहलाता है। साथ ही श्रीधर पाठक इतने बड़े कवि थे कि द्विवेदी जी ने उनकी प्रशंसा में भारत-मित्र नामक उस समय के विख्यात पत्र के २५ दिसम्बर १८९९ वाले अंक में २८ पंक्तियों की एक पूरी कविता लिख डाली।

श्रीधर पाठक उस युगसन्धि के समय के कवि थे, जब यह निर्णय हो रहा था कि हिन्दी कविता की भाषा व्रजभाषा ही रहेगी या खड़ी बोली को आधार बनाकर चलेगी। आगे बढ़ने से पहले यह बता दिया जाए कि यह भी एक मिथक ही है कि इसके पहले व्रजभाषा ही हिन्दी कविता का एक मात्र माध्यम रही थी। न तो तुलसीदास ने व्रजभाषा में लिखा न विद्यापति ने। दूसरे शब्दों में समस्या का रूप केवल इतना नहीं था कि व्रजभाषा हो या खड़ी बोली, बल्कि समस्या का रूप यह था कि यह बहुता जारी रहे या एकता हो। इस प्रकार हम देख सकते हैं कि खड़ी बोली का गद्य और पद्य दोनों को माध्यम बनकर सामने आना हिन्दी क्षेत्र की एकता का प्रश्न था।

अध्यापक सुधीन्द्र ने श्रीधर पाठक का मूल्यांकन करते हुए खुलकर लिखा "भारतेन्दु के पश्चात् युग की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभा कवि श्रीधर पाठक में दिखाई दी। श्रीधर पाठक प्राचीन परम्परा में पले हुए थे, परन्तु दृष्टि उनकी सर्वथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नवीन थी। यह नवीन दृष्टि जन मन को सम्मोहित करती थी।" (हिन्दी कविता में युगान्तर पृ० ४६१)

कांग्रेस के जन्म (१८८७) से पूर्व ही पाठकजी अपनी कविता में स्वाधीन भारत का स्वप्न देख और दिखा चुके थे। वस्तुस्थिति यह है कांग्रेस ने बहुत बाद में जाकर स्वाधीनता का नारा दिया। महात्मा गाँधी एक आँधी की तरह भारत के गगन में उदित होकर छा गए थे। उन्होंने लोकमान्य के दिए हुए युद्धघोष (स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं उसे लेकर ही रहूँगा) को अपना कर अहिंसात्मक संग्राम का श्री गणेश किया था, पर स्वराज्य शब्द वर्षों तक द्वयर्थकता के द्वंद्व में भटकता रहा। महान् विद्वान डॉ० भगवानदास ने महात्मा गाँधी से बराबर अनुरोध किया कि स्वराज्य की परिभाषा कर दें, पर वह उससे कतराते रहे। यह स्मरण रहे कि क्रान्तिकारी बहुत पहले से ही बल्कि प्रारम्भ से ही स्वराज्य माने पूर्ण स्वाधीनता मानते थे।

श्रीधर पाठक ने 'हिन्द वन्दना' में गाया था—

जय देश हिन्द, देशेश हिन्द
जय सुषमा-सुख-निश्शेष हिन्द
जय जयति सदा स्वाधीन हिन्द
जय जयति जयति प्राचीन हिन्द

ब्यौरे में न जाकर मैं यहाँ बता दूं कि कवियों और क्रान्तिकारियों ने राज-नेताओं से कहीं पहले स्वाधीन भारत का सपना देखा था। बात यह है कि कवि और क्रान्तिकारी स्वप्न देखने और स्वप्न बांटने की प्रक्रिया में अपने को किसी अन्य विचार या स्वार्थ से कुंठित या सीमित नहीं मानते थे।

यहाँ और एक पहलू पर ध्यान दिलाना उचित होगा। नेताजी सुभाष द्वारा दिया हुआ नारा जय हिन्द की जड़ें बहुत गहरी थी, श्रीधर पाठक तक में भी थी, इसी कारण वह एकाएक इतना जनप्रिय हुआ। जो लोग जय हिन्द के मुकाबले में जय भारत का नारा देकर शुद्धतावाद का मन मोदक खाते हैं वे कितने भ्रान्त हैं यह द्रष्टव्य है। स्वयं श्रीधर पाठक ने भारत-प्रशंसा, भारत-श्री, भारतोत्थान आदि कविताएं लिखीं। जय भारत की जड़ें भी उनकी कविता में हैं—

जय जय भारत भुवि नव वसन्त
जय नन्दन रुचि दीपित दिगन्त— इत्यादि

श्रीधर पाठक हिन्दी के प्रथम और प्रमुख राष्ट्र कवि थे। उनके बाद आए मैथिलीशरण और दिनकर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस भूमिका से स्पष्ट हो गया कि इस युग के प्रतिनिधि और प्रतीक महावीर प्रसाद द्विवेदी और श्रीधर पाठक के बीच पत्रों का आदान-प्रदान कितना ऐतिहासिक और महत्त्वपूर्ण है । महावीर प्रसाद द्विवेदी के पत्र उस समय के वातावरण पर कहीं कहीं अच्छा प्रकाश डालते हैं ।

पद्मधर पाठक ने पत्रों का हिन्दी अनुवाद देकर पुस्तक को साधारण पाठकों के लिए उपयोगी बना दिया है ।

नई दिल्ली
३१-१०-८१

× × ×

श्री जैनेन्द्र कुमार

ये पत्र ऐतिहासिक मूल्य के हैं और जो युग खड़ी बोली के उदय और निर्माणारम्भ का था उसकी एक भीतरी झांकी देते हैं । तब के महारथियों के सम्बन्धों का एक घनिष्ठ चित्र उपस्थित करते हैं । आपने यह पत्र संग्रह निकाल कर एक बड़ा आवश्यक और परमोपयोगी कार्य किया है । मेरी सराहना स्वीकार करें ।

नई दिल्ली
४-११-८१

× × ×

पं० मुंशीराम शर्मा

सन्तति की निष्ठा एवं तर्पण वृत्ति भावना पर आपको भूरि-भूरि साधुवाद देता हूँ । परम प्रभु आपको यशस्वी करे ।

पूर्वजाः पुण्यकर्माणा येन मार्गेण संगताः
तेन यायात् स वै मार्गः पुत्रपौत्र हितावहः

कानपुर
२२-१-८२

× × ×

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डा० हरिवंशराय बच्चन

प्रकाशन बहुत महत्त्वपूर्ण है। दोनों हिन्दी के महारथियों के सम्बन्ध में शोध के लिए बहुत उपयोगी-तत्कालीन साहित्य संसार के इतिहास के लिए भी। प्रकाशन पर मेरी बधाई और शुभकामनाएँ।

बम्बई
२६-१०-८१

× × ×

डा० शिवमंगलसिंह 'सुमन'

कल पत्रों को उठाया तो समाप्त करके ही दम ली। सिवा अंत तक पढ़ जाने के कोई चारा नहीं था। इस छोटे से संग्रह में जैसे खड़ी बोली के साहित्य के पर्त पर पर्त खुलते गए और पाठकजी के बहुमूल्य योगदान का आंशिक आभास सुलभ हो सका। आपने अनजाने में ही, इन पत्रों के प्रकाशन द्वारा, इतिहास के कई विस्मृत सूत्रों को उपलब्ध करा दिया है इसके लिए आपको जितना साधुवाद दिया जाय थोड़ा है। इनसे आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक या संक्रमण-काल में पाठकजी की महत्वपूर्ण भूमिका की झलक तो मिलती ही है, उस समय का समस्त परिपार्श्व भी सजीव हो उठा है। सरस्वती के सम्पादक होने के पूर्व पाठकजी के प्रति द्विवेदीजी की श्रद्धाभावना उस काल के सर्जनात्मक नवोन्मेष के प्रति प्रणति की परिचायक है। पं० रामचन्द्र शुक्ल ने पं० श्रीधर पाठक को ही सच्चे स्वच्छंदतावाद का प्रवर्तक ठहराया है। सच पूछिए तो द्विवेदी काल और छायावाद काल दोनों के वे ही सूत्रधार थे। इतिहास में तो शुक्लजी ने भावभीने शब्दों में इतना ही लिखा है कि "वे वास्तव में बड़े प्रतिभाशाली, भावुक और सुरुचिसम्पन्न कवि थे। भद्दापन इनमें न था—न रूप में, न रंग में, न भाषा में, न भाव में, न चाल में, न भाषण में" पर इन पत्रों से यह भेद भी खुला कि शुक्लजी ने उनके स्तवन में कोई कविता भी लिखी थी, उसके पूर्व द्विवेदीजी का "श्रीधर सप्तक" तो प्रकाशित हो ही चुका था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इन पत्रों द्वारा बालमुकुन्द गुप्त के 'भारत-मित्र' में उठाए गए विवादों, पाठकजी द्वारा उसमें 'सावित्री-स्तंभ' प्रारम्भ करने, गया निवासी पत्तनलालजी द्वारा पाठकजी की रचनाओं को अपने नाम से छपाने, सुदर्शन में माधव प्रसादजी के विरोधी निबन्धों, अमृतलाल चक्रवर्ती के 'हिन्दी बंगवासी' और बालकृष्ण भट्ट के 'हिन्दो प्रदीप' के संदर्भ सूत्र तो मिलते ही हैं पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के मानस परिष्कार की चिंतन की प्रक्रिया भी मिल जाती है।

ध्यान से देखें तो इन पत्रों में उस युग का समस्त संघर्ष मिल जाता है। इन युग प्रवर्तकों ने पाश्चात्य साहित्य, संस्कृत साहित्य और समकालीन भारतीय साहित्य का मंथन कर हिन्दी को आधुनिक रूप देने का एक निष्ठ व्रत लिया था। पाठकजी के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा थी इसीलिए उन्होंने बाल मुकुन्दजी गुप्त को लिख दिया था कि "मेरी रचनाएँ पाठकजी की रचनाओं के साथ प्रकाशित न किया करें क्योंकि उस स्थिति में मेरे लेखन की निस्सारता सबको मालुम पड़ जाती है।" इन पत्रों से नये लेखकों को यह संबोध तो प्राप्त ही हो जाता है कि द्विवेदी जी की रचनाएं भी 'सरस्वती' और 'भारत-मित्र' से वापस आ जाती थीं। बिना पारिश्रमिक न लिखने का संकेत सबसे पहले उन्हीं ने किया था। आर्थिक सम्पन्नता न होने पर भी उस पीढ़ी के लोगों में पुस्तकें और पत्रिकाएँ खरीद कर पढ़ने का शौक था। बालमुकुन्द गुप्त और बालकृष्ण भट्ट के अतिरिक्त अंबिकादत्त व्यास, किशोरीलाल गोस्वामी, श्यामबिहारी मिश्र, बाबू श्यामसुन्दरदास और राय देवी प्रसाद पूर्ण आदि का यथातथ्य चित्रण और साहित्यिकों के प्रति नागरी प्रचारिणी सभा, सरस्वती पत्रिका आदि के रुख का दो टूक विवरण इनमें उपलब्ध हो जाता है। वस्तुतः कम संख्या में उपलब्ध होने पर भी ये पत्र उस युग के अनमोल दस्तावेज़ हैं।

मैं तो कल्पना भी नहीं कर सकता था कि हिन्दी की प्रतिष्ठा में स्वयं को उत्सर्ग करने वाले महावीर प्रसाद द्विवेदी पाठकजी से अंग्रेज़ी में पत्राचार करते होंगे। यह सम्मति नहीं है, मेरी आन्तरिक भावना है जो बरबस उमड़ पड़ी है। मैं समस्त हिन्दी संसार की ओर से आपके स्व० पिता श्री गिरिधर पाठकजी और और इस प्रकाशन की व्यवस्थापिका आपकी माताजी के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ।

उज्जैन
६-११-८१

× × ×

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डा० रामचन्द्र मिश्र

श्रीधर पाठक हिन्दी की स्वच्छन्दतावादी (रोमांटिक-छायावादी) काव्यधारा के प्रवर्तक महाकवि के अतिरिक्त एक सहृदय साहित्यकार, उदात्त समाजद्रष्टा और राष्ट्रीय चेतना के अग्रदूत थे। उनका व्यक्तित्व इसलिए और गौरवास्पद है कि वह एक रूढ़िवादी गुणाढ्य परिवार में जन्म लेकर भी अन्धविश्वासी न थे, वरन् मानवीय गतिविधियों के अनुसरण और अनुकरण पर चले और अन्यों को भी चलने के लिए प्रेरित किया। वह नहीं चाहते थे कि अन्धविश्वास और रूढ़ियों के फलस्वरूप व्यक्ति की प्रतिभा कुंठित हो जाए, जिससे उसके मानवीय गुण और विचार निरर्थक हो जाएँ। उनकी मान्यता थी कि मानव औचित्य और विवेक की कसौटी पर कस कर अपने कर्म-क्षेत्र में उतरे, इसी में उसको वास्तविक सफलता समाहित है।

जीवन की इन मान्यताओं के साथ जब वह काव्य क्षेत्र में उतरने के लिए सन्नद्ध हुए; वह विषय-वस्तु, भाव, छन्द और भाषा के सन्दर्भ में परम्परागत रूढ़ियों से बोझिल था, जिससे जीवन-सापेक्ष्यता के स्थान पर, उसमें सम्गुम्फित कृत्रिमता पग-पग पर प्रस्फुटित और पल्लवित थी। उसकी इस स्थिति के फलस्वरूप पाठकजी ने उसे जीवन की स्वाभाविक मानवीय भूमि पर अवतरित करने का अपना कर्त्तव्य-निर्धारण किया। इसी से स्वच्छन्दतावादी काव्य के अवतरण और पल्लवन में उनकी प्रेरणाएँ और काव्यादर्श स्मरणीय हैं। उनहत्तर वर्ष के जीवन में 'भारतेन्दु युग' में पल्लवित होकर 'द्विवेदी युग' की परम्परा-मूलक प्रवृत्तियों को चुनौती तथा 'छायावादी युग' के लिए सुदृढ़ शिलान्यास करते हुए पाठकजी ने अपने स्वच्छन्दतावादी गरिमामय व्यक्तित्व से हिन्दी-काव्य को चिर-आभारी किया। आलोकित भारतेन्दु को अकाल ग्रहण लग गया, महावीर का वीरत्व विश्व के यथार्थ झोंकों से पंगु कर डाला गया, किन्तु श्रीधर अपनी वैयक्तिकता की अमर श्री की विभा से हिन्दी-जननी के भव्य मंदिर को युगों-युगों के लिए आभासित कर गए।

हिन्दी के छायावादी काव्य के सम्यक् अध्ययन से पूर्व प्रायः यह मान्यता और स्वीकृति रही है कि वह अंग्रेजी काव्य के 'रोमांटिक रिवाइवल' का प्रतिरूप है। इसके कवि वर्ड्सवर्थ, कीट्स, बाइरन और शैले ने अपनी-अपनी कृतियाँ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रस्तुत कर अंग्रेज़ी काव्य को गौरवास्पद किया था जिनके अनुकरण पर प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी ने अपनी-अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं जिससे हिन्दी में छायावादी काव्य धारा प्रतिष्ठित हुई है; पर हिन्दी की परम्परागत काव्य-धाराओं तथा भारतीय चिन्तन-सरणियों के अध्ययन से अब यह सिद्ध है कि हिन्दी का यह काव्योन्मेष भारतीय साहित्य का ही एक अंग है, पाश्चात्य काव्य का अनुकरण नहीं।

आधुनिक हिन्दी काव्य की इस विशिष्ट काव्यधारा के अवतरण और पोषण का समग्र श्रेय श्रीधर पाठक को है, उनसे पूर्व भारतेन्दु तथा उनकी मण्डली के कवियों की समय-सापेक्ष्य नूतन चेतना तथा प्रेम और प्रकृति के संदर्भ में विरचित उनकी रचनाओं में काव्यगत विषय-वस्तु, भाव, भाषा-शैली, छन्द आदि के परिवर्तनों में काव्यान्तर्गत नवोन्मेष संघटित हो उठे थे, जिनको पाठकजी ने अपनी कवि-सुलभ भावुकता और प्रतिभा से सम्पुष्ट किया, जिससे हिन्दी काव्य का 'स्वच्छन्दतावाद' अथवा 'छायावाद' का अवतरण हुआ। उनका अपना निश्चय था और अपना ही पथ था, जिस पर वह अपने जीवन के अंतिम क्षणों तक मुस्कराते हुए अग्रसर रहे।

भारतेन्दु की 'वर्षा विनोद', 'वसन्त होली', 'प्रात समीरन' आदि तथा ठाकुर जगमोहन सिंह की 'प्रलय', चित्रकूट वर्णन' आदि प्रकृति सम्बन्धी रचनाओं, ठाकुर साहब की 'श्यामा स्वप्न', 'श्यामालता', 'प्रेम सम्पत्तिलता' आदि प्रेम सम्बन्धी कृतियों, भारतेन्दु और प्रेमघन की लावनियों तथा प्रेमघन की कजलियों 'कबीर' आदि ने परम्परागत काव्य के स्थान पर एक विशिष्ट नूतन काव्य के लिए भूमि प्रस्तुत की थी, जिस पर श्रीधर पाठक ने हिन्दी की स्वच्छन्दतावादी काव्य-धारा को प्रवहमान किया था।

पाठकजी का काव्य-काल १८७७ ई० से प्रारम्भ है, उनकी आरम्भिक रचनाएँ 'मनोविनोद' (१८७७ ई० से १९१७ ई०) में संगृहीत हैं। उन्होंने 'एकान्तवासी योगी' (१८८६ ई०); 'ऊजड़ ग्राम' (१८८९ ई०) और 'श्रान्त पथिक' (१९०२ ई०) तीन काव्य प्रस्तुत किये थे, जो गोल्डस्मिथ के 'हरमिट', 'डेजर्टेड विलेज' एवं 'ट्रेवलर' के क्रमशः अनुवाद हैं। उनकी इन तथा अन्य रचनाओं के लिए देशी-विदेशी विद्वानों तथा पत्र-पत्रिकाओं ने उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सामयिक परिस्थितियों के संदर्भ में 'भक्ति-विभा,' 'श्री गोखले प्रशस्ति,' 'श्री गोखले गुणाष्टक,' 'श्री गोपिका-गीत,' 'भारत-गीत' आदि उल्लेखनीय रचनाएँ हैं; पर हिन्दी की स्वच्छन्दतावादी काव्य-धारा के पोषण में 'जगत सचाई सार'(१८८७ ई०), 'काश्मीर सुषमा'(१९०४ ई०), 'आराध्य शोकांजलि' (१९०६ ई०), 'देहरादून' (१९१५ ई०), 'स्व-जीवनी' (अप्रकाशित) आदि संज्ञक रचनाओं ने सहयोग दिया है।

स्वच्छन्दतावादी काव्य के पोषण में निम्न काव्यांश द्रष्टव्य हैं:

'प्राण पियारे की गुण गाथा, साधु, कहाँ तक मैं गाऊँ
गाते गाते चुके नहीं वह, चाहो मैं हीं चुक जाऊँ
विश्व निकाई विधि ने उसमें की एकत्र बटोर,
बलिहारौं त्रिभुवन धन उस पर वारौं काम करोर ।।

—एकान्तवासी योगी

ग्राम उस समय जिस
समय की है कथा, दूर तक प्रान्त के
बीच विख्यात था। दृश्य उसका अभी
हृदय पर है खिचा, स्पष्ट जैसा कि हो
आज ही का रचा।
एक प्राचीन 'पर-
कोट' जिसका अधिक भाग था भग्न और
भूमि से मिल रहा मूल से लग्न जिस-
-के कि खाई खुदी कहीं देती दिखा-
-ई कहीं लुप्त थी। बीच उसके कहीं
सजल कीचड़ कहीं सघन-काई-सनी
सड़ी बेलें सिंघाड़े तथा कमल की
सरल कहिं कुटिल कहीं पड़ी रहती बहुत
थी मनोहर बड़ी।

—जोंधरी ग्राम

प्रकृति यहाँ एकान्त बैठि निज रूप सँवारति।
पल-पल पलटति भेस छनिक छवि छिन-छिन धारति ।।
विमल-अंबु-सर-मुकुरन महँ मुख बिम्ब निहारति।
अपनी छवि पै मोहि आपही तन-मन वारति ।।

—काश्मीर सुषमा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ग्यारह मई महिनवा तेरह साल
अदितबार अध-दिनवा धूप दुकाल
कठिन घोर दुपहरिया लुग्र कर जोर
चलेउ तेज असवरिया टेसन ओर
तुरतहि सब असबबवा बिलटी कीन
भारी भीर सबववा सँग नहिँ लीन
वैठत तुरत रेअलिया सीटी दीन
बिजु अस चपल मेअलिया चाल प्रवीन
पहिले चलिस चिबिलिया कोमल चाल
पुनि पल पल अलवेलिया बढ़िस वेहाल। —देहरादून

पाठकजी की इन रचनाओं की अग्रभूमि पर प्रसाद, पन्त, निराला और महादेवी की रचनाएँ सर्जित हैं, जिन पर हिन्दी का छायावादी काव्य पल्लवित है।

श्रीधर पाठक के साथ प्रसङ्गतः महावीर प्रसाद द्विवेदी के साहित्यिक प्रदेय को समझ लेना उचित होगा। आचार्य द्विवेदी के साहित्यिक आदर्श और सिद्धान्तों ने युग-सापेक्ष्य साहित्य निर्माण कर भारतेन्दु द्वारा आरम्भ किए हुए हिन्दी-साहित्य-निर्माण के कार्य को आगे बढ़ाया है। फलतः द्विवेदीजी का कार्य उस सीमा तक पहुंचता है जिसके आगे हिन्दी काव्य का 'छायावादी युग' आरम्भ हो जाता है, साथ ही गद्य-पद्य की सभी विधाओं का साहित्य परम्परित अस्तित्व का परित्याग कर स्वस्थ भूमि पर अवतरित हो उठता है।

यह सत्य है कि आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माण का सूत्रपात भारतेन्दु से पूर्व प्रारम्भ हो चुका था; पर भारतेन्दु और द्विवेदीजी की प्रेरणाओं से वह क्षिप्र गति से अग्रसर हुआ। भारतेन्दु जी का साहित्यिक वैविध्य स्तुत्य है; पर गद्य-पद्य दोनों क्षेत्रों की भाषा-समस्या को वह निर्णयात्मक भूमि पर न ला सके थे। "बोलना एक भाषा और कविता में प्रयोग करना दूसरी भाषा, प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध है, जो लोग हिन्दी बोलते हैं और हिन्दी ही के गद्य साहित्य की सेवा करते हैं उनके पद्य में ब्रज की भाषा का आधिपत्य बहुत दिनों तक नहीं रह सकता।"[1]

खड़ी बोली के काव्य के प्रचार एवं प्रसार के लिए श्रीधर पाठक देवदूत थे और उनका खड़ी बोली का काव्य वरदान स्वरूप था।

1. महावीर प्रसाद द्विवेदी—रसज्ञ रंजन—(कवि-कर्त्तव्य) पृ० २०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खड़ी बोली के प्रयोग सम्बन्धी सम्प्रति प्रचार से कहीं पूर्व ८ मार्च, १८८८ ई० के 'हिन्दुस्थान' में श्रीधर पाठक, प्रतापनारायण मिश्र का इन शब्दों में प्रतिवाद कर चुके थे: —

"गद्य और पद्य की भिन्न-भिन्न भाषा होना हमारे लिए उतना अहंकार का विषय नहीं है जितना लज्जा और उपहास का है कि जिस भाषा में हम गद्य लिखते हैं, पद्य नहीं लिख सकते ।"[1]

आचार्य द्विवेदी के खड़ी-बोली के व्यापक प्रयोग के सन्दर्भ में प्रयास तो स्तुत्य हैं ही, साथ ही गद्य-पद्य की अपनी रचनाओं द्वारा उन क्षेत्रों के लिए उन्होंने कुछ रचनाएँ भी प्रस्तुत की हैं। इससे आधुनिक हिन्दी साहित्य में वह स्मरणीय है ।

पाठकजी अपनी साहित्यिक प्रतिभा और काव्य-सर्जना में महामहिम थे, इससे देशी-विदेशी विद्वान उनके साथ पत्राचार करने में अपना गौरव समझते थे । डा० पद्मधर पाठक द्वारा प्रस्तुत 'फ्रेडरिक पिंकौट-व्यक्तित्व और कृत्तित्व;[2] 'श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व-स्वच्छन्दतावादी काव्य' संज्ञक मेरी कृति के भूमिका खंड में श्री बनारसीदास चतुर्वेदी तथा विवेचन खण्ड में मेरे द्वारा इस प्रकार के पत्र प्रकाशित हुए हैं ।

ये अप्रकाशित पत्र वड़े ही महत्वपूर्ण हैं ।

पारस्परिक पत्र व्यवहार में वैयक्तिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के साथ उसके लेखकों से सम्बद्ध विषयों और उनके जीवन की गतिविधियों का समावेश हो जाता है, जिससे पत्र-व्यवहार तत्कालीन इतिहास तथा परिस्थितियों के स्पष्टीकरण में समर्थ होता है ।

द्विवेदीजी के इन पत्रों से पाठकजी के प्रति उनकी अपार निष्ठा और विश्वास तो प्रकट होता ही है, हिन्दी काव्य, आलोचना आदि की विकसनशील स्थितियों पर भी सम्यक प्रकाश पड़ता है, इससे ये पत्र १८९९ ई० से १९०६ ई० के मध्य के हिन्दी साहित्य के इतिहास को उजागर करते हैं। इससे इनकी उपादेयता स्वयं सिद्ध है ।

द्विवेदी जी के इन पत्रों को हम सरलता से निम्न कक्षाओं में रख सकते हैं:

(१) **पारिवारिक** : इस श्रेणी में वे पत्र आते हैं जिनमें व्यक्तिगत सुख-दुख

---

1. डा०रामचन्द्र मिश्र-'श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व-स्वच्छन्दतावादी काव्य' पृष्ठ १४६ से उद्धृत ।
2. नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, संवत २०२७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के साथ पारिवारिक जीवन पर प्रकाश पड़ता है। दिनांक ४-५-१६०० (प.सं. २५) के पत्र से द्विवेदीजी की सन्तानहींनता और १८-८-१६०० (प.सं. ३०) के पत्र से पाठकजी के बच्चों की रुग्णता के फलस्वरूप उनकी मानसिक व्यथा प्रकट है:—

"यह जानकर दुःख हुआ कि आपके बच्चे बीमार हैं। हाँ, कुछ मायनों में बाल-बच्चों का न होना अच्छा है; परंतु कुछ मायनों में अच्छा नहीं भी है, परन्तु मनुष्य को जो कुछ है उसी पर संतोष करना चाहिए।

पाठकजी की पुत्री के निधन पर उन्होंने गहरी वेदना प्रकट की है २३-१-१६०१ (प.सं. ४२).[1] ३०-६-१६०० (प. सं. २६) में द्विवेदीजी एवं

---

1. पं० श्रीधर पाठक के तीन विवाह हुए थे। प्रथम पत्नी निःसंतान मरी थीं। द्वितीय पत्नी से पूर्णानंदी देवी संज्ञक बालिका का जन्म हुआ था, जिसका असमय निधन हो गया था। उनकी तृतीय पत्नी का नाम गुरूदेवी था, जो मिढ़ाकुर (जिला० आगरा, उ.प्र.) की थीं। इनसे ही पाठक-परिवार की परम्परा चली। इनसे पाठकजी के चन्दो, गिरिधर, वाग्धर,रमणीधर, बुन्दो और सुन्दो (तीन कन्याएं और तीन पुत्र) जन्मे थे। पुत्रों में रमणीधर और कन्याओं में सुन्दो का असामायिक निधन हो गया था। बुन्दो ही ललिता पाठक थीं, जो ५ फरवरी १६७६ को प्रातः १० बजकर २० मिनट पर लखनऊ में गोलोकवासिनी हुई। वस्तुतः यह असह्य दैवी वज्रपात है, जिससे पितामह और पौत्रों तथा पौत्रियों को जोड़ने वाली कड़ी तिरोहित हो गई। उनके न रहने से पाठक-परिवार की तो अपूरणीय क्षति है ही, हम जैसे पाठक-परिवार से सम्बद्ध जिज्ञासु शोधार्थियों की भी वर्णनातीत क्षति है। उन जैसी त्यागमयी,भक्तिमयी विरागिनी का आर्शीवाद ही छिन गया। उनकी गोलोकवासिनी आत्मा की चिर-शांति के लिए जगदम्बा से हमारी अनन्य प्रार्थनाऐं हैं।

उनसे पूर्व उनके ज्येष्ठ अग्रज श्री गिरिधर पाठक का ६ अप्रेल १६५० (प्रातः १०.२० पर) और लघु अग्रज श्री वाग्धर पाठक का ११ अप्रेल १६६६ (प्रातः १० बजे) को लखनऊ में ही लगभग इसी समय निधन हुआ था। पं. श्रीधर जी पाठक के पौत्र-प्रपौत्र तथा पौत्रियों-प्रपौत्रियों से घर भरा हैं। बूआजी उनकी अंतिम सन्तति थीं और इस प्रकार पाठक-परिवार की एक पीढ़ी समाप्त हो गई यह बड़ी दुःखद बात है।

वह प्रयाग विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की प्राध्यापिका थीं, वहां से अवकाश प्राप्त कर आनंदमयी मां की एकनिष्ठ भक्तिन के रूप में अपना जीवन यापन कर रही थीं। मै समझता हूँ कि द्विवेदीजी की समवेदना इन्हीं चन्दों के लिए रही है। (डा० पद्मधर पाठक की पूजनीया माताजी से प्राप्त विवरण)

पाठक परिवार के वंश-वृक्ष के लिए "श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व-स्वछन्दतावादी काव्य" संज्ञक मेरे ग्रंथ का पृ. २०३ द्रष्टव्य)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पं सं. ३४ (२०-६-१६००) में पाठकजी की रुग्णता तथा ३१-३-१६०० (प.सं. २३) और १७.६.१६०० (प.सं. २८) दो पत्रों में झाँसी की भीषण ऊष्णता इंगित है। जून, १६०१ में पाठकजी कठिनाइयों में ग्रस्त रहे हैं, इससे बन्धुत्व के नाते द्विवेदीजी ने उन्हें आश्वत किया है।

"सच पूछिए तो इस संसार में सुख यदि कहीं है भी तो बहुत कम है। सबको कोई न कोई शिकायत रहती है। हल केवल यही है कि भाग्य के लिखे को धैर्य्य से स्वीकार करना चाहिए।" (१७-६-१६०१; प.सं. ४७) इससे पूर्व द्विवेदीजी की कठिनाइयों पर पाठकजी ने उन्हें धैर्य्य धारण कर करने के लिए लिखा था।

(२) **साहित्यिक** : पाठकजी के प्रति द्विवेदीजी निष्ठावान थे, इससे उनके साथ विचार-विनिमय करने में वह अपने को गौरवास्पद समझते थे।

"साहित्यिक मामलों में आप जैसा उपयुक्त सलाहकार पाकर मैं धन्य हूं।" प.सं. १ (३०. X.X.)

"समय-समय पर मैं जो लेखन कार्य करता रहा हूं उसके संबंध में आपने जो कुछ कहा है, मेरी समझ में मैं उसके योग्य तो नहीं, किन्तु, उससे मेरे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में लगे रहने में निश्चय ही अत्यधिक प्रेरणा मिलेगी।" (प.सं. २; २०-१-१८६६)

"आप जानते ही हैं कि संस्कृत का मुझे उतना अच्छा ज्ञान नहीं जितना कि आपको है। फिर भी, मैंने आपके संस्कृत पदों को बहुत बारीकी और विवेचनात्मक दृष्टि से देखा है और उनमें कुछ भी असंगत नहीं पाया। पंक्तियां ढंग से छपी हैं और आपकी सहज, सुंदर और सरस कविता का श्रेष्ठ नमूना हैं।" प.सं. १६ (१४-२-१६००). इसके साथ विस्मयादि-बोधक चिह्न के प्रयोग के संदर्भ में द्विवेदीजी ने पाठकजी के समक्ष अपनी जिज्ञासा प्रस्तुत की है, जिससे पाठकजी की वरिष्ठता स्वतः सिद्ध है। (प.सं. ४१, १६-१-१६०१). वह पाठकजी की मौलिक कविताओं और अनुवादों के निरन्तर प्रशंसक थे :—

"काव्य के क्षेत्र में आपने अपने लिये एक नया मार्ग बनाया हैं जो कि हिन्दी कवियों द्वारा अपनाए गए मार्ग से भिन्न है। आपने इसमें जो सफलता पाई है उसके लिए मैं आपको बधाई देता हूं। आप जिस भाषा और छंद में लिखते हैं वे वास्तव में बड़े आकर्षक हैं और पढ़ने वालों को बड़ा सुख पहुंचाते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैं। आपकी शैली सरल है और आपके विचार मौलिक हैं।" प सं. ३ (१५-११-१८९९)।

"आपकी कृतियों की प्रशंसा करके मैंने आपके प्रति शुद्ध न्याय ही किया है। मैंने उनके गुणों को कतई बढ़ा-चढ़ा कर प्रस्तुत नहीं किया है। यह बात मैं ईमानदारी से कह रहा हूँ।" प.सं. ७ (१-१२-१८९९)।

दोनों विद्वान अपनी रचित और प्रकाशित कृतियों को एक दूसरे के समीप भेजते रहते थे। द्विवेदीजी उनकी कृतियों के प्रशंसक थे।

द्विवेदीजी अपनी रचनाओं के संदर्भ में उन्हें सदैव लिखते रहते थे, प्रस्तुत पत्रों द्वारा द्विवेदीजी की ही नहीं पाठकजी की साहित्यिक गतिविधियों पर सम्यक् प्रकाश पड़ता है। उनके साहित्यिक जीवनगत तथ्यों से अवगत होने के लिए इन पत्रों का विश्लेषण अत्यधिक उपादेय है।

"मैंने अतुकांत छन्दों में २४ चरण बनाए हैं और 'सरस्वती' में छपने को भेज दिए हैं। वे इस महीने के अंक में निकलेंगे। इनमें माधुर्य कतई नहीं है।" प.सं. ४७ (१७-६-१९०१)।

द्विवेदीजी हिन्दी भाषा-साहित्य के लिए समर्पित थे, उसकी सेवा करना ही उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य वना लिया था, प.सं. ५ (२०-११-१८९९) इससे नागरी प्रचारिणी सभा जैसी साहित्यिक संस्था के क्रिया-कलापों पर उन्होंने अपना असंतोष और खिन्नता प्रकट की है, प.सं. ६ (२३-११-१८९९), प.सं. २१ (८-३-१९००)।

सरस्वती-संपादन का दायित्व आ जाने पर द्विवेदीजी ने उसमें प्रकाशनार्थ रचनाएँ भेजने के लिए पाठकजी से प्रार्थना की थी, उन्होंने उनको आश्वसान भी दिया था प.सं. ५२ (३०-११-१९०४) पर वह कोई भी रचना सरस्वती के लिए न भेज सके थे। इसका कारण अनवगत है। पर, मैं समझता हूँ कि इंडियन प्रेस के अधिकारियों और व्यवस्थापकों ने अपनी व्यापारी नीति के कारण द्विवेदीजी के साथ भद्र व्यवहार न किया था, प.सं. २३ (३१-३-१९००)। यह तथ्य पाठकजी को खल उठा हो।

(३) आलोचनात्मक : द्विवेदीजी के प.सं. ३४ (२०-९-१९००) एवं प. सं. ३६ दो पत्रों द्वारा उनकी आलोचनात्मक और साहित्यिक पारखी दृष्टि का स्पष्ट परिचय मिल जाता है। वह लाला सीताराम के अनुवादों की आलोचनाएं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पाठकजी के समीप उनके अभिमत जानने के लिए भेजा करते थे, प. सं. १७ (२०-२-१९००) एवं प सं. १८ (२२-२-१९००)। 'सुदर्शन' के सम्पादक पं० माधवप्रसाद मिश्र में काव्य के गुणों को परखने की क्षमता नहीं है, द्विवेदीजी का यह स्पष्ट विचार था, प. सं. ३३ (२७-८-१९००)।

'भारत-मित्र' के सम्पादन और प्रकाशन में लाला सीताराम और पं० माधवप्रसाद मिश्र के साथ बाबू बालमुकुन्द गुप्त के पक्षपात पूर्ण निर्णय रहते थे, जिससे गुप्तजी के प्रति उनकी अच्छी धारणा न थी, प. सं. २४ (२६-४-१९००) तथा प. सं. ३४ (२०-९-१९००)। फलतः द्विवेजी ने उनके लिए लिखा है :

"यह बेहद झक्की स्वभाव के व्यक्ति जान पड़ते हैं।" प. सं. २२ (१२-३ १९००)।

"खण्डितोपमा" को लेकर द्विवेदीजी ने पं० श्यामबिहारी मिश्र (मिश्रबन्धु) की अज्ञता को इंगित किया है, प सं० ३९ (१५-१२-१९००)। एक अन्य स्थल पर उन्होंने पाठकजी को लिखा है :

"साहित्यिक समालोचना के सम्बन्ध में मैं आपकी राय से पूरी तरह सहमत हूँ। जिस विषय पर समालोचक लिखे उस पर उसका पूर्ण अधिकार होने की स्थिति में ही साहित्यिक समालोचना वस्तुतः उपयोगी हो सकती है। जैसा कि मैंने आपको पहले लिखा था, मैं पं० श्यामबिहारी को इस काम के योग्य नहीं समझता।" प सं. ३७ (१८-११-१९००)।

प्रस्तुत तथ्य से यह स्पष्ट है कि द्विवेदीजी पाठकजी की आलोचनात्मक प्रतिभा और क्षमता से पूर्णरूपेण प्रभावित और प्रेरित रहे हैं, इससे आलोचना की ओर उन्मुख होने के लिए उनसे उन्हें सम्यक् प्रोत्साहन मिलता रहा है, प. सं. ४८ (१-७-१९०१)।

इन पत्रों से यह स्पष्ट है कि साहित्यिक आलोचना व्यक्तिगत भूमि पर पनप रही थी। विषय-वस्तु, उसके प्रतिपादन और उद्देश्य के सन्दर्भ में वह व्यापक दृष्टिकोण लेकर न चलती थी। इससे वह एकांगी थी। सम्भवतः इसी से 'सरस्वती' के सम्पादकीय द्वारा एक समालोचक समिति का गठन हुआ था, जिससे इस दिशा में उसका सम्यक् विकास हो। इस समिति में पाठकजी एवं द्विवेदीजी दोनों विद्वानों के नाम प्रस्तावित थे। प. सं. ४७ (१७-६-१९०१)।

(४) **संघर्षात्मक :** भारतेन्दुजी के अनन्तर हिन्दी भाषा-साहित्य के निर्माण और उसको सम्पन्न करने के लिए द्विवेदीजी का जीवन समर्पित था। तदर्थ वह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्राणपण से चेष्टित और प्रयत्नशील भी रहे हैं। अपनी अथवा पाठकजी की मान्यताओं की तुलना में साहित्य-सर्जना में उन्हें जहां अभाव मिले अथवा जिन साहित्यकारों से वह सहमत न हो सके वहाँ अथवा ऐसे साहित्यिकों से उनका संघर्ष समुपस्थित हो गया है। इस प्रकार के कई संघर्ष इन पत्रों में उपलब्ध हैं।

इन पत्रों में इंगित कक्षाओं के अतिरिक्त इनके द्वारा साहित्यकारों की दृष्टियों और प्रवृत्तियों, पत्रकारों की अभिरुचियों आदि कितनी ही दिशाओं का सरलता से विश्लेषण किया जा सकता है।

'श्रीधर पाठक तथा हिन्दी का पूर्व-स्वच्छन्दतावादी काव्य' संज्ञक कृति के शोध-काल से मैं पाठक-परिवार से अभिन्न रूप से सम्बद्ध हूँ तथा पारिवारिक स्नेह से उपकृत और अनुगृहीत भी। फलतः मैं पाठकजी के पौत्र डा. पद्मधर पाठक का कृतज्ञ हूं कि अपनी इस रचना के सन्दर्भ में उन्होंने मुझे भी अपने विचार प्रकट करने का सुयोग प्रदान किया।

नागपुर
जुलाई, १९८१

× × ×

डा० नामवरसिंह

पण्डित श्रीधर पाठक के नाम आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के इन पत्रों का ऐतिहासिक महत्त्व है। अधिकांश पत्र उस समय के हैं जब आचार्य द्विवेदी 'सरस्वती' के सम्पादक नहीं हुए थे, किन्तु संस्कृत काव्य के तत्कालीन अनुवादों की समीक्षा करने के साथ-साथ स्वयं भी अनुवाद करते हुए हिन्दी साहित्य में प्रवेश कर रहे थे। आत्म निर्माण के इस महत्त्वपूर्ण चरण में उन्हें सौभाग्य से पण्डित श्रीधर पाठक जैसे अधीत, सुसंस्कृत, सुरुचिसम्पन्न और प्रतिभाशाली कवि का करावलम्ब प्राप्त हुआ। इन पत्रों से आचार्य द्विवेदी के तेजस्वी व्यक्तित्व के उस पक्ष पर नवीन प्रकाश पड़ता है जो निर्माणाधीन था। आगे चलकर 'भाषा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की अनस्थिरता' के प्रश्न पर बाबू बालमुकुन्द गुप्त के साथ जो उग्र विवाद हुआ उसका बीजारोपण छह साल पहले ही हो चुका था—इस रहस्य का उद्घाटन पहली बार इन पत्रों से ही होता है। इसी प्रकार काशी नागरी प्रचारिणी सभा से आचार्य द्विवेदी के कलह के मूल कारणों पर भी ये पत्र पर्याप्त प्रकाश डालते हैं और 'सरस्वती' के सम्पादक के रूप में आचार्य द्विवेदी के निमंत्रित किए जाने की पृष्ठभूमि का भी इनसे आभास मिल जाता है। दूसरी ओर स्वयं पण्डित श्रीधर पाठक के पत्रोत्तर के अभाव में भी उनके सर्जनात्मक संघर्ष के उस दौर की झलक मिल जाती है जब वह 'ऋतुसंहार', 'ऊजड़ ग्राम', 'श्रान्त पथिक', 'एकान्तवासी योगी' आदि के सर्जनात्मक काव्यानुवादों तथा मोहक प्रकृति चित्रों के द्वारा हिन्दी में सही अर्थ में आधुनिक रोमैंटिक काव्य धारा का नवोन्मेष कर रहे थे। इस प्रकार आधुनिक हिन्दी साहित्य के अनुसंधित्सुओं के लिए यह पत्रावली ज्ञान की अमूल्य निधि है।

डॉ० पद्मधर पाठक अपने पितामह पण्डित श्रीधर पाठक के पास सुरक्षित पत्रों का उद्धार करके पुस्तकाकार प्रकाशित करने के लिए हम सब की बधाई के पात्र हैं। पद्मधर जी स्वयं भी कुशल अनुसन्धान कर्त्ता और पुरातत्त्वविद हैं। इन पत्रों का सम्पादन उन्हों ने बड़ी दक्षता और निष्ठा से किया है। लगभग अस्सी वर्ष पुराने जीर्ण-शीर्ण पत्रों के पाठ के जीर्णोद्धार का कार्य कितना दुष्कर है इसका कुछ कुछ अहसास उन्हें हो सकता है जिन्होंने कभी इस दिशा में प्रयास किया होगा। मूल अंग्रेज़ी पाठ के साथ हिन्दी पाठकों की सुविधा के लिए हिन्दी अनुवाद भी दे दिया गया है। अनुवाद को मूल के साथ मिलाकर पढ़ने पर कोई व्यक्ति पद्मधर जी की सराहना किये बिना नहीं रह सकता। अनुवाद ऐसी मुहावरेदार हिन्दी में किया गया है कि मूल का सा स्वाद आता है। तथ्यात्मक पाद-टिप्पणियाँ पत्रों के अनेक संकेतों को स्पष्ट करने में सहायक होती है। मुझे आशा है कि हिन्दी जगत इस सारस्वत प्रयास का हार्दिक स्वागत करके पद्मधर जी को 'श्रीधर ग्रन्थावली' प्रकाशित करने के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित करेगा।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय

नई दिल्ली

२८-१२-८१

× ×

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आचार्य विनय मोहन शर्मा

आपने अपने पूज्य पितामह स्व० पं० श्रीधर पाठक को लिखे पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के ५७ पत्रों का प्रकाशन कर पत्र-साहित्य की अमूल्य निधि हिन्दी-जगत् के सम्मुख प्रस्तुत कर अभूतपूर्व कार्य किया है। इन पत्रों में तत्कालीन हिन्दी साहित्यकारों तथा पत्रकारों के बीच चलने वाली नोक-झोंक पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। आश्चर्य यह है कि हिन्दी के पोषक और उन्नयनकर्त्ता अंग्रेजी में पत्राचार करते थे। द्विवेदीजी ने पाठकजी को पत्र उस समय लिखे थे जब वे झांसी में रेल-कर्मचारी थे—संभवत: तार बाबू थे। उन्हें पाठकजी की कविताएं बहुत रुचती थीं। उनमें वे नई भाव-धारा, नई अभिव्यंजना के दर्शन कर भाव विभोर हो उठते थे। उन्होंने उनकी प्रशंसा में 'श्रीधर सप्तक' की रचना की थी। प्रथम सप्तक में वे लिखते हैं :

"बाला-वधू-अधर-अद्‌भुत स्वादुताई ।
द्राक्षाहु की मधुरिमा मधु की मिटाई ।।
एकत्र जो चहहु पेखन प्रेम पागी ।
तो श्रीधरोक्त कविता पढ़िये अनुरागी ।।

तृतीय सप्तक है—

"जाकी कवित्व-पद-कोमलताऽधिकाई ।
आबाल वृद्ध-जन चित्त लयो चुराई ।।
सोई कवीन्द्र–विजयी जयदेव आई ।
लीन्ह्योऽवतार कह श्रीधर देह पाई ।।

उपर्युक्त पंक्तियों से द्विवेदीजी का पाठकजी के काव्य के प्रति अत्यानुराग व्यक्त होता है और द्विवेदीजी की असिद्ध लचर कविता शक्ति भी प्रकट हो जाती है। पत्रों में द्विवेदीजी के क्रोधी स्वभाव का भी परिचय मिलता है। वे 'भारत-मित्र' सम्पादक श्री बालमुकुन्द गुप्त के प्रति रचना न छपने से क्षुब्ध और क्रुद्ध हो उठते हैं। 'सुदर्शन' पत्र के सम्पादक से इसलिए रुष्ट हो जाते हैं कि वे पाठकजी की रचनाओं की अप्रिय आलोचना छाप देते हैं और उनकी कृतियों के प्रति भी वे सहृदय नहीं हैं। सरस्वती सम्पादकों पर जिसमें बाबू श्यामसुन्दर दास भी एक सम्पादक थे, बरस पड़ते हैं। उनके संस्कृत ज्ञान पर शंका व्यक्त करते हैं। अनेक पत्र 'सरस्वती' सम्पादक होने से पूर्व ही उन्होंने पाठकजी को लिखे थे। राय देवीप्रसाद 'पूर्ण', लाला सीताराम, सकलनारायण, माधवप्रसाद,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अम्बिकादत्त व्यास आदि लेखकों की आलोचनाओं पर द्विवेदी जी बड़े क्षुब्ध रहते थे। उस समय 'भारत-मित्र' साहित्य वाद-विवाद को बड़ा प्रोत्साहन देता था। द्विवेदी जी श्यामबिहारी मिश्र की आलोचना-पद्धति को भी दोषपूर्ण मानते थे। उस कालावधि में पाठक जी की 'काश्मीर सुषमा' प्रकाशित हो गई थी और उसकी सरसता पर हिन्दी जगत् मुग्ध हो उठा था। 'बंगवासी', 'हिन्दी-प्रदीप' आदि पत्रों में भी हिन्दी पुस्तकों पर चर्चा होती थी। इसमें सन्देह नहीं, यह पत्र-संग्रह हिन्दी साहित्य के इतिहास के पुनर्लेखन में सहायक सिद्ध होगा।

मैं पद्मधर जी को द्विवेदी जी के पत्र प्रकाशित करने पर धन्यवाद देता हूं।

भोपाल
२३.११.८१

× × ×

डा० आनन्द प्रकाश दीक्षित

आत्मकथा और पत्र उनके लेखक के अंतरंग तक पहुंचने के लिए दो खुले द्वार हैं। आत्म कथा में कुछ गोपन रह भी जाय, पत्रों में न केवल कुछ गोपन नहीं रह पाता बल्कि जैसा भी है उनके लेखक का वैसा स्वभाव और व्यक्तित्व उनमें प्रतिच्छवित हो उठता है। अंतरंग मित्रों, हितैषियों और कभी-कभी विरोधियों को लिखे गये पत्रों में, कूटनीतिक राजनयिकों के पत्रों को छोड़कर, सहज अभिव्यक्ति के माध्यम से पत्र-लेखक का जैसा सहज-सरल, तरल और भावापन्न रूप उभरता है, वैसा ही उसका सुख-दुःख भी उमड़ता है और उसका परिवेश भी मुखरित हो उठता है। खुले हृदय से लिखे गये पत्रों की विशेषता है कि उनके आलोक में दुहरे व्यक्तित्व प्रकाशित हो उठते हैं—एक स्वयं उनके लेखक का व्यक्तित्व, दूसरा सम्बोधित का। पूर्वापर संदर्भों से जुड़े हुए पत्र दो व्यक्तियों के मानस को एक साथ खोलने की सामर्थ्य रखते हैं। अबोला रहकर भी उन पत्रों के नैरंतर्य में से उसके व्यक्तित्व की परतें, उसके भाव और उसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मुद्राएं रेखांकित हो उठती हैं। इसीलिए विद्वानों के पत्रों के प्रकाशन को भी साहित्य की अन्य विधाओं के प्रकाशन के समान स्वीकार किया जाने लगा है।

फिर भी अभी तक हमारे देश में पत्रों की सुरक्षा की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया जा रहा है, और उनके प्रकाशन की ओर भी व्यवसायिकों की विशेष तो क्या सामान्य कृपा-दृष्टि भी नहीं घूमी है। शोधकर्त्ताओं ने भी इस सामग्री का उपयोग करना प्रायः नहीं सीखा है। सौभाग्य से आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की कुछ ऐसी महिमा रही है कि 'द्विवेदी पत्रावली' में तथा अन्य पुस्तकों में उनके पत्र संग्रहीत और प्रकाशित हुए हैं। इतना होने पर भी शायद अभी बहुत सी और ऐसी सामग्री है जो प्रकाश में नहीं आयी। स्व० पं० श्रीधर पाठक के नाम १८९९ ई० से १९१२ ई० के बीच लिखे गये द्विवेदी जी के पत्रों का प्रस्तुत संग्रह इसका प्रमाण है।

पाठक जी के नाम लिखे गये द्विवेदी जी के ये पत्र हिन्दी साहित्य की मूल्यवान धरोहर हैं और 'सरस्वती' के संपादन-काल के पूर्व से लेकर उनके संपादक बन जाने के काल की सीमाओं को घेरते हुए उनकी अंतरंग कथा कहते हैं। ये पत्र इस बात की गवाही देते हैं कि आचार्य श्री की स्व. पाठक जी के प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा समर्पित थी। पाठक जी उनके आदर्श थे, ऐसे आदर्श जिनकी कविता की सराहना में द्विवेदी जी उन्हें जयदेव का अवतार मानते थे और जिनकी परख और समालोचना में उन्हें ऐसा अमित विश्वास था कि अपनी रचनाओं के परिष्कार का सारा अधिकार बड़ी ललक के साथ उन्हें सौंप देते थे। मुहावरेदार हिन्दी लिखने की जिनकी सलाह उनका मार्ग-दर्शन करा रही थी। जिनसे वे ऐसे अभिन्न भाव से जुड़े हुए थे कि न उनकी आलोचना सुन सकते थे, न उनकी अपने प्रति नाराज़गी ही बर्दाश्त कर पाते थे। 'भारत–मित्र' में पाठक जी की कविताओं के साथ जुड़कर द्विवेदी जी को अपनी रचनाओं का छपना केवल इसलिए पसन्द न था क्योंकि वे अपनी रचनाओं को पाठक जी की रचनाओं के समान प्रशस्त नहीं मानते थे। और नहीं चाहते थे कि उनकी तुलना में आकर स्वयं उनकी अपनी रचना का पिछड़ापन उजागर हो जाय।

पत्रों का प्रस्तुत संग्रह हिन्दी का एक अमूल्य दस्तावेज़ है। ये पत्र केवल राम-राम बंचना और राजी–खुशी के पत्र नहीं है, प्रार्थना औत्सुक्य, रीझ-खीझ, उत्साह-अनुत्साह, व्यग्रता और धीरता की ऐसी अभिव्यक्तियां हैं जो दो मित्रों के मानस की परतें ही नहीं खोलती उस समय के साहित्यिक माहौल को भी उघाड़ा करती हैं और कुछ साफ़ धुले और कुछ धूमिल चेहरों की पहचान कराती हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इतिहास के पन्नों पर सच्चाई के अक्षर टांकने में ये पत्र बहुत काम देंगे ।

गहरी आत्मीयता और स्पष्टवादिता से लिखे गये इन पत्रों में जहां द्विवेदी जी की पाठक जी के प्रति अमित श्रद्धा व्यक्त हुई है, वहां दोनों का वैयक्तिक सुख-दुःख और एक-दूसरे को धीर बंधाने और साहस बनाये रखने की व्यवहार-बुद्धि की भी अभिव्यक्ति हुई है । श्रीधर जी के सुपुत्र और सुपुत्री के देहान्त पर संवेदना की केवल दो ही पंक्तियां ही नहीं है, उन्हें कहीं परिवर्तन के लिए पहाड़ पर जाने की सलाह भी है, राय देवीप्रसाद के साथ अपने वाद-विवाद को समाप्त कर देने का सत्परामर्श और निपटारे के लिए सच्ची सक्रियता भी है और निराश पाठक जी से लेखन से विरत न होने या पेंशन मिलने से पूर्व नौकरी न छोड़ने का सुहृदयतापूर्ण आग्रह भी है । वैयक्तिक रूप में यह द्विवेदी जी के साहित्यिक विकास का इतिहास भी है और उनके लेखन और लेखक, दोनों के संघर्ष की कथा कहता है । 'सरस्वती' के संपादक बनने के पूर्व लेखन के क्षेत्र में उन्हें क्या-क्या झेलना पड़ा, अपनी रचनाओं के प्रकाशन के सम्बन्ध में किस चिन्ता से गुज़रना पड़ा और उन्होंने किस अडिग भाव से अपने आपको अभिव्यक्ति दी, कहां रुष्ट या तुष्ट हुए —इस सबका सीधा और सच्चा इतिहास इन पत्रों में अंकित है । ये पत्र गवाह हैं कि बाबू श्यामसुन्दरदास से उनकी टक्कर सरस्वती के स्वयं संपादक बन जाने के बाद नहीं, बल्कि तभी हो गई थी जब बाबू साहब सरस्वती का संपादन कर रहे थे । नागरी प्रचारिणी सभा से भी वे उसी समय से रुष्ट थे । लाला सीताराम, पं० श्यामबिहारी मिश्र और पत्तनलाल के प्रति उनका रोष बढ़ा-चढ़ा था । सीताराम जी के अनुवादों, मिश्र जी के काव्य, और पत्तनलाल के चौर कर्म पर वे बुरी तरह खीझे हुए थे । मिश्र जी को समालोचक तो मानते ही न थे, उनके काव्य को भी घटिया किस्म का मानते थे । माधवप्रसाद मिश्र और 'सुदर्शन' पत्रिका से कभी प्रासादिक सम्बन्ध रहने पर भी अपनी और पाठक जी की आलोचना को लेकर बुरी तरह बिगड़े हुए भी थे । 'भारत मित्र' के लेखक रहे थे, किन्तु 'सुदर्शन' पत्रिका को अपने विरुद्ध बाबू बालमुकुन्द गुप्त द्वारा उकसाया गया जानकर तथा अन्य कारणों से गुप्त जी से इतने नाराज़ भी थे कि उन्हें पत्रों में 'अभद्र' सज्जनोचित व्यवहार से शून्य, 'सिद्धांतहीन', 'झक्की' और 'धृष्ट' तक कह गये । अस्तु, उस काल के अनेक चेहरों की पहचान करनी हो और द्विवेदी जी को उनके असलीपन में देखना हो तो इन पत्रों का अध्ययन ज़रूरी होगा । शिव और रुद्र का अनोखा संगम थे द्विवेदी जी । एक ओर अमित श्रद्धा स्नेह और हित-चिन्तन और दूसरी ओर यह रौद्र रूप । कचहरी तक जाने को तैयार लेकिन यह अकेले द्विवेदी जी के रूप को ही नहीं खोलता, औरों के वास्तविक दर्शन भी कराता है और तत्कालीन साहित्यिक राजनीति को भी उजागर करता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दुहरे-तिहरे लाभ वाली इस अमूल्य निधि को स्व० पाठक जी के वंशजों ने संजोये और संभाले रखा, इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं । और भी अधिक धन्यवाद और प्रशंसा के पात्र हैं श्रीधर जी के पौत्र, अंग्रेज़ी में लिखे गये इन पत्रों के अनुवादक और सम्पादक डा० पद्मधर पाठक, जिन्होंने सश्रद्धभाव से बड़े मनोयोग पूर्वक सुचारु और मुहावरेदार हिन्दी में अनुवाद करने के अतिरिक्त इन्हें प्रकाश में लाने का पुण्य कार्य भी किया । पत्रों का अनुवाद बहुत सटीक उतरा है । इन्हें प्रकाशित हुआ देखकर मेरा मन सन्तुष्ट और आह्लादित है । कुछ वर्ष पूर्व जब उन्होंने अपने पास सुरक्षित पिन्कौट सम्बंधी तथा यह सामग्री मुझे दिखायी थी, तभी से उनकी और मेरी इच्छा थी कि इन्हें प्रकाश में लाया जाय । पिन्कौट सम्बन्धी उनकी शोधपूर्ण पुस्तक तो कुछ ही समय बाद नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित कर दी गयी थी । ये पत्र व्यावसायिक बुद्धिवाले प्रकाशकों का ध्यान आकृष्ट न कर पाये । श्री डा० पद्मधर पाठक स्वयं इतिहासविद् हैं और इस ऐतिहासिक सम्पत्ति का मूल्य समझते हैं, अतएव उन्होंने अन्ततः इनके प्रकाशन की व्यवस्था कर ही डाली । साहित्याभिरुचि रखने वाले पाठकों को यह प्रसन्नता होगी कि वे शीघ्र ही स्व० श्रीधर पाठक ग्रंथावली का भी सम्पादन और प्रकाशन के लिये तत्पर हैं । उनका यह कार्य साहित्य के प्रति उनकी यह समर्पित भावना उनकी वंश-गरिमा के अनुकूल है । हमें विश्वास है साहित्य के अध्येता उनके इस कार्य का सम्मान करेंगे ।

पूना विश्वविद्यालय, पूना

२४-११-८२

× × ×

डा० प्रभाकर माचवे

जोधपुर के श्री पद्मधर पाठक ने अपने पितामह पं० श्रीधर पाठक के नाम पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी के सन् १८६६ से १६१२ के बीच लिखे मूल ५७ अंग्रेजी पत्र (उनके हिन्दी अनुवाद सहित) पुस्तकाकार प्रकाशित कर हिन्दी साहित्य के एक अज्ञात पक्ष पर प्रकाश डाला है । मैं नहीं जानता था कि तब

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हिन्दी के युग-निर्माता अंग्रेज़ी में पत्र लिखते थे, अपने ही समानधर्मा संस्कृत ज्ञाता हिन्दी साहित्यकारों को । मुक्तिबोध ने अगर नेमिचन्द्र जैन को अंग्रेज़ी में इतने पत्र लिखे (मुक्तिबोध ग्रंथावली खण्ड ६) तो यह परम्परा काफ़ी पुरानी है। प्रेमचन्द ने भी अपने उपन्यास का प्रारूप अंग्रेज़ी में लिखा था । मैं नहीं जानता अंग्रेज़ी के कट्टर विरोधी हिन्दी-वादी इसे देखकर क्या कहेंगे, पर हमें तो कहने का मोह होता है : "का भाखा का संस्कृत" के वज़न पर "का भाखा का अंगरेजी, प्रेम चाहिए साँच !" द्विवेदी जी और पाठक जी में गहरा स्नेह था इसका प्रमाण द्विवेदी जी की उन पर लिखी "श्रीधर-सप्तक" कविता इस पुस्तक के आरम्भ में है ।

अंग्रेज़ी का प्रयोग कोई करे या हिन्दी का, निजी पत्र की बात है, उसमें किसी को क्या आपत्ति होगी । राहुल जी और उनकी रूसी पत्नी का प्रेम पत्र-व्यवहार संस्कृत में हुआ । अपनी अपनी रुचि है । सबसे मनोरंजक बात जो इन पत्रों से उभरती है, वह उस समय के हिन्दी लेखकों की स्थिति, और आपसी सम्बन्ध, ईर्ष्या-द्वेष आदि की बात । तीन रुपये मासिक पर सरस्वती का सम्पादन करने के लिए द्विवेदी से कहा, शर्म की बात है !

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी मताग्रही व्यक्ति थे । उन्हें जो पसन्द आता था उसकी प्रशंसा वे अतिशयोक्ति में करते, जो बुरा लगता उसकी निन्दा भी वे उतने कड़े शब्दों में करते । (इसी कारण से यह विषय डा० रामविलास शर्मा को अपने स्वभावानुकूल लगा ऐसा मेरा मत है; यही अक्खड़पन निराला जी और किशोरीदास वाजपेयी में भी था) इसके उदाहरण इन पत्रों में हैं, जैसे—

(1) बाबू बालमुकुन्द गुप्त—He appears to be a man of very eccentric temper."

(2) 'कामसूत्र' के विषय में—the subject of the book is no doubt filthy but is worth reading on account of its age.

(3) "the Hindi reading public is very small and besides so unpatriotic that it is an hazardous affair to write anything in that language and pass it through the press"

(4) "you should prosecute the man for his audacity."

(5) (the editor of Saraswati) is entirely devoid of any knowledge of Sanskrit, and besides this he has no taste for poetry and therefore cannot appreciate it."

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार से महावीर प्रसाद द्विवेदी के पांडित्य, हिन्दी प्रेम, साहित्य-प्रेम, व्यक्तिगत स्वभाव और उस युग के साहित्यकारों और पत्रों की स्थिति पर इस पुस्तक से नया प्रकाश पड़ता है। पं० पद्मधर पाठक के हम आभारी हैं कि उन्होंने यह सब सामग्री हमारे लिए उपस्थित कर दी।

कई स्थलों पर जीवट वाले द्विवेदी जी भी हताश और भाग्यवादी लगते हैं। हिन्दी सेवा के बाद उन्हें पूरा सन्तोष नहीं मिला। जीवन काल में उनका समुचित समादर नहीं हुआ ऐसा लगता है। या हो सकता है, यह हर साहित्यिक की समस्या हो। वह अन्ततः अकेला ही होता है।

पुनः पं० पाठक को धन्यवाद।

कलकत्ता

१०-११-८१

× × ×

डा० सत्येन्द्र

सरस्वती के यशस्वी सम्पादक और युग-प्रवर्तक महावीर प्रसाद द्विवेदी के श्रीधर पाठक जी के नाम ये पत्र हिन्दी साहित्य के लिए ऐतिहासिक महत्व के इसलिए और भी अधिक हैं कि ये युग-पुरुष नव काव्य प्रवर्तक महाकवि श्रीधर पाठक जी को लिखे गये हैं।

पाठक जी के सम्बन्ध में अज्ञेय जी ने 'पुष्करिणी' में पृ० १८ पर लिखा है कि- "व्यापक परिपार्श्व के इंगित के लिए इतना कह देना अनुचित न होगा कि इसी प्रकार—और बाद की 'नयी कविता' की प्रवृत्तियों के अंकुर 'श्रीधर पाठक' में पाये जाते हैं। 'अज्ञेय जी' स्वयं 'प्रयोगवाद' के स्वरूप का स्तवन करते हुए नयी कविता का अंकुरण करने वाले रहे हैं। नयी कविता की प्रवृत्तियों के अंकुर उन्होंने श्रीधर पाठक की कविता में देखे तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल अपने इतिहास में अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में पं० श्रीधर पाठक के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्बन्ध में यह लिख गये हैं कि "रीतिकाल के भीतर हम दिखा चुके हैं किस प्रकार रसों और अलंकारों के उदाहरणों के रूप में रचना होने से और कुछ छन्दों की परिपाटी बंध जाने से हिन्दी कविता जकड़ सी उठी थी। हरिश्चन्द्र के सहयोगियों में काव्य धारा को नए नए विषयों की ओर मोड़ने की प्रवृत्ति दिखाई पड़ी, पर भाषा ब्रज ही रहने दी गई और पद्य के ढाँचों, अभिव्यंजना के ढंग तथा प्रकृति के स्वरूप निरीक्षण आदि में स्वच्छन्दता के दर्शन न हुए । इस प्रकार की स्वच्छन्दता का आभास पहले पहल पं० श्रीधर पाठक ने ही दिया । उन्होंने प्रकृति के रूढ़िबद्ध रूपों तक ही न रह कर अपनी आंखों से भी उसके रूपों को देखा । उन्होंने खड़ी बोली पद्य के लिए सुन्दर लय और चढ़ाव उतार के कई नए ढांचे भी निकाले । ख्याल या लावनी की लय पर जैसे 'एकांतवासी योगी' लिखा गया वैसे ही सुथरे साइयों के सधुक्कड़ी ढंग पर 'जगत-सचाई-सार', 'स्वर्गीय वीणा' में उन्होंने उस परोक्ष दिव्य संगीत की ओर रहस्यपूर्ण संकेत किया जिसके तालसुर पर यह सारा विश्व नाच रहा है । अंत्यानुप्रास रहित बेठिकने समाप्त होने वाले गद्य के लम्बे वाक्यों के छंद भी इन्होंने लिखे हैं, पाठक जी कविता के लिए हर एक विषय ले लेते थे। समाज सुधार के वे बड़े आकांक्षी थे।" (हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० ५२५, ५२७)

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और अज्ञेय जी के प्रमाण से यह सिद्ध है कि पं० श्रीधर पाठक सच्चे स्वच्छन्दतावाद के ही प्रवर्त्तक महाकवि नहीं थे, वे तो 'नयी कविता' का भी आभास लिये हुए थे, अतः इतिहास में उनका अद्वितीय स्थान मानना ही होगा । इस बात की साक्षी आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के ये पत्र भी हैं : इस संकलन में झांसी से लिखा गया ता० ३० का जो पत्र है उसकी आरंभिक पंक्तियों में द्विवेदी जी ने लिखा है कि, "आपके बहुमूल्य सुझावों के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूं । मैंने उनका पूरी तरह पालन किया है । आपकी रुचि बहुत परिष्कृत है । साहित्यिक मामलों में आप जैसा उपयुक्त सलाहकार पाकर मैं धन्य हूं ।" ये कुछ पंक्तियां ही पं० श्रीधर पाठक के इस युग के साहित्यिक महत्त्व को सर्वोपरि सिद्ध कर रही हैं । आचार्य द्विवेदी जी ने उक्त वाक्यों में व्यक्तिगत रूप से अपनी कृतज्ञता प्रकट की है । यह कृतज्ञता साहित्य में सलाहकार की दृष्टि से ही प्रेषित की गई है "I am fortunate in having found in you such a worthy counsellor in literary matters." किन्तु दूसरे पत्र में द्विवेदी जी ने पाठक जी के काव्य के स्वरूप की प्रशंसा इन शब्दों में की है : "काव्य के क्षेत्र में आपने अपने लिए एक नया मार्ग बनाया है जो कि हिन्दी कवियों द्वारा अपनाए गए मार्ग से भिन्न है । आपने इसमें जो सफलता पाई है उसके लिए मैं आपको

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बधाई देता हूं। आप जिस भाषा और छन्द में लिखते हैं वे वास्तव में बड़े आकर्षक हैं और पढ़ने वालों को बड़ा सुख पहुंचाते हैं। आपकी शैली सरल है और आपके विचार मौलिक हैं।" (झाँसी से १५ नवम्बर १८९९ का पत्र)

द्विवेदी जी इन पत्रों में पाठक जी के काव्य की बराबर प्रशंसा करते नहीं थकते। ऐसे पत्राचार का कई दृष्टियों से महत्त्व होता है।

मुझे तो श्री पद्मधर पाठक का यह प्रयत्न बहुत सराहनीय लगा है, उपयोगी तो है ही। मैं पाठक जी का अभिनंदन करता हूं। मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक का हिन्दी जगत में अच्छा स्वागत होगा।

जयपुर

२७-११-८१

× × ×

श्री गोपाल प्रसाद व्यास

बड़े महत्त्वपूर्ण कार्य को आपने हाथ में लिया है। इसके लिए बधाई और हिन्दी जगत की कृतज्ञता स्वीकार करें।

नई दिल्ली

३१-१०-८१

× × ×

डा० नागरमल सहल

पाठक जी और द्विवेदी जी हिन्दी के दो समकालीन दिग्गज थे—एक सुकवि तो उनके कनिष्ठ सहृदय आलोचक और सम्पादक। इसमें के अधिकांश पत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन् १९०२ तक के हैं। उस समय पाठकजी की अनेकानेक कविताएँ प्रकाशित हो चुकी थीं जबकि द्विवेदीजी 'कुमार-संभव' आदि का अनुवाद तथा समीक्षात्मक लेख लिखने में प्रवृत्त थे। लेखकों का एक सार्वजनिक व्यक्तित्व होता है जो उनकी रचनाओं में प्रस्फुटित होता है; दूसरा होता है वैयक्तिक, घरेलू जो पत्रों में निष्कपट भाव से उद्घाटित होता है। पत्रव्यवहार में उनका जो सहज रूप निखरता है वह अन्यत्र दुर्लभ होता है। द्विवेदीजी पाठकजी के सतत प्रशंसक रहे, किन्तु अंध-प्रशंसक नहीं। वे उनके पाण्डित्य और मर्मज्ञता का लोहा मानते थे, यद्यपि दोनों थे राज्य कर्मचारी। कोई अस्सी वर्ष पहले का यह युग्म कैसे सद्भाव से रहता था; कैसे तत्कालीन साहित्यिक गतिविधियों से कभी तुष्ट तो कभी रुष्ट; कैसे पं० श्यामबिहारी मिश्र का 'लवकुश चरित्र' द्विवेदीजी को हीनातिहीन लगता था, कैसे 'सरस्वती' में प्रकाशित अधिकांश लेख एकदम लचर, उस 'सरस्वती' के जिसके सम्पादक एक नहीं, चार थे, उसी 'सरस्वती' के जिसके यशस्वी सम्पादक बाद में स्वयं द्विवेदीजी बने। 'सरस्वती' ने द्विवेदीजी को बनाया और द्विवेदीजी ने 'सरस्वती' को।

पत्राचार में दुःख-दर्द की बात होती है तो साहित्य-चर्चा भी। कीट्स (Keats) के पत्रों से उसकी आलोचनात्मक प्रतिभा का भी परिज्ञान होता है। द्विवेदीजी स्वयं ऐसे पत्रों के कायल थे।

पाठकजी ने द्विवेदीजी को पत्रों में क्या उत्तर दिये होंगे इसकी हम लोग कल्पना ही कर सकते हैं। क्या ही अच्छा होता कि श्री पद्मधर पाठक का कोई समानधर्मा पाठकजी के उत्तर भी छपवा सकता। अन्यथा तो यह वैसा ही है जैसे कोई टेलीफोन पर कुछ कहता जा रहा है पर जिसको फोन कर रहा है उसकी आवाज़ नहीं सुनाई पड़ रही।

द्विवेदीजी सतत जिज्ञासु रहे। उदाहरणार्थ विस्मयादिबोधक चिह्न कहां लगना या नहीं लगना चाहिए; अनुवाद को भाषा कहना कहां तक उपयुक्त हैं इत्यादि। लुप्तोपमा अलंकार सर्व विदित है पर मिश्रबन्धु ने खण्डितोपमा की चर्चा की जिसका उत्तर श्यामबिहारी मिश्र, सुखदेव बिहारी मिश्र से दिलवाने वाले थे (ऐसा पत्रों से ज्ञात होता है) पर वह प्रकाशित ही नहीं हुआ है क्योंकि ये पत्र तो आखिर उतने ही हैं जितने पाठकजी के पौत्र को मिल सके। फिर भी ये कम बहुमूल्य नहीं हैं क्योंकि उस काल की साहित्यिक झांकी इसमें सहज सुलभ है। फाइलों पर अंग्रेजी में टिप्पणी लिखते लिखते उस अंग्रेजी काल में लिपिक चिट्ठी-पत्री भी अंग्रेजी में लिखते रहे हों तो इसमें क्या आश्चर्य है? द्विवेदीजी स्वयं इन पत्रों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में जैसे अपनी अंग्रेजी मांजते रहे हों। कविवर सुमित्रानन्दन पंत ने पाठकजी के स्वर्गवास पर अंग्रेजी में पत्र लिखा होगा, यह बात साधारणतः गले उतरने वाली नहीं है, पर पढ़िए उनका यह पत्र—

× × ×

21, Stanley Road,
Allahabad.
19.9.28.

Dear Mr. Pathaka,

Permit me to condole with you in the great bereavement of your revered father. I find myself tongue tied to express my feelings of deep sorrow at the sudden, hence more sad departure of that sublime soul from our world. Peace be to his immortal self !

He was never old Even at the age of sixty eight years his spirit was so young, full of joy and poetic fire. It is so difficult to forget him because it is so easy to recall the sacred memory of the few luminous moments I had the good fortune to pass in his golden company although they are as rare as they are dear.

Death is not the proper word for the glorious change of his mortal coil. His claims are beyond that. He has captivated death in the ever sonorous cage of his immortal speech. With the radiant strokes of his pen he has made that all-devouring darkness resplendent for himself. Nought can hide him from us, he is too shining; for that.

But, alas, the great loss that his sudden and quiet departure has brought to the Hindi world ! Its brightest star is set, the tallest Tower of glory disappeared ! Our loss is too deep for tears, long long shall we rue it !

I pray God to lend you all strength and courage to bear with this great calamity.

My brother is doing better now. I hope to come to you on Sunday the 23rd.

Yours in sorrow,
Sumitranandan Pant

Pt. Giridhara Pathak.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नीचे उसीका मेरा हिन्दी अनुवाद है ;

२१, स्टैनली रोड
इलाहाबाद
१६.६.२८

प्रिय श्री पाठक,

आपके पूज्य पिताजी के निधनजन्य आपकी गहन शोकावस्था में मुझे सहानुभूति प्रकट करने की अनुज्ञा प्रदान करें। हमारी दुनिया से उस लोकोत्तर आत्मा के आकस्मिक, अतः समधिक अवसादकारी प्रस्थानोत्पन्न अंतर्वेदना को व्यक्त करने के लिए मेरे पास कोई शब्द ही नहीं, मानों मैं बद्धजिह्व हो गया हूं। उनकी अमर आत्मा को ईश्वर शान्ति प्रदान करे !

वे वृद्ध कभी हुए ही नहीं। अड़सठ वर्ष की आयु में भी उनकी प्राण-शक्ति अति तरुण, प्रफुल्ल एवं काव्यानलमयी थी। मेरे लिए उनको भुला सकना कितना दुष्कर है क्योंकि उनके स्वर्णिम साहचर्य में व्यतीत कुछ शुभ्र क्षणों की पावन स्मृति धूमिल हो ही नहीं सकती। इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हूं, यद्यपि ऐसे मिलन-क्षण बहुत विरल थे, अतः प्रियतर भी।

उनके मर्त्यवेष्टन के देदीप्यमान परिवर्तन को मृत्यु की संज्ञा नहीं दी जा सकती क्योंकि उनका स्वत्व मृत्युपारगामी था। अपनी अमर वाणी के मधुर कारागार में उन्होंने मृत्यु को जैसे बंदी बना लिया था। अपनी लेखनी के भास्वर कौशल से उन्होंने अपने लिए उस सर्वभक्षी अंधकार को जाज्वल्यमान बना दिया था। कोई भी शक्ति उन्हें हमसे तिरोभूत नहीं कर सकती, क्योंकि वे स्वयं जो इतने तेजोमय हैं।

लेकिन हन्त ! हिन्दी संसार के लिए उनका आकस्मिक और निःशब्द प्रस्थान कितना दुःखद और हानिकर सिद्ध हुआ है। हिन्दी का उज्ज्वलतम तारक अस्त हो गया है, ज्योतिर्मय सर्वोच्च स्तंभ आंखों से ओझल हो गया है। हमारी क्षति अश्रुओं में समा सकने वाली नहीं। दूर सुदूर भविष्य तक हम उनके अभाव में हाथ मलते रहेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ईश्वर से मेरी प्रार्थना है कि इस घोर कष्ट को सहने के लिए वह आपको शक्ति और साहस प्रदान करे।

मेरे भाई का स्वास्थ्य सुधर रहा है। रविवार ता. २३ को आपसे मिल सकूंगा, ऐसी आशा है।

आपके दुःख में दुःखी,
सुमित्रानंदन पंत

×

पाठकजी की नवनवोन्मेषशालिनी प्रतिभा इतनी बहुमुखी थी कि द्विवेदीजी, पंतजी आदि ही क्या, ब्रजभाषा के सुप्रथित कविवर रामशङ्कर शुक्ल 'रसाल' ने भी, देखिए, उनको किन भाव भरे शब्दों में याद किया है।

प्यारे 'पद्मकोट'*—का मलिन्द मंजु गायक था,
नायक खड़ी बोली की कविता का न्यारा था।
हिन्दी के सुभाल की सुबिन्दी का था पराग,
राग रूप रोचक सौभाग्य का सँवारा था॥
सुन्दर साहित्य के सरोवर का था सरोज,
ओज भरा, भाषा-व्योम-मण्डल का तारा था।
प्यारा 'पाठकों' का, था दुलारा लाल भारती का,
काव्य-कला-श्रीधर हा, हमारा 'श्रीधर' था॥

भारत-भू-जननी के नीके गीत गाते गाते
पाते मोद माँ की गोद में सशान्ति सो गया।
मंजुल निज मानस की काव्य-सुधा-धारा से,
आरती उतार भारती के पद धो गया॥
काव्य-कला-कोकिल-किशोर कवि श्रीधर हा,
वर्षा में बटोही देव वाटिका का हो गया।
सुकवि 'रसाल' कहैं, हिन्दी को धनी करके,
आज निधनी करके हाय लाल खो गया॥

* प्रयाग के लूकरगंज में स्थित स्व. पाठकजी के मकान का नाम।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री कन्हैयालाल फूलफगर

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के उप निदेशक डॉ. पद्मधर पाठक ने अपने पूज्य पितामह स्व. पं. श्रीधर पाठक के नाम पूज्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के द्वारा लिखे पत्रों को सम्पादित कर "द्विवेदीजी के पत्र : पाठकजी के नाम" प्रकाशित करवा कर अत्यन्त ठोस एवं महत्वपूर्ण कार्य किया है। वर्त्तमान के इस व्यावसायिक युग में इस प्रकार के साहित्यिक कार्य करना - जोखिम से खेलना है लेकिन बिना जोखिम उठाए कोई भी शुद्ध साहित्यिक महत्वपूर्ण कार्य आज तक सम्पन्न हुआ नहीं है। इस पुस्तक के माध्यम से हमें उस युग के दो महान साहित्यकारों की जानी-अनजानी अनेक बातों की सही-सही जानकारियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

विद्वान सम्पादक ने द्विवेदी जी द्वारा लिखे अंग्रेज़ी के पत्रों को मूल रूप में देकर, साथ में हिन्दी अनुवाद, एवं आवश्यक स्थलों पर टिप्पणियां दे दी हैं। इन टिप्पणियों में पाठकों को सही सन्दर्भ समझने में आसानी हो गई है। हिन्दी का पत्र साहित्य बहुत ही समृद्ध एवं सम्पन्न है—ऐसा हम नहीं कह सकते। लेकिन हाल के वर्षों में इस विधा की ओर विद्वानों का कुछ-कुछ ध्यान आकर्षित हुआ है। फिर भी बहुत सी अलभ्य सामग्री जहां-तहां बिखरी पड़ी हुई है। कौन उसको प्रकाश में लाए ? हमारी सार्वजनिक तथा सरकारी-संस्थाओं का हाल, तो सबसे ज्यादा बेहाल है। सब जगह चापलूसी एवं अखाड़ेबाजी चलती है। साहित्यिक ठोस कार्यों को करने के लिए बहुत बड़ी हिम्मत की आवश्यकता है। पूज्य द्विवेदी जी ने अपने २०.११.१८९९ ई. के पत्र में पृ. २९ पर लिखा है:— "हिन्दी-साहित्य की प्रगति के लिए जनता और सरकार से किसी प्रकार का प्रोत्साहन न मिलना वास्तव में बहुत हताश करने वाली बात है। किन्तु, हमें हिन्दी की सेवा करनी है और इस बारे में हमारा यही उद्देश्य रहना चाहिए।"

डा. पद्मधर पाठक सम्पूर्ण हिन्दी-संसार के बधाई के पात्र हैं। उन्होंने निष्काम-भाव से हिन्दी की सेवा की है, जोखिम उठाकर।

कलकत्ता

७.११.८१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डा० रामविलास शर्मा

पत्र संग्रह का ऐतिहासिक महत्व असंदिग्ध है। उसे प्रकाशित करने के लिए मैं आपको बधाई देता हूं''।

नई दिल्ली
२७.११.८१

× × ×

डा० शरण बिहारी गोस्वामी

पं० श्रीधर जी पाठक ब्रज की विभूति थे। उन्होंने ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ी बोली की कविता को न केवल प्रश्रय दिया परन्तु वे उसके पुरोधा भी बने। खड़ी बोली आन्दोलन उनके ध्येयनिष्ठ एवं कर्मनिष्ठ जीवन से प्रतिफलित हुआ। आश्चर्य यह है कि मूल प्रेरक होते हुए भी वे स्वयं पीछे ही रहे।

अब श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के जो पत्र डा० पद्मधर जी पाठक ने प्रकाशित किए हैं, वे इस सत्य का उद्घाटन करते हैं कि श्री महावीर प्रसाद जी द्विवेदी के मूल प्रेरक और मार्गदर्शक वस्तुत: पं० श्रीधर पाठक ही थे। इन पत्रों से श्री पाठक जी की रचनाओं का महत्त्व तो सामने आया ही है परन्तु वे खड़ी बोली के आंदोलन के प्रवर्त्तक भी थे यह स्पष्ट हो जाता है। ये पत्र इतिहास की अमूल्य निधि हैं। देर से ही सही, यह बहुमूल्य सामग्री अब सामने आई है जो खड़ी बोली के विकास क्रम अध्ययन के लिए अतीव उपयोगी है। इससे इतिहास के अध्ययन की नई दिशा का आरम्भ होगा। पं० श्रीधर पाठक जी के वंशजों के पास अभी ऐसी प्रचुर सामग्री इसके अतिरिक्त भी विद्यमान है, जो इस दिशा में आगे भी मार्ग प्रशस्त कर सकती है। वस्तुत: यह सभी सामग्री अमूल्य राष्ट्रीय धरोहर है, जिसका प्रकाश में आना आवश्यक है। प्रस्तुत प्रकाशन के लिए डा० पद्मधर जी पाठक बधाई के पात्र हैं।

वृन्दावन
२२.४.८२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh